॥ श्री हरिः ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गिय वैष्णव परिषद

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कीर्तन प्रवीण

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्य क्रम. नं. ४

॥ श्री हरिः ॥

नि. ली. पू. पा. गो. सोमयाजी
श्री प्रथमेशजी (रणछोडाचार्यजी) द्वारा संस्थापित
आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषदके प्रमुख
श्री ईन्द्रकान्तभाई परीखका भावोद्गार

श्री हरि, गुरू और वैष्णवोंकी कृपासे एवं पूज्यपाद श्री निकुंजलताबेटीजी महोदयाके अथाग परिश्रम और मार्गदर्शनसे, पूज्यपाद बेटीजी द्वारा संस्थापित श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्टके सहयोगसे पुष्टिभक्ति संगीतके पंचवर्षीय अभयासक्रम अंतर्गत यह चतुर्थ वर्षकी कैसेट एवं पुस्तिका प्रकाशित करते हुए मुझे अत्यंत हर्षके साथे सुखानुभूति हो रही है। देश-विदेशके वैष्णव समाजने बडे भारी उत्साहसे इस अभ्यासक्रमका लाभ ले कर भारी संख्यामें परीक्षाएँ दी हैं और उत्तीर्ण हो कर प्रमाणपत्र भी प्राप्त किये हैं। पुष्टिमार्गके गुरूजन श्री गोपीजनोंने घरमें रह कर भी वनमें होती प्रियतम श्री कृष्णकी विविध लीलाओंका अनुभव करके वेणुगीत-युगलगीतके रूपमें कीर्तन किया है, जिसमें श्रवण-कीर्तन-स्मरणकी त्रिवेणी भी है। इसलिये अपने घरमें रह कर स्वसेव्य प्रभुको रीझानेके लिए स्वयंशिक्षण कीर्तन अभ्यासक्रमका यह प्रयास वैष्णवोंको कीर्तनगानके लिए अति उपयोगी हो कर प्रोत्साहित कर रहा है। सभी वैष्णवजन इस अभ्यासक्रमका लाभ विशाल रूपसे लें और सुस्वर गानसे श्रीप्रभुको रीझा कर लीलानुसंधान रखते हुए निरोध प्राप्त करें ऐसी शुभेच्छा सह...

Indrakant Zkarll

॥ श्री हरिः ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

कीर्तन प्रवीण

पुष्टिभक्तिसंगीत पाठ्यक्रम नं. ४

❋ *कीर्तनकार* ❋

श्री जमनाप्रसादजी शर्मा

❋ *भावोद्बोधन* ❋

श्रीमती कल्पनाबेन शाह

❋ *संकलन* ❋

कु. ख्याति निर्मल द्वारकादास

❋ *प्रकाशक* ❋

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
जी/२, सीताराम बिल्डींग, पल्टन रोड, मुंबई - ४०० ००१.

❋ *मुद्रक* ❋

क्रीयेटीव कोम्प्युग्राफिक्स
१३३, वी. पी. रोड, नाथालाल भुवन, ३रा मजला, मुंबई - ४०० ००४.
फोन : ३८५ ९६०३

(सर्व हक्क प्रकाशकके स्वाधीन)

अनुक्रमणिका

१) पूज्यपाद गोस्वामी आचार्यवर्योंके आशिर्वचन
२) प्रास्तविक - पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी १
३) संगीत विषयक जानकारी - राग ४
४) हमारी कीर्तन प्रणाली ८
  अ) वर्षोत्सव प्रणाली -१ .... ११
  ब) वर्षोत्सव प्रणाली -२ .... १६
५) ताल विभाग २०
६) वाद्य परिचय २७
७) राग तोडी ३१
  (अ) ते कहूँ देख्यौरी आली / (ब) भोजन करजु उठे दोऊ भैया ३२/३५
८) राग खट ३६
  (अ) निरतत श्यामाश्याम हेत / (ब) आज नंदलाल मुख चंद नयन निरख ३७/३९
९) राग सूहा ४२
  (अ) कमल मुख देखत तृप्त न होय / (ब) नयना श्याम सदा संग माने ४३/४५
१०) राग सारंग ४७
११) राग शुद्ध सारंग ४७
  (अ) बैठे हरि राधा संग ४८
१२) राग मधुमाद सारंग ५०
  (अ) श्री गिरिधर देखे ही सुख होय ५१
१३) राग सामंत सारंग ५३
  (अ) अनतन जैये हो पिय ५३
१४) राग नूर सारंग ५५
  (अ) आज दधि कंचन मोल लई ५६
१५) राग गौड सारंग ५७
  (अ) ब्रजमें रतन राधिका गोरी ५८
१६) राग बडहँस सारंग ६१
  (अ) देखो ढरकन नवरंग पागकी ६१
१७) सारंगमाला ६२
१८) राग सोरठ ६७
  (अ) कौन रस गोपिन लीनो घूँट / (ब) बैठे लाल फूलनकी चौखंडी ६७/६९
१९) राग रायसा कान्हरा ७१
  अ) द्विजकुल प्रकटे श्री हरि / ब) झूलत राधा मोहन ७२/७४
२०) राग बसंत ७६
  अ) श्री गिरिधरलाल की बानिक उपर / ब) मोसों होरी खेलन आयो ७७/७८
राग खमाज ८१
  अ) माई मेरौ लाल बना बन आयो / ब) गायो ना गोपाल मन ८१/८३
२२) आश्रयके पद ८५
  अ) राग मारू बिहाग - जैसो हूँ तैसो तिहारो श्री वल्लभ ८५
२३) जीवन चरित्र ८७
  अ) श्री परमानंददासजी / ब) श्री नंददासजी ८७/९७

श्री हरिः

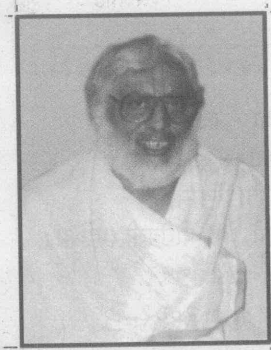

गोस्वामी श्याम मनोहर

पुष्टिभक्तिसंगीत अभ्यासक्रम (चतुर्थ वर्ष) की पुस्तकका प्रकाशन होने जा रहा है यह जान कर हार्दिक प्रसन्नता हुई. प्रत्येक पुष्टिमार्गीयके घरमें बिराजमान भगवत्स्वरूपकी सेवाको श्री कृष्णकी व्रजलीलाकी भाव-भावनाओंसे भरपूर बनाना हो तो हमारे भगवल्लीला लहरियोंमें निरन्तर हिलोरे लेनेवाले प्राचीन भक्तकविओंकी वाणी -पदोंका गान एक सरल, सक्षम और फलद उपाय है. मुझे आशा है कि इस पाठ्यक्रमसे सभी भगवत्सेवारसिकों की सेवाको लीलारसात्मिका बनानेमें एक महती सेवा पुष्टिमार्गकी सिद्ध होगी.

६३, स्वस्तिक सोसायटी, चौथा रास्ता, जुहू स्कीम,
बम्बई ४०० ०५६ फोन : ६ १ ४ ४ ३ २ ६

"अडेल"
महाप्रभु श्री वल्लभाचार्य मार्ग, नयाशहर, किशनगढ - ३०५ ८०२.

॥ श्री श्याममनोहरनवनीतप्रियगोवर्धनधरसहस्वामिनीमदनमोहन प्रभवः विजयन्ते ॥

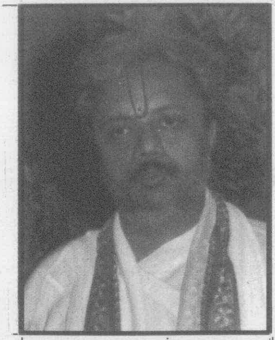

नि. लि. पू. पा. गोस्वामी श्री मुरलीधरलालजीमहारात्मज

श्री. श्यामसुंदरजी (त्रिभंगीरायजी)

(चांपासेनी - जामखंभालिया - बोरीवली)

दूरध्वनी : ८९९१८८३
१०२, तेजल एपार्टमेंट,
सिम्पोली रोड, बोरीवली (पश्चिम),
बम्बई - ४०० ०९२.

दूरध्वनी : ८९८ ०१ १७
५०, गंगा निवास,
एस. वी. रोड, बोरीवली (पश्चिम),
बम्बई - ४०० ०९२.

क्रमांक :- १५८

दि. : १८-७-२००१

प्रति,

अध्यक्ष,
श्री आ.रा.पु. वैष्णव परिषद (मुंबई),
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट

अनेक शुभाशीर्वाद।

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि आर्न्तराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद् (मुंबई) ने भगवद्कृपा से पुष्टिभक्ति कीर्तन प्रणाली के अर्न्तगत प्राचीन ध्रुपद्-धमार शैली को जीवन्त रखने के लिये स्तुत्य प्रयास किया है।

आ.पु.वै. परिषद् (मुंबई) एवं श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट के द्वारा प्रतिवर्ष पञ्चवर्षीय अभ्यासक्रम के द्वारा परीक्षाएं, ली जाती है। इस वर्ष चर्तुथ वर्ष की कीर्तन पुस्तिका - 'प्रवीण' का प्रकाशन होने जा रहा है और साथ में ओडीयो केसेट (द्वादश राग) का विमोचन भी होने जा रहा है।

यह अतीव महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा जो कि सराहनीय है।

शुभम् किमधिकम्।

स्नेह शुभकामनाओं सहित शुभाषीश
भावत्क :

गो. श्यामसुन्दरजी - महोदय।

गो. श्यामसुन्दरजी महोदय
व्र. श्रा.कृ.प. द्वादशी, २०५८।

॥ श्री हरिः ॥

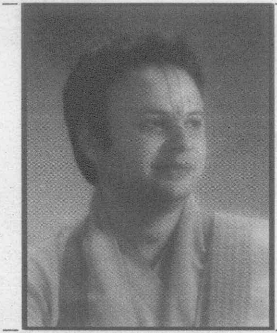

गो. श्री द्वारकेशलालजी महाराज
‘षष्टपीठ’
श्री कल्याणरायजी मंदीर, शेठशेरी,
बाजवाडा, वडोदरा-३९० ००१. (गुजरात).
✆ : (०२६५) ४२३३२२, ४२६९४२
फेक्स : (०२६५) ४३७१७२

ता. २६/०७/०१

श्री आ.रा.पु. वैष्णव परिषद,
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट,

सस्नेह शुभाशीष,

आपके द्वारा अवगत कर हृदय में अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद (किर्तन विभाग) एवं श्री गुंसाईजी चेरीटेबल ट्रस्ट के संयुक्त प्रयास से ‘कीर्तन प्रवीण’ नामाभिधान पुष्टिभक्ति संगीत अभ्यासक्रम का (चतुर्थ सुमन) पुस्तिका का प्रकाशन किया जा रहा है। श्री प्रभु ने कहा है ‘‘मद्भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामि नारदः’’ अतः जहाँभी श्री प्रभुलीला के कीर्तन का गुणानुवाद होता है वहाँ श्री प्रभु निवास करते ही है यह भगवद् वचन है।

कीर्तन भक्ति का आनंद सर्व सुलभ हो सके एतदर्थ आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुंसाईजी चेरीटेबल ट्रस्ट उभय संस्थाओं के द्वारा जो प्रयास किया जा रहा है, उससे पुष्टि सृष्टि को अलभ्य लाभ प्राप्त हो रहा है तथा स्वमार्गीय कीर्तन परंपरा को नया स्वरुप ओर नवचेतना प्राप्त हो सकेगी। आपके इस भगवद् नाम कार्य की सम्पूर्ण सफलता के लिये मेरे अंतर के अनंत अभिनंदन एवं शुभकामना प्रदान कर रहा हुँ।

भवदीय,

गो. द्वारकेशलाल

गो. श्री द्वारकेशलालजी

BARODA : 'Shasth Pith', Shree Kalyanrayji Mandir, Sheth Sheri, Bajwada, BARODA - 390 001 (Guj.) ✆ : (0265) 423322, 426942
AMDAVAD : Shree Mahaprabhuji Bethak', Opp. Krishna Cinema, NARODA - 382 325 (Guj.) ✆ : (079) 2613444, 2613477, 2811477
Web : www.shree vallabh pushti.org • Email : shasthgruh vadodara@shree vallabh pushti.org

॥ श्री बालकृष्णः प्रभुर्विजयतेतराम् ॥

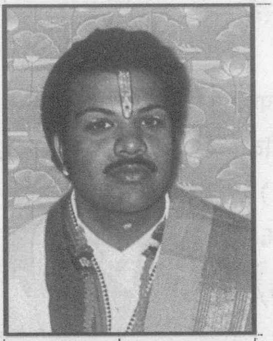

गोस्वामी प्रशान्त

गोविन्द भवन, बृहन्मन्दिर,
भुलेश्वर, मुम्बई - २.
फोन : २४२ २९ ५१

दि. : १४-७-२००१

रसिक वैष्णवजन,

भगवत्सेवा में कीर्तनों का एक विशिष्ट स्थान है। कीर्तन ही सेवा का एक ऐसा अङ्ग है जिसके बगैर यशोदोत्सङ्गलालित, नन्दराजकुमार न जागते हैं न पौढ़ते हैं, न स्नान करते हैं न अरोगते हैं और न ही शृङ्गार धरते हैं।

वेद में तो ब्रह्म के माहात्म्य का वर्णन है किन्तु, अष्टछाप भक्तकवियों की अलौकिक वाणी में तो उस ब्रह्म की रसात्मक लीलाओं का यथावत् वर्णन है।

इन्हीं रसात्मक लीलाओं के गान के द्वारा प्रत्येक पुष्टिजीव स्वीयप्रभु को रिझा सके एतदर्थ आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद तथा श्री गुसांईजी चेरिटेबल ट्रस्ट का संयुक्त प्रयास प्रशंसनीय है।

दोनो संस्थाओं को चतुर्थ वर्ष की पाठ्यक्रम पुस्तिका तथा केसेट प्रकट करने पर हार्दिक अभिनन्दन। शुभकामना सह....

भवदीय, *अषाढ कृ. आंठम*

गो. प्रशान्तः

Shri Mathuradhish Prabhu Vijayate Shri Madanmohan Prabhu Vijayate Shri Naveet Prabhu Vijayate

Gaswami Shree Harirayji Govindrayji Maharajshree

142/B, LALBAWA HAVELI, BHULESHWAR ROAD, MUMBAI - 400 002. TEL. : 242 0162, 242 0830

GOVERDHANNATHJI HAVELI, M. G. ROAD, OPP. OLD POST OFFICE, PORBUNDER. TEL. : 244868, 249949

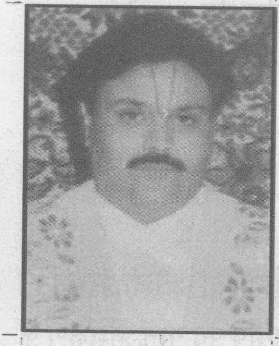

गो. श्री हरिरायजी महाराजश्री

"आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद" एवं "श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट"के संयुक्त तत्वाधानमें पुष्टिभक्ति संगीतके पंचवर्षिय अभ्यासक्रम अंतर्गत चतुर्थ वर्षकी "कीर्तन प्रवीण" पुस्तिका एवं केसेटका प्रकाशन होने जा रहा है जिससे मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई।

पुष्टिभक्तिसंगीतकी लुप्तप्राय शैलीको जीवंत रख कर, शास्त्रीय पद्धतिसे राग-तालयुक्त सुमधुर भावयुक्त कीर्तनगान अवश्य ही प्रत्येक वैष्णवको भगवद् अभिमुख करके निजसेव्य स्वरुपको रीझाकर फलोन्मुख करेगा यह निःसंशय है।

इस अभ्यासक्रम द्वारा वैष्णव समुदाय अधिकाधिक लाभान्वित हो एवं उभय संस्थाओंके इस सराहनीय प्रयासको मेरी ओरसे अनेक शुभकामनाएं सह शुभाशिर्वाद।

Hariray. G. Goswami

जगद्गुरु श्रीमद्वल्लभाचार्य वंशावतंस

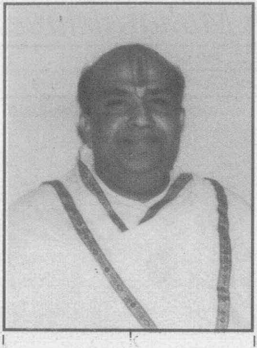

गो. चन्द्रगोपाल

बी-४१/१, श्रीनगर सोसायटी, अेच. रोड,
दिनेश मिल के पीछे, अकोटा रोड,
बडोदरा - ३९० ०२०.

फोन : ३२६८९७

शुभार्शीवाद पत्र

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवम् पू. श्री निकुंजलता बेटीजी प्रस्थापित श्री गुसांइजी चेरिटेबल न्यास के संयुक्त तत्त्वावधान में पुष्टिमार्गीय पद गान प्रशिक्षण के पंचवर्षीय अभ्यास क्रममें चतुर्थ वर्ष के लिए अभ्यासक्रम की पुस्तिका ''कीर्तन प्रवीण'' नामसे प्रसिद्ध होने जा रही है। तदर्थ इस प्रकाशन के लिए अतिशय प्रसन्नतापूर्वक में अपनी हार्दिक शुभकामनायें इससे प्रेषित कर रहा हूं। मेरी श्रद्धा है कि इस पुस्तिका के द्वारा सुमधुर गान का प्रशिक्षण लेकर तदनुसार वैष्णव अपने निज-गृहमें भगवत्सेवामें बिराजमान प्रभु के सन्मुख भावमय पदगान के द्वारा भगवत्तोष के भागी बनेगें।

हमारे पुष्टिमार्गीयप्रेमीभक्तों द्वारा निर्मित पदों का गान प्रशिक्षण यह वैष्णवो के मनोरंजन का विषय न बनकर वह भगवत्सेवानुषंगिक बनना चाहिये। क्योंकि भगवत्स्वरूप-लीला या भगवन्माहात्म्य का गान यह तो भक्ति उत्पत्ति एवम् भक्ति वृद्धि में महत्त्वपूर्ण साधनों मे से एक है। अतः उपर्युक्त दोनो संस्थाओं का भी जो यह संयुक्त सत्प्रयास है, वह भी पुष्टिमार्गीय वैष्णवों में भगवत्सेवाभाववृद्धिलक्षी ही हो सकता है।

यद्यपि हमारे यहां के पदगान में जो संगीत पद्धति स्वीकार्य है उसमें कई लोगों का मानना है कि हमारे यहां शुद्ध राग ही गाये जाते है, अथवा तो थाट से उत्पन्न राग कि जिसका प्रचलन इस पद्धति के उदय काल के समय पर नही था। अतः थाट से उत्पन्न राग नहिं गाये जाते है अथवा तो ऐसे हि कुछ रागों में पद उपलब्ध नहिं होने से यह राग हमारे यहां स्वीकार्य नहिं है ऐसा प्रतीत होता है। किन्तु यह सभी मान्यतायें यथायोग्य नहिं है। जेसा की भैरव से ही उत्पन्न रामकली और गुनकली है एवम् इसी के नजदीक का हंसध्वनि भी है। अब इनमें से आज उपलब्ध पदोमें रामकली के पद मिलते हैं, जब की बाकी के दोनों के नहिं मिलते है। तो नहिं मिलते है, इससे यह कहने की जल्दबाजी

नहीं करनी चाहिये कि यह दोनों राग हमारे यहां अस्वीकार्य है। गुनकली एवम् रामकली इन दोनों का एक ही निर्माता है और वह है तत्कालीन सुप्रसिद्ध संगीतकार तानसेनजी। इसी तरह से पहाडी इत्यादि में भी पद प्राप्त नहिं है फिर भी परम्परा से वल्लभकुल गृहोंमें इसका प्रयोग होता हुआ देखा गया हैं। साथ ही इस बात को भी नजर अन्दाज नहिं किया जा सकता है कि जो आज उपलब्ध है उतना ही पदसाहित्य पुष्टिमार्ग में है ऐसा नहिं है, किन्तु इससे कई गुना ज्यादा पदसाहित्य है जो अब तक प्रकट रुपमें सामने नहिं आ पाया है। इनमें से कुछ या तो वल्लभकुल गृहों में हस्तप्रत में से उपयोग किया जाता है या तो इसका विपुल साहित्य वल्लभकुल गृहों एवम् प्राचीन वैष्णवों के गृहोंमें एवम् कई पुस्तकालयों में बिना सांशोधनके जहां का तहां जैसा का तैसा रखा हुआ है। अतः सम्भव है उनमे से भी जो अबतक प्रचलित नहिं है ऐसी बातें प्रकट हो सकती है। जबकि हमारे यहां भगवत्सेवा में होरी-रसिया इत्यादि लोकसंगीतमें गाया जानेवाला गान भी स्वीकार्य है तब कोई भी निश्चित कारण के बिना किसी भी राग को अस्वीकार्य की उपमा दे देनी यह उस राग प्रति का अन्याय होगा। अभी की प्रवर्तित वर्षाऋतु का ही विचार किया जाय तो केवळ दो या तीन प्रकार के मल्हार का ही प्रचलित में गान देखा जाता है जब कि इन तीनों के उपरान्त भी अन्य पांच-छः प्रकार के मल्हार का गान मैं परम्परा मे सुन चुका हूं।

सारांश में यद्यपि गान के माधुर्य के लिये स्वर-ताल आदि अपेक्षित रूप से जरूर स्वीकारे गये हैं और इसमे जहां कहीं भी तान-घमक आदि की आवश्यकता हो वहां उसका उपयोग भी किया जा सकता है फिर भी हमारे यहां मुख्य प्राधान्य तो भाव का ही है और जिससे-जिस प्रकार से सेवा के समय के अनुरूप भावाभिभूती सिद्ध होती हो वही प्रकार एवम् वे सब ही प्रकार हमारे यहां स्वीकार्य है।

पुनश्च वैष्णवोपयोगी-वैष्णवों को भगवत्सेवोपयोगी प्रशिक्षण के सुंदर सत्प्रयास के लिये उपर्युक्त दोनों संस्थाओं को एवम् कीर्तनकार श्रीजमुनाप्रसादजी को हार्दिक धन्यवाद देता हूं। एवम् इस प्रकाशन की सफलता के लिये शुभकामना प्रदान करता हूं।

वि. सं. २०५८, भावत्क :
श्रावण शु. ४, मंगलवार, (गो. चन्द्रगोपाल - वडोदरा)
दि. २४-७-२००१ गोस्वामी चन्द्रगोपाल

(गो. चन्द्रगोपाल-वडोदरा)

गो. श्री इन्दिराबेटीजी

व्रजधाम आध्यात्मिक केन्द्र
मांजलपुर, वडोदरा, गुजरात

'श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट' के तत्वाधानमें कीर्तन विषयक प्रशिक्षण देनेके लिये ''कीर्तन प्रवेशिका'', ''कीर्तन प्रबोध'' एवं ''कीर्तन सुबोध'' नामकी तीन पुस्तिकायें पूर्वमें प्रकाशित हो चुकी हैं। कीर्तनानुरागी भाविकजन उसका भरसक उपयोग कर रहे है। अब चौथा भाग 'कीर्तन प्रवीण' के नाम से प्रसिद्ध होने जा रहा है यह आनन्दका विषय है।

चि. निकुंजलता बेटीजीने वैष्णवजनोमें कीर्तनानुराग बढाया है। विशेषतः महिलाओंके लिये किर्तन मण्डलियाँ तैयार करके वैष्णवजगत में नयी क्रान्तिको उजागर किया है। बडे बडे महानुभाव भगवदीयोंने दिव्य इन्द्रियोके माध्यमसे स्वयं भगवद् स्वरुप लीला एवं गुणोंका दर्शन करके गान किया है। अतः भगवदीयोंकी वाणी अनुभवात्मक, रसात्मक एवं फलात्मक है। अगर हम शब्द एवं अर्थ दोनेंका रसपान श्रवण एवं कीर्तनके माध्यम से करते रहे तो जैसे आद्र वस्त्र सुखे वस्त्रको गीला बना देता है, वैसे ही हमारा अंतःकरण भी रसाद्र हो जायेगा।

पुष्टिमार्गकी यह प्रणाली रही है कि भगवद् सेवामें स्वतः नवधा भक्तिका संकलन हो जाता है। भगवद् सेवाका अधिकार आत्मनिवेदी भक्तोंको मिलता है। जब वह भगवन्मंदिरोंमें प्रविष्ट होता है तब वंदन करनेके बादमें सेवाका प्रारंभ करता है। फिर पादसेवन भक्तिके रुपमें सेवाकी तैयारी करता है। सेवाके लिये इधर से उधर घुमता है। सेवा करनेकी प्रक्रिया अर्चन भक्ति है। अगर वह तनुवित्तजाके साथ मानसी बन जाती है तो दासभावसे लेकर रसभाव तककी भावनाका विकास उसके हृदयमें होता है। वहां तक पहुंचनेके लिये सेवाकी प्रक्रियामें महानुभावोंने कीर्तन प्रणालिकाको भी संकलित किया है।

''सेवा रीत प्रीत व्रजजनकी जन हित जग प्रकटाइ''

ऋतुअनुसार, उत्सवानुसार, लीलानुसार एवं अपने अपने भावनुसार

भगवदीयोंने कीर्तन गाये हैं। तद्तद् लीला समय एवं भावानुसार उन्ही कीर्तनोंका पुनः पुनः आवर्तन करनेसे भावकके हृदयमें रसात्मकता प्रकट होती है। भगवदीयोंकी वाणीमें भगवद् सन्मुख भगवद् गुणगान करनेसे प्रभु को बडा सुख होता है।

गुणगाने सुखावाप्तिःगोविंदस्य प्रजायते ।।

भगवदीयजन ताल, लय एवं सुरमें भगवद् गुणगान करेंगे तो स्वतः आनंदित बनेंगे एवं अपने आराध्यको भी प्रसन्न करेंगे। कीर्तनोंके माध्यमसे भगवद् गुणगानकी प्रक्रिया केवल स्टेज शो करके दुनियाको दिखानेके लिये नहीं है, अपितु अपने घरोंमें बीराजमान प्रभुके सन्मुख गान करके उन्हें प्रसन्न करनेके लिये है। अगर कहीं समुदाय के रुपमें या वैयक्तिक रुपमें कीर्तनगानका आयोजन होता है तो लोगोंकी कीर्तनमें रुचि जगाने एवं बढाने के लिए है।

इस पुस्तिकामें ताल-लयकी जानकारीके साथ विविध राग एवं कीर्तनगानका परिचय दिया गया है एवं कीर्तनगानके लिये नोटेशन्स भी दिये गये है। ये चारों भाग कीर्तन शिक्षार्थी एवं परीक्षार्थीके लिये अत्यधिक उपयोगी होंगे। संप्रदायमें व्यापक रुपसे इसका उपयोग होगा।

'आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद्'ने कीर्तनोंका प्रचार, प्रसार करनेके लिये जो सहयोग दिया, वह सराहनीय एवं आवकारदायक है। कीर्तनोंकी परिक्षा लेना तो एक बहाना है। किन्तु कीर्तनोंसे वैष्णवजनोंका भाव जगे, सुचारुतया गानकर प्रभुसेवामें उन कीर्तनोंका विनीयोग हो यही प्रमुख उद्देश्य है।

चि. निकुंजलता बेटीजी ने चारों भागोंका प्रकाशन करके पुष्टिमार्गकी समुचित सेवा की है। पञ्चवर्षीय अभ्यास क्रमको संपूर्ण करनेके लिये पाँचवा अंतिम भाग भी जल्दी ही प्रकट हो और वैष्णवजन पूर्णतया कीर्तनप्रशिक्षण प्राप्त कर भगवदीयोंकी वाणीका यावज्जीवन रसास्वादन प्राप्त करें यह हार्दिक भावना व्यक्त करती हूँ।

गोस्वामी इन्दिरा बेटीजी

पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी

II Shree Govardhandharan Vijayate II
II Shree Balkrushna Prabhu Vijayate II

Shree Nikunjalata Betiji

Rajneelam,
Flat No. A/4, Ground Floor,
Dr. Rajabli Patel Road,
Bhulabhai Desai Road,
Bombay - 400 026.

जो सुख होत गोपाल गाये

पंच वर्षीय कीर्तन प्रशिक्षणके अभ्यासक्रममें पाठ्य क्रम नं. ४ ''कीर्तन प्रवीण'' प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता एवं गौरव अनुभव कर रही हूँ। भगवत कृपासे अब हम इस शिक्षणमें काफी आगे बढे हैं। अगले पाठ्य क्रम नं. ३ ''कीर्तन सुबोध''में राग, ताल, मात्रा, लयके प्रकार सीखे। वाद्यमें तंबूर एवं कुछ और विशेष राग एवं पद सीखे। इतना ही नहीं, हमारे यहाँ गाये जानेवाले रागोंके विषयमें भी जानकारी ली।

इस पाठ्य क्रममें अपने यहाँ सुप्रचलित वाद्य झांझके बारेमें विशेष रुपसे समजाया गया है। इसके सिवा और विषयोंके साथ साथ ''हमारी कीर्तन प्रणाली'' के अन्तर्गत नित्य पद एवं वर्षोत्सव पदमें बधाई एवं अन्य दिनोंमें गाये जानेवाले विभिन्न पदोंके बारेमें विशेष रुपसे प्रकाश डाला गया है। कीर्तन करनेवाले या सीखनेवालेको चाहिये कि कौनसे कीर्तन कब और कौनसे रागमें गाये जाते हैं; इस विषयक जानकारी प्राप्त करें। बरसों तक कीर्तन सीखने पर भी यदि ज्ञान न हो तो सही समय पर सही रागमें सही कीर्तन नहीं गाया जाता। कीर्तन सीखनेवालेको इस पर विशेष ध्यान देकर जानकारी प्राप्त कर आगे बढना चाहिये। इतना हि नहीं, हो सके तो कुछ आवश्यक कीर्तन कंठस्थ भी कर लेने चाहिये। इस पाठ्य क्रममें ''हमारी कीर्तन प्रणाली''में कीर्तनके लिये सामान्य ज्ञान तो दिया गया है। लेकिन विशेष जानकारीके लिये 'कीर्तन संग्रह'का बारबार पठन करना चाहिये और श्रीके सन्मुख गान भी।

कीर्तन सीखनेवालेको यह भी जानकारी आवश्यक है कि माननीय श्री वल्लभकुलके यहाँ एवं वैष्णवोंके यहाँ प्रसंगोमें कौनसे पद गाने चाहिये। इसको हम दो विभागोमें देखेंगे। १) श्री वल्लभकुल और २) वैष्णव वर्ग।

१) श्री वल्लभकुल परिवार :

जन्मदिनको मार्कण्डेय पूजाके समय एवं सायं कीर्तन समाज होता है तब श्री

महाप्रभुजी एवं श्री गुसांइजीकी बधाई गाई जाती है। सायं कीर्तन समाजमें अंतमें ''जुग जुग राज करो श्री गोकुल'' यह पद अवश्य गाया जाता है।

केसरस्नानके समय ''केसरकी धोती'' - इत्यादि पद और आरती उतारी जाती है तब ''परम कृपालु श्री वल्लभनंदन'' पद प्रचलित है। यही क्रम गोस्वामी बालकोंकी पधरामणीमें (वैष्णवोंके वहाँ) समजना। वल्लभकुल परिवारमें यज्ञोपवित या लग्न विवाह प्रस्ताव हो तब भी बधाईयाँ गाई जाती हैं। विवाह प्रस्तावमें सगाई, विवाहके पद एवं दुल्हेभावके पद भी विशेष रुपमें गाये जाते हैं।

२) वैष्णव वर्ग :

निजसेव्य श्री ठाकोरजीकी नित्य सेवामें नित्यपद एवं वर्षोत्सवके पदोंका क्रमानुसार पद गान करना चाहिये। जब निज सेव्यका कोई घरके प्रसंगमें विशेष मनोरथ किया हो तो उस मनोरथ अनुसार पदगान किया जाता है। जब घरमें किसीकी शादी, ब्याह या ऐसे कोई शुभ प्रसंग पर निज सेव्यको विवाहखेल ईत्यादि मनोरथ किया हो तो प्रभु सन्मुख विवाह, दुल्हे भावके पद गाये जाते हैं। लेकिन शादी ब्याहके प्रसंग पर कीर्तन मंडली बुलाकर कीर्तन रखे हो तब ब्याहके पद नहीं, लेकिन श्री महाप्रभुजी, श्री गुसांईजी, इत्यादि की बधाई एवं अन्य आश्रय भावके, विनंति, महात्म्यके पद गाने चाहिए। तत् समयके उत्सवके पद जैसे दानके दिन हो तो साथ साथ कुछ दानके, रासका समय होतो रासके, वसंत धमारके दिन हो तो उसके भी पद अन्य पदोंके साथ साथ गा सकते हैं।

वैष्णव मंडलीमें विनंति, माहात्म्य, वैराग्य, आश्रय एवं वैष्णव नित्य नियम-इत्यादि पद गान होता है। वैष्णवोके यहाँ किसीकी मृत्यु हो जाने पर प्रार्थनासभा हो तब हमारे यहाँके किसीभी पद नहीं गाये जाते।

सद्गत वैष्णव-जोकि ब्रह्मसंबंधित है उसकी 'माला पहेरामणी' हो तब प्रथम श्रीमहाप्रभुजी एव श्रीगुसांईजीकी महात्म्यकी चार या आठ बधाई (हो सके तो चरनकमल आश्रय भाववाली) झांझ समाज सहित गाई जाती है। श्रीयमुनाजीकी लोटीजी खोलने के समय श्रीयमुनाष्टकके पाठ, बादमें श्रीयमुनाजीके पद समयानुसार, आचार्योंकी जय एवं सद्गत वैष्णवके जय श्रीकृष्ण बोलाने के बाद ''जे जन शरण आये ते तारे'' पद अवश्य हि गानेका प्रकार है।

परमकृपाल श्री वल्लभनंदन,रूचिर पदकमल श्री वल्लभाधीशके, श्रीवल्लभ

लाडिले हो ईत्यादि पद गाने के बाद अंतमें ''दृढ इन चरनन केरो भरोसो'' पद गाया जाता है। सौराष्ट्रमें ढाढीलीला, हींचहमची, इत्यादि भी पूरी रात भर चलते हैं और अनेक प्रकारके पद गाये जाते हैं।

कीर्तन शिक्षार्थीको यह जानना भी आवश्यक है कि हमारे पुष्टि पुरुषोत्तम, जो पुष्टिमार्गीय मंदीर, गो. बालकोंके गृहमें या वैष्णवोंके घरमें या बैठकजीओंमें बिराजते है उन्हें छोडकर और किसी अन्य भगवत् विभूति या देव मंदीरोमें हमारे स्वरूपात्मक, लीलात्मक, भावभावनात्मक ईत्यादी कीर्तन करने नहीं चाहिए। जैसे आजकल अन्य देव या माताजीको भी अन्नकूट, छप्पनभोग, हिंडोला ईत्यादी होने लगे हैं। व्रजस्थ ठाकुर नंदनंदन, यशोदोत्संग लालित श्रीकृष्णने की हुई लीलाओंका गान उनके हि सन्मुख गाना चाहिए। अन्यत्र नहीं।

अन्तमें इतना हि कहूँगी कि आजके युगमें नवोदित कीर्तन गानार्थी एवं शिक्षणार्थीओंमें कीर्तनगानमें विवेक रखना अति आवश्यक है। हमारे भगवदीयोंकी ये अमूल्य वाणीकी गरिमा बनाये रखना चाहिए। जहाँ तहाँ बिना समज कीर्तन गान नहीं करना चाहिए।

इस अभ्यासक्रमको अपनी हार्दिक शुभकामनाएं प्रदान कर हमें बल दिया है ऐसे सभी माननीय आचार्यवर्योंके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करती हूं।

अन्तमें इस पुस्तिका एवं कैसेट तैयार करनेमें जिन्होंने काफी महेनत की है ऐसे कीर्तनकार श्री जमुनाप्रसादजी शर्मा एवं कल्पनाबेन शाह, नयनाबेन, निर्मलभाई एवं कु. ख्याति द्वारकादास, मनहरभाई श्रोफ एवं अन्य सभी सहकार देनेवालोंको धन्यवाद देती हूं।

इन पुस्तिकाओंमें कीर्तनादि जानकारी एवं परीक्षाओंमें परीक्षक रुपसे सहयोग देनेवाले कीर्तनकार श्री श्यामसुंदर जोषी, कीर्तनकार श्री मुरारीलालजी चतुर्वेदी, श्री त्र्यंबकभाई, श्री भगवतीप्रसाद शर्मा, भारतीय संगीत समितिके श्री केशवदेव जोषी, श्री विदुरप्रसाद गौतम, प.भ. श्रीमती हार्दिकाबेन महेता, इन सभीको मेरे हार्दिक धन्यवाद देती हूं।

निकुंजलता बेटीजी
सूरत, बड़ौदा, मुंबई

राग

राग का शाब्दिक अर्थ है ''प्रेम''

जिसके गायन से हृदय में प्रेमकी उत्पत्ति हो उसे ''राग'' कहते हैं और यदि वह प्रभूकी किर्ती या यशगान में हो तो उससे उत्तम क्या हो सकता है।

स्वर ईश्वरका स्वरूप है और शब्द ब्रह्म का। इन दोनों का संगम अपने पुष्टिमार्गीय कीर्तन प्रणाली में हुआ है तभी तो पुष्टिमार्गीय कीर्तन प्रणाली से प्रभू को रिझाना अति सुगम है। पुष्टिमार्गीय कीर्तन पद्धति शुद्ध राग रागिनीयों पर आधारित है इसलिये राग रागिनीयों के बारे में जानकारी होना अति आवश्यक हैं। हमने कीर्तन सुबोध में देखा कि राग की तीन जातियाँ हैं। औडव, षाडव एवं संपूर्ण और प्रत्येक जाती की तीन उपजाती हैं। इस प्रकार कुल ९ जाती हैं। १ थाट से ४८४ राग उत्पन्न हो सकते हैं। उत्तर भारतीय संगीत में १० थाट माने गये हैं। इस प्रकार १० थाट से ४८४० राग उत्पन्न हो सकते हैं। थाट में रंजकता का होना आवश्यक नहीं है लेकिन राग में रंजकता का होना अति आवश्यक है।

रागों के तीन भेद हैं

१) **शुद्ध राग** :- जिन रागों में किसीभी राग की छाया नहीं पडती उन्हें शुद्ध राग कहते हैं। ये उत्तम जाती के राग हैं। इनका गान पुष्टिमार्ग में अधिक होता है। जैसे भैरव, सारंग, बसंत, मल्हार आदि।

२) **छायालग राग** :- जिन रागों पर दूसरे रागकी छाया पडती हो या जो राग दो रागों के मिश्रण से बने हों उन्हें छायालग राग कहा जाता है। जैसे नट बिलावल, सूहा बिलावल, गौड़ सारंग आदि। पुष्टिमार्गमें इन रागों का शुद्ध रागों की अपेक्षा कम प्रयोग होता है।

३) **संकीर्ण राग** :- जिन रागों मे १ से अधिक रागों का मिश्रण होता है उन्हें संकीर्ण राग कहते हैं। पुष्टिमार्ग में इन रागों का बहुत ही कम या नहीं के बराबर प्रयोग होता है। जैसे पहाडी, मांड, तिलंग आदि।

आश्रय राग :- उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में प्रत्येक थाट से १ राग उत्पन्न होता है उसे आश्रय राग या जन्य राग कहा जाता है। जैसे भैरव थाट से भैरव

राग, काफी थाट से काफी राग और इसी काफी थाट के और अन्य थाटों से कई अन्य रागों की रचना हुई है।

थाट में सात स्वरों का होना आवश्यक है जबकि राग में ५,६ या ७ स्वर हो सकते हैं।

अष्टसखाओं के समय में थाट पद्धति का आविष्कार नहीं हुआ था इसका उद्भव प. भातखंडेजी द्वारा किया गया। इसलिये पुष्टिमार्ग में उस काल में प्रचलित रागों को ही लिया गया।

पूर्वांग एवं उत्तरांग प्रधान राग :- उत्तर भारतीय संगीत पद्धति मे २४ घंटो को दो भागों में बांटा गया है। दिनके १२ बजे से लेकर रात्रि के १२ बजे तक और रात्रिके १२ बजेसे लेकर दिन के १२ बजे तक। जो राग रात्रि के १२ बजे से दिन के १२ बजे तक गाये जाते है उन्हें उत्तरांग प्रधान राग कहते है। इस रागमें विशेष बात यह है कि राग का वादी म, प, ध, नी, सां में होगा और संवादी उसके विरूद्ध यानी सा, रे, ग, म, प के भीतर और जो राग दिन के १२ बजे से लेकर रात्रि के १२ बजे तक गाया जाता है उसे पूर्वांग प्रधान राग कहते हैं। इसका वादी स्वर सा रे ग म प के भीतर और संवादी स्वर म प ध नी सां के भीतर होगा। पूर्वांग वादी राग दिनके १२ बजे से लेकर रात्रि के १२ बजे तक गाये जाते हैं। उत्तरांग वादी राग रात्रि के १२ से दिनके १२ बजे तक गाये जाते हैं। वादी और संवादी में ४ स्वरों की दूरी रहती है।

संधि प्रकाश राग

संधि याने जब दिन और रात्रि का मिलान होता है उसे संधि कहते है और यह संधि काल देढ घंटे का होता है । २४ घंटे में यह काल दो बार आता है, एक सुबह के समय और एक संध्या के समय यह प्रात: काल पांच से साडे सात बजे और सांय पांच से साडे सात बजे तक। इन रागों की विशेषता यह है कि इनमें रे,ध, कोमल और म तीव्र रहता है। पुष्टिमार्गीय कीर्तन में प्रात:कालीन संधि प्रकाश राग है रामकली और संध्या कालीन राग है पूर्वी एवं गौरी।

ऋतु संधि के रागः इसी प्रकार ऋतु संधि के राग भी हैं। यह संधि भी वर्षमें दो बार आती है। ग्रीष्मकालकी समाप्ति और वर्षाकाल के आगमन समयमें सूहा एवं सोरठ राग गाये जाते है। शीतकालकी समाप्ति और वसंतके आगमन समय बसन्त बहार के पद राग मालकौंस में गाये जाते हैं।

संगीतमय कीर्तन का अपने जीवन पर प्रभाव

कीर्तन से भक्त को केवल आनंद ही नहीं मिलता इसमें निहित शब्द (जिसमें केवल प्रभु की लिलाओं) का वर्णन हैं। एवं स्वर जो मनुष्य द्वारा रचित न होकर प्रकृति से लिऐ गये हैं इन की ध्वनियां मनोभावों को प्रभावित करती हैं। कीर्तन हमारे मन और आत्मा में भक्तिमय अनुभूतियां भर देता हैं। यह भी एक प्रकार का आवेग है जो हमारी आत्मा को प्रभावित करता है। बाँसुरी के स्वर मनुष्य के विचारों को एवम् उसकी आत्मा पर भी शीघ्र प्रभाव डालते हैं। इसलिए श्री कृष्णने बाँसुरी को अपने प्रिय वाद्य के रूप में अपनाया जिसके स्वरो के श्रवण मात्र से ब्रज की गोपियां सुध-बुध भूल जाती थीं। ब्रज की गायों को भी बन्सीनाद श्रवण में पडते ही कृष्ण की ओर आकृष्ट हो जाना स्वाभाविक था यह भाव इस पद में दिया गया हैं।

बांसुरी बजाई आज रंग सों मुरारी ॥

हम यहाँ स्वरों की उत्पत्ति कहाँसे हुई यह इस तालिका द्वारा बतायेंगे।

	स्वर का नाम		स्वर कहांसे आया	स्वर का उत्पत्ति स्थान	स्वर के देवता
१	षडज	सा	मोर	कण्ठ	ब्रह्मा
२	ऋषभ	रे	गाय	शिर	अग्नी
३	गंधार	ग	बकरी	नासिका	गाय
४	मध्यम	म	कौआ	हृदय	ब्रह्मा
५	पंचम	प	कोयल	कण्ठ और हृदय	चन्द्र
६	धैवत	ध	अश्व या घोडा	मस्तक	सूर्य
७	निषाद	नी	हाथी	सब ग्रंथियोंसे	सूर्य

इन स्वरों और शब्दों में एक प्रकार की गति होती हैं और हमारी क्रियाओंमें भी गति होती हैं इसलिये राग रागिनीयां इस गति को प्रभावित करती हैं और इससे मनुष्य को शांति मिलती है। प्राकृतिक गति हमारे तन और मन को नियमित कर उसे आनंद देती है। यदि मनुष्य की क्रियाओं और मन में असंतुलन के कारण अशांति हो तो उसे राग और लय प्रभावित कर संतुलन या व्यवस्थित कर उसे शांति प्रदान करते हैं और यही शांति मनुष्य को प्रभु के निकट ले जाकर प्रभु सेवाके लिये प्रेरित करती है। भक्त द्वारा संगीतमय एवं भावपूर्ण कीर्तन गानेसे प्रभुकी लीलाओंमें चित्तका निरोध शीघ्र ही हो जाता है। अपनी लीलाओंका श्रवण सुनते ही प्रभु शीघ्र रीझते हैं।

स्वर अभ्यास के लिये अलंकार

इस वर्ष स्वर साधना के लिये कुछ अलंकार दिये गये हैं। जिनका नियमित अभ्यास करने से स्वर और लय की पकड बढेगी।

१) सासा रे ग, रेरे ग म, गग म प, मम प ध, पप ध नी, धध नी सां,
सांसां नी ध, नीनी ध प, धध प म, पप म ग, मम ग रे, गग रे सा,

२) सा ग रे ग, रे म ग म, ग प म प, म ध प ध, प नी ध नी, ध सां नी सां,
सां ध नी ध, नी प ध प, ध म प म, प ग म ग, म रे ग रे, ग सा रे सा

३) सा रे सा रे ग, रे ग रे ग म, ग म ग म प, म प म प ध, प ध प ध नी,
ध नी ध नी सां, सां नी सां नी ध, नी ध नी ध प, ध प ध प म, प म प म ग,
म ग म ग रे, ग रे ग रे सा

४) सा सारे ग ग, रे रेग म म, ग गम प प, म मप ध ध, प पध नी नी, ध धनी सां सां,
सां सांनी ध ध, नी नीध प प, ध धप म म, प पम ग ग, म मग रे रे, ग गरे सा सा

५) सा सा ग रे, रे रे म ग, ग ग प म, म म ध प, प प नी ध, ध ध सां नी, नी नी रें सां,
सां सां ध नी, नी नी प ध, ध ध म प, प प ग म, म म रे ग, ग ग सा रे, रे रे ऩी सा

हमारी कीर्तन प्रणाली

(पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी)

अबतक आप जान हि चुके हैं कि हमारे यहाँ श्रीकी सेवामें उनकी लीला सभर कीर्तन गानका बडा हि महत्व है। पुष्टिमार्गमें श्रीठाकुरजीको जगानेसे लेकर सायं शयन तक श्रीकृष्णकी सारस्वत कल्पकी नित्य लीलाके आधार पर जो जो भी श्रीठाकुरजीकी लीलाएं होती हैं उनसे सम्बन्धित नए नए पदोंकी रचना अष्टसखाओंने स्वयं द्वारा लीलानुभूतिके आधार पर की है और कई औरभी परम भगवदीयोंने पद बनाए हैं। ऐसे सालभरके कई पद हमारे ग्रन्थोंमें संग्रहीत हैं। प्रभुकी दैनिक लीला एवं विशिष्ट दिनोंमें विशिष्ट लीला, पर्व, त्यौहार, जन्मोत्सव इत्यादि अनुसार कीर्तनगान भी उसी प्रकार होता है। जैसे श्रीकी सेवा नित्य और नैमित्तिक ऐसे दो प्रकारमें विभाजित है ऐसेहि कीर्तन गान प्रणाली भी नित्य और नैमित्तिक ऐसे दो प्रकारमें विभाजित है। उसी आधार पर हमारे कीर्तन संग्रह संगीत और साहित्यकी दृष्टिसे तीन विभागमें विभाजित है। (१) नित्य कीर्तन संग्रह (२) वर्षोत्सव कीर्तन संग्रह (३) वसंत धमार कीर्तन संग्रह

पहले हम नित्यपदके बारेमें जानकारी लेंगे।

नित्यपद

नित्य सेवा-अष्टसमयकी सेवा जिसमें चार प्रातः - मंगला, श्रृंगार, ग्वाल, राजभोग और सायं - उत्थापन, भोग, संध्यार्ति और शयन - इस सेवामें सुबह श्रीको जगानेसे सायं पोढाने तक नित्य जो कीर्तन गान होता है उसे 'नित्य पद' के नामसे जानते हैं। इस कीर्तनगानमें दिनके एवं तद् ऋतुके समयानुसार रागमें परिवर्तन होता रहता है।

प्रातः - प्रभुको जगानेके समय सर्वप्रथम श्रीमहाप्रभुजी और श्रीगुसांइजीका प्रातः पदगान रामकली एवं भैरव या विभास रागमें होता है। बाद श्रीके जगायवेके एक या दो पद और कलेऊके एक या दो पद और बादमें श्रीयमुनाजीका एक या दो पद भैरव, रामकली, या बिभास रागमें गाया जाता है।

मंगलभोग सरे - ''मंगल मंगलं व्रजभुवि मंगलं'' यह पद नित्य भैरव रागमें गाया जाता है जिसकी अन्तिम तुक दर्शन सन्मुख गाई जाती है।

मंगलादर्शन - दर्शनमें ऋतु अनुसार एक या दो पद गाये जाते हैं। खंडिताके पद भी ऋतु अनुसार रागोमें गाये जाते हैं। जैसेकि शीतकालमें ललित, मालकोंस

रागमें खंडिता, बादमें वसंतकी खंडिता, उष्णकालकी खंडिता, सूहा रागकी खंडिता, मल्हारकी खंडिता इत्यादि। धनुर्मासमें खंडिताके पद विशेषरुपसे गाये जाते हैं। कार्तिकी वदी (व्रज-मागशीर्ष वदी) एकमसे मागशीर्ष सुदी पूनम तक व्रतचर्याके पद रामकली रागमें गाये जाते हैं। घरके बालकका जन्मदिन हो या घरके बालकका उत्सव हो या अन्य उत्सव पर खंडिता या व्रतचर्याके पद नहीं गाये जाते, लेकिन बधाईका पद राग देवगंधारमें गाया जाता है।

वैशाख सुदी १५ से ज्येष्ठ सुदी १५ तक यमुनाष्टपदी एवं श्री यमुनाजीके पद गाये जाते हैं। साथसाथ गंगा दशमीके दिन गंगाजीका पद गाया जाता है।

श्रृंगार औसरा (ओटमें) - अभ्यंग हो तो - "कर मोदक माखन मिसरी ले" पद और "कहा ओछी हवै जै है" - पद भैरव रागमें गाया जाता है। अभ्यंग न होतो "भोग सिंगार मैया" इत्यादि शृंगार औसराके पद, खंडिताके पद गाये जाते हैं। व्रतचर्याके दिनोमें शृंगार औसराका एक पद बोलनेके बाद व्रतचर्याकी अष्टपदी "व्रजानंदकंद" इत्यादि व्रतचर्याके पद गाये जाते हैं। बधाईके दिनमें बधाई हि गाई जाती है। उष्णकालमें (वै. शु. १५ से ज्ये. शु. १५) श्रीयमुनाजीके पद और गंगा दशहराके दिन गंगाजीके पद गाये जाते हैं।

ऐसे हि शृंगार दर्शनमें एक पद शृंगार भावानुरुप, ऋतु और उत्सव अनुसार गाया जाता है। खंडिताके पद भी गाये जाते हैं।

ग्वालबोलें - नित्य क्रममें घैयाका एक या दो पद और बधाई और वसंत धमारके दिनोमें तदनुसार पद गाये जाते हैं।

पलना बिराजे तब (भीतर या दर्शनमें) - प्रथम पद श्रीगुसांइजी रचित "प्रेंख पर्यंक शयनं" रामकली रागमें और बादमें तीन और पद पलनाके ऋतु अनुसार गाये जाते हैं।

जिसका उत्सव हो उसदिन तीन पद उत्सव नायकके गाये जाते हैं।

राजभोग आये - शीतकालमें (देव प्रबोधनीसे) शीतकालके गृहभोजनके, भोजन बुलायवेके एवं व्रजभक्तोंके घर भोजनके पद गाये जाते हैं। द्वितीयापाट (गुर्जर फा. कृ. २ व्रज चै. कृ. २) से कुंजभोजन, छाकके पद और वर्षा ऋतुमें वर्षाकी छाकके पद गाये जाये जाते हैं। बधाई के दिनोंमें बधाईके पद गाये जाते हैं। गृहभोजनके पद शितकालके सिवा बडे उत्सवोंमें उस उत्सवके दुसरे दिन और बादमें बाललीला गाई जाती है वहाँ तक किसी किसी घरमें गाये जाते हैं।जैसे कि जन्माष्टमी, राधाष्टमी, श्रीमहाप्रभुजीका उत्सव, इत्यादि।यही क्रम जयन्तीयोंके उत्सवके दिनके लिये भी है।

राजभोग सरे - अचवन का एक और एक बीरीका पद या बधाई ऋतु एवं उत्सवानुसार गाया जाता है।

राजभोग दर्शनमें - शीतकालमें हिलग, शीतकालीन पनघट और श्रृंगार के भावका एक पद, एवं घटा हो तो घटाके भावका एक पद गाया जाता है। शीतकालमें तोडी, आसावरी,धनाश्री, इत्यादि रागमें कीर्तन गाये जाते हैं। द्वितीया पाटसे कुञ्जभावके, शृंगारभावके और फुलमंडली हो तो फुलमंडलीके और अक्षय तृतीयासे रथयात्रा तक खसखाना एवं चन्दनके भावके पद गाये जाते हैं। ''चंदन चर्चित नील कलेवर'' - अष्टपदी भी गाई जाती है। उष्णकालमें सामंत सारंग, गौड सारंग, सुघराई रागमें कीर्तन गाये जाते हैं। शीतकाल एवं उष्णकाल दोनोंमें ऋतु अनुसार रागोमें रागमाला भी गाई जाती है।

सायं भोग एवं संध्यार्तिके दर्शनमें - ऋतु, श्रृंगार, बधाई, उत्सवादि क्रमानुसार पद गाया जाता है। आवनीके पद, शृंगार भावानुरूप पद, घटाके दिन घटाके भावका पद और अक्षयतृतीयासे रथयात्रा तक आवनीके पदके साथ साथ फुवारा एवं खसखाना, नाव, फुलमंडली इत्यादिके पद भी गाये जाते हैं। जन्मदिन एवं उत्सवके दिन बधाई गायी जाती हैं। शीतकालमें भोगदर्शनमें नट या पूर्वी रागमें और सन्ध्यार्तिमें गौरी रागमें पद गाये जाते हैं। उष्णकालमें अक्षयतृतीयासे स्नानयात्रा तक सारंग, हमीर, इत्यादि रागमें और स्नान यात्रासे रथयात्रा तक सोरठ रागमें पद गाये जाते हैं।

संध्यार्ति बाद ओसरामें - ''दुहिवो दुहाईवो भूल गये हो'' और ''मोहन गोदोहन कर दीजे'' पद नित्य गौरी रागमें गाये जाते हैं। बधाई हो फिर भी यही पद गाये जाते हैं।

शयनभोग आये - एक या दो पद ब्यारूके और एक पद दूधका कान्हरा या ईमन रागमें गाये जाते हैं। भोग सरने पर एक बीरीका पद गाया जाता है। बधाई हो तो बधाईके पद गाये जाते हैं। ब्यारूके नहीं।

शयन दर्शनमें - ऋतु, बधाई तथा उत्सव क्रमानुसार गानेकी प्रथा है। द्वितीया पाटसे स्नान यात्रा तक कुंजभावके पद और अक्षयतृतीया से स्नानयात्रा तक चन्दनके, फुलके शृंगार हो तो फुल शृंगारानुरूप पद। बधाई हो तब बधाईके पद गाये जाते हैं।

पोढवे में - ऋतु अनुसार एक मानका और एक पोढवेका पद, तत् पश्चात् आश्रयके पद - श्री महाप्रभुजी और श्री गुसांइजीके गाये जाते हैं। कभी कभी मानमिलापका पद भी गाया जाता है।

इस तरह यहां 'नित्यपद' का सामान्य ज्ञान दिया गया है।

वर्षोत्सव प्रणाली - १

(पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी)

नित्य सेवा क्रमके उपरांत सेवामें विशेषमें जो क्रम निर्माण किया है तदनुसार जन्मोत्सव, दान, रास, अन्नकुट, इत्यादि एवं पर्व त्योहारोमें जो कीर्तन गाये जाते हैं उसका वर्षोत्सवमें समावेश किया गया है। इस क्रममें गायेजानेवाले पदोंके संग्रहको वर्षोत्सव पद संग्रह कहते हैं। वैष्णवोंकी समझ-सुविधाके लिये वर्षोत्सवके पदोंको मैं दो विभागोमें विभाजित करती हूँ। १) वर्षोत्सव प्रणाली - १ जिसमें जन्मोत्सव बधाईके बारेमें लिखा जायगा और २) वर्षोत्सव प्रणाली - २ जिसमें अन्य नैमित्तिक पदोंके बारेमें लिखा जायगा। इस क्रममें प्रथम हम जन्मोत्सव पर गाये जाने वाले पद बधाई के बारमें देखेंगें।

बधाई

श्रीठाकोरजी (श्रीकृष्ण) से लेकर हमारे आचार्य महानुभावोंके जन्मोत्सवके कीर्तन 'बधाई' के पदके नामसे जाने जाते हैं। जैसेकि जन्माष्टमीकी बधाई, राधाष्टमीकी बधाई, श्री महाप्रभुजीकी, श्री गुसांईजीकी इत्यादि।

१. बधाई गानकी विशेषता यह है कि विशिष्ट जन्मोत्सव जन्माष्टमी, राधाष्टमी, श्रीमहाप्रभुजी एवं श्री गुसांइजीके उत्सवकी बधाई गानका प्रारंभ तद् तद् उत्सवके कुछ दिन पूर्व हि हो जाता है। जो जन्मोत्सवके दूसरे दिन तक गाई जाती है।

२. बधाईके दिनोंमें मंगलाके दर्शन खुलने पर "मंगल मंगलं" पद पूरा होने के बादसे पूरे दिन भर शयन तक बधाई के हि पद गाये जाते हैं।

३. विशेष जन्मोत्सव पर प्रथम छोटी बधाई बैठती है तब बधाई और साथमें नित्यपद भी गाया जाता है। बडी बधाई बैठनेके बाद सभी समय में बधाईके हि पद गाये जाते हैं।

४. बधाई गान झांझ पखावज समाजसे होता है। तब पदकी अन्तिम तुक चलतीमें गाई जाती है। श्रीको आर्ति आने के समयमें भी झांझकी चलतीमें गान किया जाता है। (झांझ विशेषकर पलना, राजभोग और संध्यार्तिके समय बजती है।) जन्माष्टमी, राधाष्टमी, श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांइजीके उत्सवके दिन श्रीको जगाने के समयसे झांझ पखावजके साथ प्रणालीनुसार दिनभर बधाई गाई

जाती है। जन्मोत्सवके दूसरे दिन बधाई गान तंबूर एवं हारमोनियमसे होता है। झांझ नहीं बजती।

५. जन्मोत्सवके दिन या पाटोत्सवके दिन तिलकके दर्शनमें प्रथम 'हेरी हे आज नन्दराय'' पद, श्रीको तिलक करनेके समय ''बधाईको दिन नीको आज'' पद सारंग रागमें, आरतीके बाद ''रानी तेरो चिरजीयो गोपाल'' धनाश्रीमें और बादमें ''तिहारो घर सुबस बसो'' इत्यादि गाये जाते हैं। श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगोपीनाथजी, श्रीगुसांइजीके उत्सवके दिन तिलकमें उपरोक्त पदके बाद आचार्यजीकी बधाई गाई जाती है। ''केसरकी धोती पहेरे'' - इत्यादि। श्री गुसांईजीके उत्सवके दिन तिलकमें उपरोक्त श्री महाप्रभुजीकी बधाईके बाद श्री गुसांईजीकी बधाई गाई जाती है।

६. बधाई गानके दिनोंमें मान-पोढवेके समय ''धन्य रानी जसुमति गृह आवत गोपीजन'' पद गाया जाता है। उत्सवके दिन शयन आर्तिमें आशिषका पद गाया जाता है।

७. विशेष जन्मोत्सवके दूसरे या तीसरे दिनसे मंगला एवं शृंगारमें बाललीलाके पद गाये जाते हैं और ढाढी के पद राजभोग दर्शन एवं संध्यार्तिमें गाये जाते हैं।

८. अपने अपने घरके ठाकोरजीके पाटोत्सव पर भी जन्माष्टमीकी बधाई गाई जाती है।

जन्माष्टमी की बधाई

जन्माष्टमीकी बधाईमें प्रथम बाललीलाकी बधाई झांझ समाज सहित किसी घरमें आषाढ (व्रज श्रावण) कृ. २ से ७ तक या किसी घरमें श्रावण सुदी तीज (ठकुरानी तीज) से श्रावण सुदी ११ तक बैठती है। बादमें जन्माष्टमीकी बधाई छोटी गुर्जर आषाढ (व्रज श्रावण) वदी ८ से बैठती है। और बडी बधाई श्रावण सुदी ११ (पवित्रा एकादशी) से बैठती है। जब किसी घरमें पवित्रा एकादशी से ही बधाईका प्रारंभ होता है। (जन्माष्टमीकी बधाई किसी घरमें ३४ दिनकी, किसी घरमें १ महिनेकी, किसी घरमें २५ दिनकी और किसी घरमें १२-१३ दिनकी (पवित्रा एकादशी) बैठती है।)

जन्माष्टमीकी बधाई का प्रारंभ राग देवगंधारमें ''आज नंदमहरके बधाई'' पदसे होता है। किसी घरमें ''व्रजभयो महरीके पूत'' पदसे होता है । जिसकी दो तुक सन्मुख गानेके बाद भोग आये पद पूरा होता है।यही क्रम श्रीमहाप्रभुजी एवं श्रीगुसांईजीकी बधाई प्रारंभमें समझना।

जन्माष्टमीके बधाई गानके दिनोमें सिर्फ जन्माष्टमीकी ही बधाई गाई जाती है। अन्य किसीकी भी बधाई नहीं गाई जाती।

जन्माष्टमीके दिन सुबह पंचामृत समय धनाश्री रागमें :- (१) आपुन मंगल गावे रानीजु (२) मंगल गाओ माई सब मिल (३) सोवन फूले फूली यशोदारानी (४) यशोदारानी जायो है सूत नीको (५) चिरजीयो गोपाल रानी तेरो - पद गाये जाते है।

इस दिन अभ्यंगमें भी यही पद गाये जाते हैं।

श्रीमहाप्रभुजी, श्रीगुसांईजीके उत्सवमें अभ्यंगमें भी यही पद गाये जाते हैं।

शृंगार औसरा (ओट)में - राग देवगंधारमें ‘‘व्रज भयो महरीके पूत’’पद और अन्य जन्माष्टमीकी बधाई गाई जाती है।

शृंगार -तिलक दर्शनमें - प्रथम बिलावलमें ‘‘आनन्द आज नन्दजूके द्वार’’ पद और तिलकके समय सारंग रागमें ‘‘बधाईको दिन नीको’’ पद, आरतीके बाद ‘‘जसुमति तिहारो घर सुबसबसो’’पद धनाश्री रागमें गाया जाता है।

जागरण दर्शनमें - प्रथम चार पद माहात्म्यके गाये जाते हैं। मालव रागमें (१) पद्म धर्यो जन ताप निवारन (२) वंदे धरन गिरिवर भूप (३) मोहन नंदराय कुमार (४) चरणकमल वंदो जगदीश (कान्हरामें) बादमें और १६ या १७ जन्माष्टमीकी बधाईके पद गाये जाते हैं।

रात्रिके पंचामृत समय - राग देवगंधारमें ‘‘व्रज भयो महरीके पूत’’ पद गाया जाता है।

नवमीके दिन नंदोत्सव समय - प्रथम नंदोत्सवके पद बादमें इतर बधाईके पद और बादमें पलनाके पद गाये जाते हैं। पलनाकी आरतीके बाद आशावरी रागमें ‘‘धन्य यशोदा भाग्य तिहारो जिन ऐसो सुत जायो’’ और बादमें ‘जसुमति तिहारो घर सुबस बसो’’पद धनाश्रीमें गाया जाता है।

बाललीलाके पद - गु. श्रावण (व्रज भाद्र) वदी १० या ११ से अमावस तक तंबुर या हारमोनियमके साथ गाये जाते हैं। झांझ नहीं बजती।

राधाष्टमीकी बधाई

भाद्र० सुदी १ से ९ तक गाई जाती है। भाद्र० सुदी ५ श्री चंद्रावलीजीको उत्सव और ६ को श्री ललीताजीके उत्सवके दिन तत् तत् बधाई उसी दिन राजभोग दर्शनमें गाई जाती है। भोग आरतीमें ढाढीके पद गाये जाते हैं।

जयन्ती उत्सव

हमारे यहां श्रीकृष्ण जयन्ती (जन्माष्टमी) का सर्वोपरि प्राधान्य है हि। लेकिन भगवद् अवतारोमें तीन जन्मजयन्ती (जन्मोत्सव) का भी प्राधान्य है। जिसमें रामनवमी, नृसिंह चौदश और वामन द्वादशीका समावेश होता है। इन तीनों जयन्ती पर उस उत्सवके पद और साथ साथ निश्चित समयमें विशिष्ट माहात्म्य के पद भी गाये जाते हैं।

तीनों उत्सव पर -

१. गोविन्द तिहारो रूप निगम नेति नेति गाय - मंगला दर्शनमें बिलावल रागमें गाया जाता है।
२. प्रलय पयोधिजलेधृतवानसि वेदं - जयदेवजीकी अष्टपदी मालव रागमें भोग दर्शनमें।
३. पद्म धर्यो जन ताप निवारण - संध्यार्तिमें मालव रागमें।
४. चरण कमल वंदो जगदीश - शयनमें कान्हरा रागमें गाया जाता है।
५. जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत - राजभोगमें किसी किसी घरमें नृसिंह चौदशके दिन गाया जाता है।

उत्सवके पद

रामनवमी-पंचामृत समय-झांझ समाज सहित राम जन्मकी बधाई गाई जाती है। उत्सवभोग, राजभोग, सन्मुख भी रामजन्मकी बधाई गाई जाती है। शयनमें "नौमी चैत्रकी उजीयारी" पद और मानके पद समय कहानीके पद और आश्रयमें - "तिहारे चरन कमल" माहात्म्यका पद गाया जाता है।

नृसिंह चौदस - सायं पंचामृत समय एवं उत्सवभोग आने तक झांझ समाज सहित 'यह व्रतमाधो प्रथम लियो' - इत्यादि नृसिंह चौदसके पद गाये जाते हैं। शयन दर्शनमें कहीं कहीं - "श्री नरसिंह भक्त भय भंजन" पद गाया जाता है।

वामन द्वादशी - पंचामृत समय एवं उत्सवभोग एवं राजभोग सन्मुख-वामन जन्म वधाईके एवं वामनजीके पद धनाश्री एवं सारंग रागमें झांझ-समाज सहित

गाये जाते हैं। जयन्तीके उत्सव पर जन्म पंचामृत समयसे लेकर उत्सवभोग या राजभोग दर्शन तक ही झांझ बजतीं हैं।

इन जयन्ती उत्सवोंमें उस उत्सवके पद एवं माहात्म्यके पदके समयके सिवा अन्य समयमें नित्यके पद गाये जाते हैं।

उपरोक्त माहात्म्य पदके सिवा (१) वंदे धरन गिरिवर भूप (२) चक्रके धरन हार इत्यादि माहात्म्यके पद भी इन जयन्तीमें किसी घरमें किसी निश्चित जयन्ती उत्सव पर निश्चित समयमें गाये जाते हैं। देवप्रबोधनी के दिन भी मंगला, राजभोग, भोग, जागरण इत्यादिमें माहात्म्यके पद गाये जाते हैं।

श्रीमहाप्रभुजीकी बधाई

बधाईका प्रारंभ किसी घरमें चैत्र सुदी ११ से और किसी घरमें चैत्र (व्रज वैशाख) कृष्ण १ से होता है। श्री महाप्रभुजीकी बधाईके साथ साथ जन्माष्टमीकी बधाई भी गाई जाती है। और किसीकी भी बधाई नहीं गाई जाती।

श्री महाप्रभुजीके उत्सवके दिन मंगलासे हि झांझ पखावजसे कीर्तन होते हैं।

उत्सवके दिन किसी किसी घरमें मान-पोढवेके पदोंके स्थान पर ''कुञ्जमहल आज मंगल हेरी'' और ''कुंज भवनमें पोढे दोउ'' ये पद गाये जाते हैं। घरघरकी रीत अनुसार।

त्रयोदशीसे आमवास्या तक जन्माष्टमी बाललीलाके पद गाये जाते हैं।

श्रीगुसांइजीकी बधाई

मागशीर्ष सुदी १ या ९ से प्रारंभ होती है। श्रीगुसांइजीकी बधाईमें जन्माष्टमी एवं श्री महाप्रभुजीकी बधाई साथ साथमें गाई जाती है। उत्सवके दिन प्रणाली अनुसार बधाईके पद गाये जाते है। मागशीर्ष कृष्ण ११ से १४ तक जन्माष्टमी बाललीलाके पदगाये जाते हैं।

सातबालकोंके उत्सव

सातबालकों के उत्सव पर उपरोक्त बधाईके साथ साथ उसी बालककी भी बधाई राजभोग दर्शन में गाई जाती है। ऐसा हि क्रम तत् तत् घरके नित्यलीलास्थ या भूतलपर बिराजमान बालकोंके जन्मदिनके लिये भी है। आशिषके पदमें ''जुग जुग राज करो श्री गोकुल'' पद गाया जाता है।

वर्षोत्सव प्रणाली - २

(पूज्यपाद श्री निकुंजलता बेटीजी)

जन्माष्टमीके बाद अन्य उत्सवोंके विविध विशेष पद इस प्रकार हैं।

दान के पद

भाद्र शुक्ल०११ (दान एकादशी)से गुर्जर भाद्र (व्रज-अश्विन वदी) ३० तक सभी समयमें मंगलासे शयन तक दानके पद गाये जाते हैं। बडी दानलीलाएं शृंगार औसरा एवं राजभोग आने पर गाई जाती है। श्री हरिरायजीकी बडी दानलीला कभी सन्मुख भी गाई जाती है। लेकिन कुम्भनदासजीकी दानलीला सन्मुख नहीं गाई जाती। वानद्वादशीके दिन उस उत्सवके, माहात्म्यके एवं दानके पद गाते हैं।

सांझी के पद

गुर्जर भाद्र०१ से अमावास तक भोग सन्ध्यामें गाये जाते हैं।

नवविलास के पद

अश्विन सुदी १ से ९ तक बिलावलमें शृंगार औसरामें या किसी घरमें मालव रागमें संध्यार्तिमें गाये जाते हैं।

करखाके पद

किसी घरमें अश्विन सुदी १ या किसी घरमें सुदी ५ से १० (दशहरा) तक भोग-संध्यामें गाये जाते हैं।

मुरलीके पद

मुरली के पद भी किसी घरमें अश्विन सुदी १ से ९ या १० तक मंगला दर्शन, शृंगार औसरा, राजभोग दर्शन, शयन दर्शनमें गाये जाते हैं। जब किसी किसी घरमें भोग संध्यामें एक दिन मुरली और एक दिन करखाके पद क्रमानुसार गाये जाते हैं।

दशहराके पद

दशहराके दिन मंगलामें खंडिता दशहराकी और जवारा धरानेके समय दशहरेके पद गाये जाते हैं। जवारा धरानेके बाद आजसे अन्नकूटकी बधाई शुरू होती है और रासके पद भी शुरु होते हैं। किसी घरमें गोवर्धनलीलाके पदके साथ रास भी हर समय गाया जाता है।

रासके पद

अश्विन सुदी ११ से अश्विन (व्रज कार्तक) वदी २ तक सभी समय रासके पद गाये जाते हैं। कार्तिक सुद १५ एवं चैत्र सुद १५ के दिन भी हर समय रासके पद गाये जाते हैं। कहीं कहीं आषाढ सुद १५ के दिनभी मल्हार रागमें रासके पद गाये जाते हैं। शरदपूर्णिमाके दिन पोढेवेके कीर्तन तक झांझ परवावजके साथ प्रणाली अनुसार रासके पद गाये जाते हैं।

गोवर्धनलीलाके पद

अन्नकूटकी बधाईमें गोवर्धन लीला, गोवर्धनपूजा एवं अन्नकूट के भावके पदोंका समावेश होता है। अश्विन (व्रज कार्तिक) कृष्ण २ से कार्तिक सुदी १ अन्नकूटके दिन तक ये पद सभी समयमें गाये जाते हैं। राजभोग आने पर बडी गोवर्धनलीला और राजभोग दर्शनमें गोवर्धनपूजाके पद गाये जाते हैं। अन्नकूट उत्सवके दिन गोवर्धनपूजाके पद मंगलासे राजभोग तक गाये जाते हैं। अन्नकूट भोग आने पर अन्नकूट के कीर्तन गाये जाते हैं।

सरसलीला

अश्विन कृष्ण २ से भोग संध्यामें शुरू होती है- मंगलासे शयन तक सभी समय में गाई जाती है। अश्विन (व्र. कार्तिक) वदी ७ के दिन मंगलाके दर्शनमें सरसलीला पूर्ण होती है। सरसलिलाके ७० जितने पद हैं। ये पद मंगलामें खट रागमें, शृंगारमें बिलावलमें, राजभोगमें सारंगमें, भोगमें नट में, संध्यार्तिमें गौरी रागमें, शयनमें कानरा रागमें गाये जाते हैं।

गाय खिलावेके पद

गुर्जर अश्विन वदी ५ या ७ या ८ से राजभोग दर्शन एवं संध्याआर्तिमें अन्नकूटके दिन तक गाये जाते हैं।

हटरीके पद

अश्विन (गुर्जर) ५, ७ या ११ से दिवाली तक शयनमें गाये जाते हैं।

दिपमालिकाके पद

इन्हीं दिनोंमें शयनके दर्शनमें गाये जाते हैं।

इन्द्रमानभंगके पद

मुख्यतया अन्नकूटकी आरती हानेके बाद अशिषके पदगान बाद ये पदोंका गान शुरु होता है। कार्तिक सुदी ३ से ७ तक दिनभर गाये जाते हैं।

गोचारण के पद

गोपाष्टमी से १० तक गाये जाते हैं।

विवाहखेलके पद (सगाई विवाहभावके पद)

कार्तिकी सुदी ९ और १० मंगलासे लेकर राजभोग दर्शन और शयन दर्शनमें गाये जाते हैं।

देवप्रबोधनीमें माहात्म्यके पद

मंगलामें "गोविन्द तिहारो स्वरूप निगम नेति नेति गाय" (माहात्म्य)

मंडपके दर्शन (पंचामृत इत्यादि) सुबह शृंगार के पीछे हो तो बिलावल रागमें और सायं भोग संध्याके समय हो तो कान्हरा इत्यादि रागमें, 'प्रबोधनी मंडप'के पद झांझ समाज सहित उत्सवभोग तक गाये जाते हैं। इसके बादके समयमें नित्य अपने अपने घरकी रीतके समयानुसार नित्य पदोंमेंसे गाते हैं।

राजभोग दर्शनमें - "जाको वेद रटत ब्रह्मा रटत"

भोगमें - "प्रलय पयोधि जलेधृतवानसीवेदं" और "वंदे धरन गिरिवर भूप" - इत्यादि माहात्म्यके पद।

रात्रिके जागरण दर्शनमें चार विशिष्ट माहात्म्यके पद मालवमें - (१) पद्म धर्यो जन ताप निवारन (२) मोहन नंदराय कुमार (३) वंदे धरन गिरिवर भूप (४) चरणकमल वंदो जगदीश (कान्हरामें)

और बादमें भोग आये और दर्शन होतेमें मान एवं रासके पद किसी किसी घरमें गाये जाते हैं। किसी घरमें जागरणमें माहात्म्यके पदके बाद ब्याह-दुल्हेभावके, कुंजके, मान, रास और मालकौंस एवं ललितमें खंडिता इत्यादि पद क्रमानुसार गाये जाते हैं।

दूसरे दिन बारससे या किसी घरमें तेरससे पूनम तक ब्याहके पद गाये जाते हैं। बारसके दिन श्री गिरधरजीका एवं श्री रघुनाथजीका प्रागट्य उत्सव होनेसे बधाई भी गाई जाती है।

दुल्हेभावके पद

कार्तिकी सुदी ११ (देवप्रबोधनी) से कार्तिक सुदी १४ तक या किसी घरमें कार्तिक सुदी १३से पूनम तक गाये जाते हैं। किसी घरमें ये पोष सुदी १५ एवं महा सुदी ४के दिन भी गाये जाते हैं।

गनगोरके पद

चैत्र सुदी ३के दिन राजभोग दर्शनमें ये पद गाये जाते हैं।

रथके पद

आषाड सुदी २, रथयात्राके दिन रथके अधिवासन समय मल्हार रागकी आलापचारीसे मल्हार राग शुरु होता है तबसे मल्हारके पद और रथमें बिराजे तबसे या रथके पहेले भोगके दर्शनसे रथके चारों भोगमें रथके पद गाये जाते हैं। किसी घरमें शृंगार औसरा, राजभोग (भीतर) एवं रथमें बिराजे तब चारों भोगमें रथके पद गाये जाते हैं। किसी घरमें चौथा भोगआनेके बाद मल्हारकी आलापचारी करके बाद मल्हार रागमें रथके पद गाये जाते हैं।

आजसे मल्हार राग शुरु होनेके बाद सभी समय मल्हार रागमें ही पदगान होता है-ठकुरानी तीज तक। हिंडोलाके दिनोंमें सायं हिंडोला झुले तब मल्हारके साथ साथ अन्य रागोंमें भी हिंडोलाके पद गाये जातें हैं।

हिंडोराके पद

आषाड वदी १ या २ से हिंडोरा बिराजवेके समय ‘‘हिंडोरनां रोप्यो नंद आवास’’ बादमें दर्शनमें चार हिंडारा गोविन्द स्वामीके हरेक घरमें गाये जाते हैं। उसके बाद हररोज हिंडोराके समय यथा शृंगार हिंडोरा गाये जाते हैं। कुञ्ज तथा घटा वगैरे हो तो उस भावके अनुसार पद गाये जाते हैं। ये पद श्रावण (गुर्जर)कृ. १ तक हिंडोरा बिराजे तब तक गाये जाते हैं।

विशेषमें -

यहाँ नित्य पद एवं वर्षोत्सवमें जो भी क्रम लिखा गया है वह किसी विशेष गृहका क्रम नहीं लेकिन सामान्य जानकारीके लिये सामान्य क्रम लिखा गया है।

ताल - विभाग

संगीतमें तालकी आवश्यकताकी चर्चा हमने अभ्यासक्रम के पहले तीन पुस्तकोंमें की है। संगीतकी शोभा तालसे ही होती है। कहा जाता है कि "लोंन बिन खाना और ताल बिन गाना ।" वास्तवमें ताल ही संगीतका प्राण है ऐसा कहनेमें किंचित् अतिशयोक्ति नहीं है।

कीर्तन सुबोधमें हमने ताल से संबंध रखनेवाले, 'मात्रा' और 'लय' के बारेमें जानकारी प्राप्त की थी। लयके तीन भेदभी सीखे थे। इन तीनों लयके अलावा लयके और भी प्रकार हैं, जिनक. प्रयोग कलाकार अपनी कलाका कौशल दिखाते समय करता है। अब हम लयके अन्य प्रकार विषयक अभ्यास करेंगे।

विलंबित लय :- हमने देखा है कि मध्य लय से जिसकी गति या चाल आधी हो उसे विलंबित लय कहते हैं। लयकी गति बढाने से मध्य एवं द्रुत लय हो जाती है।

मध्यलय-ताल ध्रुपद मात्रा - १२

×		०		२		०		३		४		×		०		२		०		३		४	
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
सां	सां	नि	सां	सां	रें	नि	सां	प	नी	म	प	रे	रे	म	नी	म	प	रे	म	रे	सा	ऩि	सा
वे	--	द	र	ट	त	ब्र	--	म्हा	र	ट	त	शं	--	भू	र	ट	त	शे	--	ष	र	ट	त
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन	धा	धा	दिं	ता	किट	धा	दिं	ता	तिट	कत	गदि	गन
ऩि	ऩि	सा	म	रे	म	प	प	प	नी	म	प	प	रें	रें	रें	सां	रें	नि	सां	प	नी	म	प
ना	--	र	द	शु	क	व्या	--	स	र	ट	त	पा	--	व	त	न	हिं	पा	--	र	री	जा	कौ

दुगुन :- मध्य लयसे दो गुनी लयको दुगुन लय कहते है। अर्थात् चार मात्राओं के कालमें आठ मात्राओंको बोलना।

दुगुने में यही शब्द या बोल दो बार गाये या बजाये जायेंगे

अर्थात् १२ मात्रामें २४ मात्रएं ली जायेंगी

×		०		२		०		३		४	
1 2	3 4	5 6	7 8	9 10	11 12	13 14	15 16	17 18	19 20	21 22	23 24
धा धा	दिं ता	किट धा	दिं ता	तिट कत	गदि गन	धा धा	दिं ता	किट धा	दिं ता	तिट कत	गदि गन
सां सां	नि सां	सां रें	नि सां	प नी	म प	रे रे	म नी	म प	रे म	रे सा	नि़ सा
वे --	द र	ट त	ब्र --	म्हा र	ट त	शं --	भू र	ट त	शे --	ष र	ट त
नि़ नि़	सा म	रे म	प प	प नी	म प	प रें	रें रें	सां रें	नि सां	प नी	म प
ना --	र द	शु क	व्या --	स र	ट त	पा --	व त	न हिं	पा --	र री	जा कौ

आडी लय या डेढ गुनी लय

(इसमें १८ मात्राओं में २४ मात्राऐं ली जायेंगी)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
धाऽधा	ऽदिंऽ	ताऽति	टऽधा	ऽदिंऽ	ताऽति	टऽक	तऽग	दिगन,	धाऽधा	ऽदिंऽ	ताऽति
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
टऽधा	ऽदिंऽ	ताऽति	टऽक	तऽग	दिगन,	गदिऽ	गनऽ	धा	गदिऽ	गनऽ	धा
×		०		२		०		३		४	

आविृत्ति पूरी करने के लिये ६ मात्रा की
तिहाई लेनी होगी

आड़ी :- जिस लयकी चाल मध्य लयसे डेढ गुनी होती है अर्थात् चार मात्राओंमें छः मात्रा लेना; उसे आड़ी लय कहा जाता है।

उदाहरणार्थ :

आडी या डेढ गुनी लय में एक आवृत्ति ९ मात्रा में गायी जायेगी अर्थात् दूसरी आवृत्ति १८ मात्रा में पूरी हो जायेंगी।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
सांसां	sनिs	सांसां	sरेंs	निsसां	sपs	नीsम	sपs	रेsरे	sमs	नीsम	sपs
वेs--	sदs	रsट	sतs	ब्रs-	sम्हाs	रsट	sतs	शंs--	sभुs	रsट	sतs
रेsम	sरेs	साsनि़	sसाs	नि़sनि़	sसाs	मsरे	sमs	पsप	sमs	sनीs	मsप
शेs--	sषs	रsट	sतs	नाs--	sरs	दsशु	sकs	व्याs--	sसs	रsट	sतs
sपs	रेंsरें	sरेंs	sसांs	रेंsनि	sसांs	पsनी	sमs	पsरें	sरेंs	रेंsसां	sरेंs
पाs-	sवs	तsन	sहींs	पाs-	sरs	रीsजा	sकोs	पाs-	sवs	तsन	sहींs
निsसां	sपs	नीsम	sपs	पsरें	sरेंs	रेंsसां	sरेंs	निsसां	sपs	निsम	sपs
पाs--	sरs	रीsजा	sकौs	पाs--	sवs	तsन	sहिs	पाs--	sरs	रीsजा	sकौs
×		०		२		०		३		४	

चौगुन :- जो लय मध्य लयकी चौगुनी गति की हो अर्थात् चार मात्रा में सोलह मात्रा लेना उसे चौगुनी लय कहते हैं ।

चौगुनी लय में यही बोल चार बार कहे जायेंगे

अर्थात् १२ मात्रा में ४८ मात्रा कहेंगे

×		०		२	
1 2 3 4	5 6 7 8	9 10 11 12	13 14 15 16	17 18 19 20	21 22 23 24
धा धा दिं ता	किट धा दिं ता	तिट कत गदि गन	धा धा दिं ता	किट धा दिं ता	तिट कत गदि गन
सां सां नि सां	सां रें नि सां	प नी̱ म प	रे रे म नी̱	म प रे म	रे सा ऩि सा
वे -- द र	ट त ब्र --	म्हा र ट त	शं -- भू र	ट त शे --	ष र ट त

०		३		४	
25 26 27 28	29 30 31 32	33 34 35 36	37 38 39 40	41 42 43 44	45 46 47 48
धा धा दिं ता	किट धा दिं ता	तिट कत गदि गन	धा धा दिं ता	किट धा दिं ता	तिट कत गदि गन
ऩि ऩि सा म	रे म प प	म नी̱ म प	प रें रें रें	सां रें नि सां	प नी̱ म प
ता -- र द	शु क व्या --	स र ट त	पा -- व त	न हि पा --	र री जा कौ

तिगुन :- जिस लयकी चाल मध्य लयसे तिगुनी होती है अर्थात् चार मात्राओंमें बारह मात्रा लेना, उसे तिगुन लय कहते हैं।

तिगुनी लयमें यही बोल तीन बार बजाये जायेंगे

1 x	2	3 ०	4
धा धा दिं	ता किट धा	दिं ता तिट	कत गदि गन
5 २	6	7 ०	8
धा धा दिं	ता किट धा	दिं ता तिट	कत गदि गन
9 ३	10	11 ४	12
धा धा दिं	ता किट धा	दिं ता तिट	कत गदि गन
×		०	
सां सां नी	सां सां रें	नी सां प	नी म प
वे - द	र ट त	ब्र - ह्मा	र ट त
२		०	
रे रे म	नी म प	रे म रे	सां ऩि सा
शं - भू	र ट त	शे - ष	र ट त
३		४	
ऩी ऩी सा	म रे म	प प म	नी म़ प
ना - र	द शु क	व्या - स	र ट त
×		०	
प रें रें	रें सां रें	नी सां प	नी म प
पा - व	त न हीं	पा - र	री जा कौ
२		०	
प रें रें	रें सां रें	नी सां प	नी म प
पा - व	त न हीं	पा - र	री जा कौ
३		४	
प रें रें	रें सां रें	नी सां प	नी म प
पा - व	त न हीं	पा - र	री जा कौ

इस वर्ष हम ताल झूमरा और सूलताल सीखेंगे।

ताल झूमरा :- मात्रा १४

(१,४, ११ पर ताली और ८ पर खाली)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14
धिं	धागे	तिरकिट	धिं	धिं	धागे	तिरकिट	तिं	तागे	तिरकिट	धिं	धिं	धागे	तिरकिट
×			२				०			३			

ताल सूल :- मात्रा १०

(१, ५, ७ पर ताली और ३,९ पर खाली)

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
धा	धा	दिं	ता	किट	धा	तिट	कत	गदि	गन
×		०		२		३		०	

वाद्य परिचय

झाँझ

यह घन वाद्य अति प्राचीन है। इसकी उत्पत्ति श्रीस्वामिनी जी के झाँझर (झाँझ + रव अर्थात् गुंजन) पायल या घुंघरू से हुई है। जैसे कृष्ण, राधा और गोपियों के बिना रास लीला अधूरी ही लगेगी इसी प्रकार पुष्टि संगीत में झाँझ के बिना बधाई गान अधूरा लगता है।

झाँझ काँसा और पीतल के मिश्रण से बनती है इसके गट्टे कंतान की पट्टी को गोल लपेट कर उस पर कपडे का कवर चढाया जाता है तथा झाँझ और गट्टे को एक दोरी से बांधा जाता है।

इसे बजाने से पहेले इसे सही ढंग से पकडना आना चाहिये गट्टे को इस प्रकार से पकडें कि दोनों अंगूठे दोरी को नीचे की और दबाये रक्खें एवं उँगलियाँ नीचे की और रहनी चाहियें।

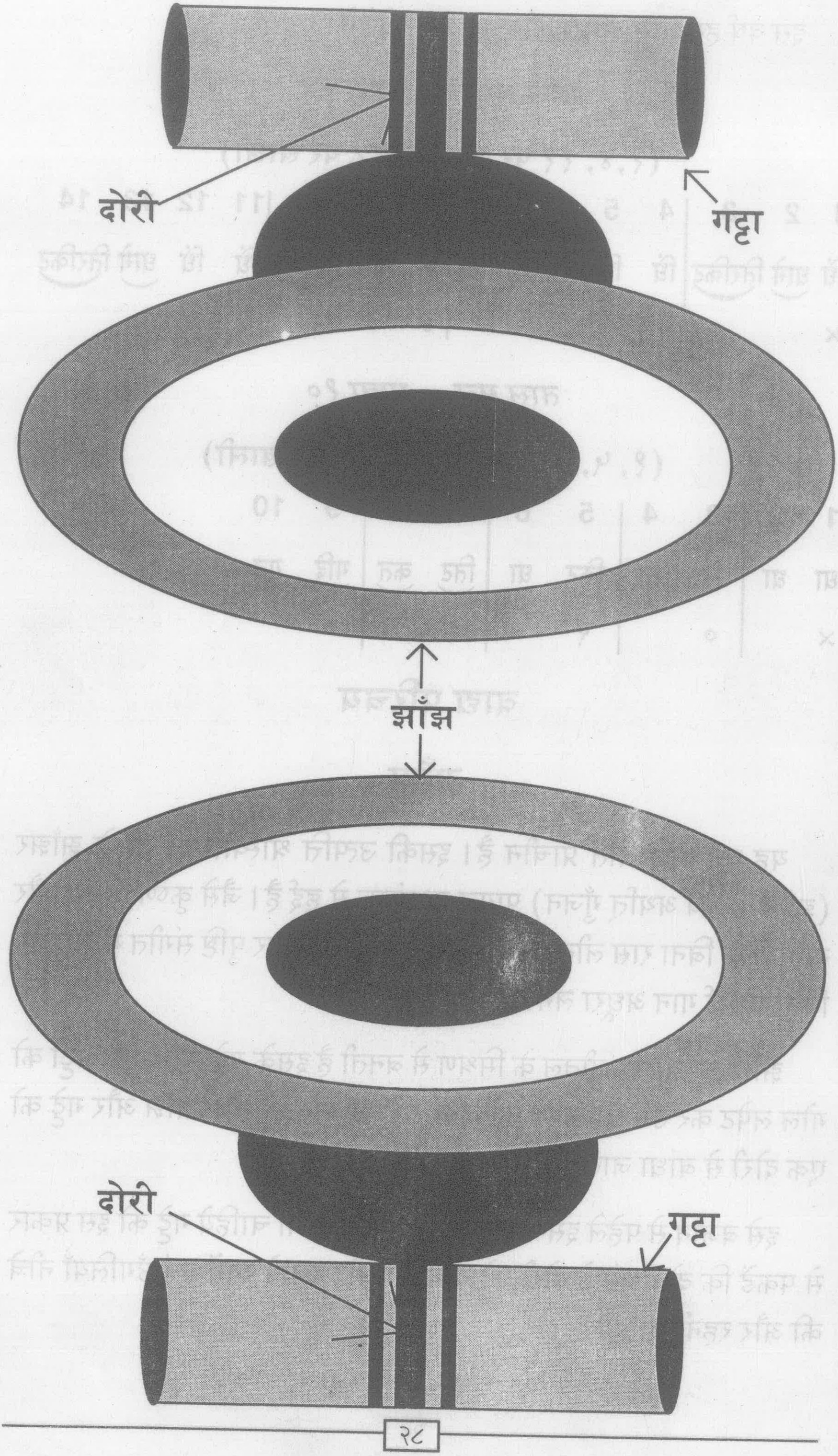
दोरी
गट्टा
झाँझ
दोरी
गट्टा

झाँझ में तबले की तरह बोल नहीं बजते इसमें केवल लय बजती है इसलिये इसमें १-२-३-४ इस प्रकार लय का अभ्यास करना चाहिये १ पर दायाँ हाथ उपर से जरा अधिक जोर से बजाना चाहिये २ पर बांया हाथ नीचे से फिर ३ पर दाँया हाथ उपर से और ४ पर बांया हाथ नीचे से इस प्रकार कुछ दिनअभ्यास के बाद इसे दुगुन में बजाना चाहिये जिसका प्रयोग बाद में धमार की चलती में किया जा सकता है। जो लोग वामहस्त हैं वे बांया उपर से लें ।

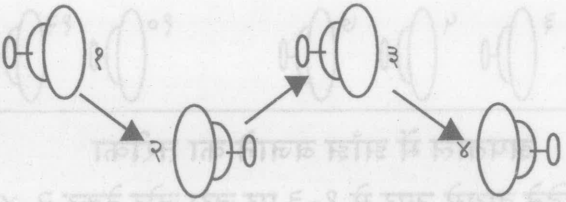

त्रिताल में झाँझ बजाने का तरीका

१-३-५-७-९-११-१३-१५ पर उपर से एवं १-५-१३ पर थोडा अधिक बजन देकर और २-४-६-८-१०-१२-१४-१६ पर नीचे से

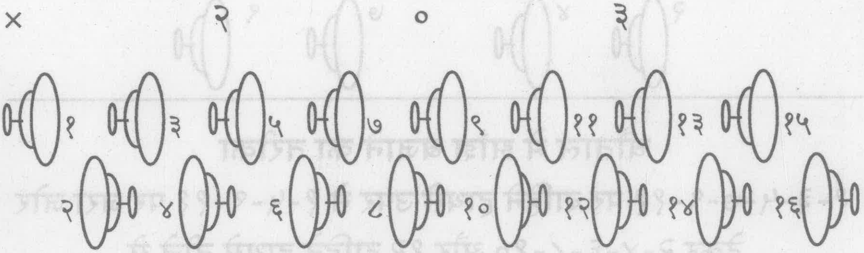
×
२
०
३
१
३
५
७
९
११
१३
१५
२
४
६
८
१०
१२
१४
१६

आडा चौताल में झाँझ बजाने का तरीका

१-२-४-६ पर उपर से एवं ३-५ और ७ पर नीचे से,

१,२,४ और ६ पर अधिक वजन देकर बजाएं।

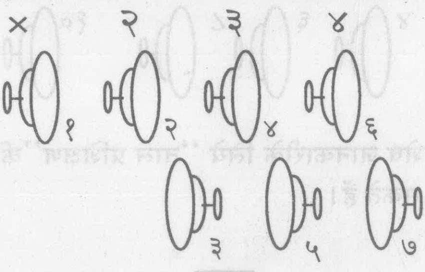
×
२
३
४
१
२
४
६
३
५
७

धमार ताल में झाँझ बजाने का तरीका

१-२-४-६-८-९-११-१३- उपर से १-६-११ अधिक वजन ३-५-७-१०-१२-१४ नीचे से धमार में चलती बजाने के लिये उपर बतायें अनुसार बजायें पहेले १-२-३-४ फिर उसकी दुगुन बजायें।

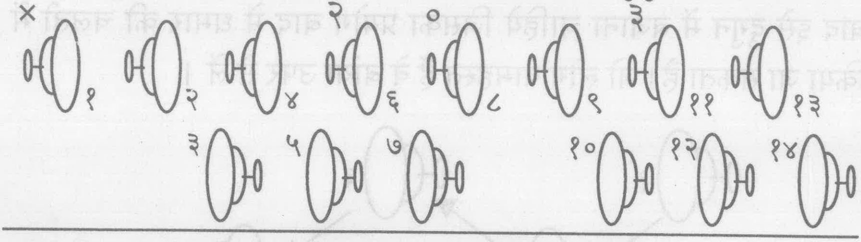
×
२
०
३
१
२
४
६
८
९
११
१३
३
५
७
१०
१२
१४

झपताल में झाँझ बजाने का तरीका

१-३-५-दाहिने हाथसे उपर से १-३ पर जरा जोर देकर २-४ दाहिने हाथसे नीचे से ६-८-१०- बाँये हाथसे उपर से ८ पर जरा जोर देकर ७-९ बाँये हाथ से नीचे से

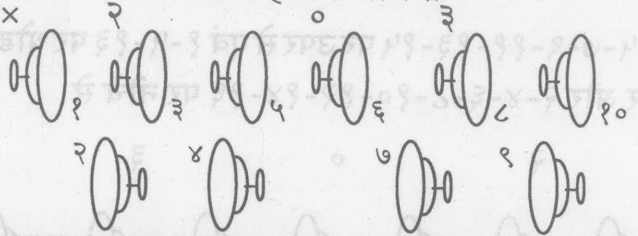
×
२
०
३
१
३
५
६
८
१०
२
४
७
९

चौताल में झाँझ बजाने का तरीका

१-३-५-७-९-११ पर दाहिने हाथसे उपर से १-५-९-११ पर जरा जोर देकर २-४-६-८-१० और १२ दाहिने हाथसे नीचे से

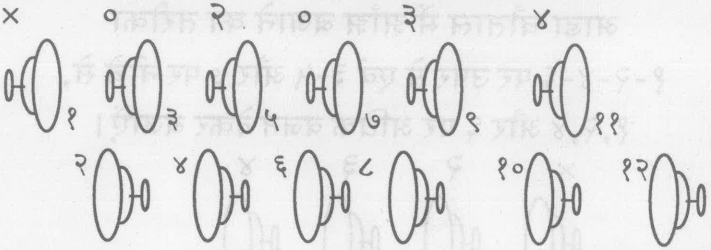
×
०
२
०
३
४
१
३
५
७
९
११
२
४
६
८
१०
१२

इस विषयकी विशेष जानकारीके लिये ''ताल प्रशिक्षण''की केसेट उपलबध है जिसका लाभ आप ले सकते हैं।

राग - तोड़ी अथवा टोड़ी

“रे॒, ग॒, ध॒ कोमल, तीव्र म॑, ध॒-ग॒ संवाद बखान।
संपूरन तोड़ी कही, द्वितीय प्रहर दिन मान ॥”

तोड़ी राग तोड़ी थाट से उत्पन्न होता है। रे॒, ग॒ और ध॒ स्वर कोमल हैं। मध्यम स्वर तीव्र है। यह राग सम्पूर्ण जाति का है। इस रागका वादी स्वर “धैवत” है और संवादी स्वर “गांधार” है। इस रागमें धैवत के प्रमाणमें पंचम स्वरका प्रयोग कम होता है। इस रागका गायन समय दिन का दूसरा प्रहर है।

हमारे पुष्टि सम्प्रदायमें तोड़ी रागको टोड़ी नामसे भी पहचाना जाता है।

“बहुत प्रसन्न भये पिय प्यारी। टोड़ी राग बेनुधर गायो ॥”

मालकौंस राग की तरह यह राग भी उष्णप्रकृतिका है। इसलिए हमारे सम्प्रदायमें अधिकतर शीतकाल, राजभोग, समयमें यह राग गाया जाता है। इस रागमें बधाई और उत्सवोंके पद भी प्राप्त होते हैं। यह राग करूणरसप्रधान है। इस रागकी विशेषता रे॒, ग॒, ध॒ स्वरोंमें है।

शास्त्रीय संगीतमें तोड़ी रागके अनेक प्रकार प्रचलित हैं। जैसे कि बिलासखानी तोड़ी, देसी तोड़ी, आसावरी तोड़ी, गांधारी तोड़ी, जौनपुरी तोड़ी, गुर्जरी तोड़ी, बहादुरी तोड़ी, आदि। तोड़ी रागको शुद्ध तोड़ी, मुलतानी तोड़ी या मियाँकी तोड़ी नामोंसे भी पहचाना जाता है।

आरोह :- सा, रे॒, ग॒, म॑, प, ध॒, नी सां
अवरोह :- सां नी ध॒ प, म॑ ग॒, रे॒ सा
मुख्यांग :- ध़॒ ऩी सा, रे॒, ग॒, रे॒, सा
स्वर विस्तार :- सा रे॒ ग॒, रे॒ सा, म॑ ग॒ रे॒ ग॒, रे॒ सा
म॑ ध॒, नी ध॒ प, म॑ ग॒, रे॒ ग॒, रे॒सा
म॑ ध॒ नी सां, रें॒ गं॒ रें॒ सां, सां नी ध॒ प, म॑ ध॒, म॑ ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ सा,
ध़॒ ऩी सा रे॒ ग॒, रे॒ ग॒, रे॒ सा

कीर्तन - १   राग-तोड़ी   ताल - ध्रुपद   मात्रा - १२

दान को पद

तें कहूँ देख्यौरी आली, नंदनंदन कुँवर कान्ह
मटुकी झटक के, पटक गयौरी ॥
माखन चोर चोर, चित्त हर लीनो ॥
कीनौ न नेकहु डर, उलटके पलट गयौरी ॥१॥
मारग रोक, रहत खोरनमें, नैननकी सैन दे सटक गयौरी ॥
तानसेनके प्रभु तुम बहुनायक, रस गोरसलै, गटक गयौरी ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
प	प	म॑	ध॒	प	प	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा
तें	-	क	हूँ	-	-	दे	ख्यौ	री	आ	-	ली
सा	सा	ध़॒	ऩी	सा	सा	रे॒	ग॒	रे॒	सा	सा	सा
नं	-	द	नं	द	न	कुँ	व	र	का	-	न्ह
सा	सा	रे॒	ग॒	म॑	म॑	ध॒	ध॒	म॑	ध॒	ध॒	ध॒
म	टु	-	की	-	झ	ट	-	क	कै	-	-
म॑	म॑	ध॒	सां	नी	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा
प	ट	-	क	-	ग	यो	-	-	री	-	- ॥

अन्तरा

×		०		२		०		३		४		
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	नी	रें॒	सां	सां	
मा	-	-	ख	-	न	चो	-	र	चो	-	र	
ध॒	ध॒	नी	सां	रें॒	रें॒	गं॒	रें॒	गं॒	रें॒	सां	सां	
चि	-	त्त	ह	-	र	ली	-	-	नो	-	-	
नी	सां	नी	ध॒	प	प	म॑	प	म॑	ग॒	रे॒	सा	
की	नौ	न	ने	-	क	हु	-	-	ड	-	र	
सा	सा	रे॒	ग॒	म॑	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा	
उ	ल	ट	के	-	प	ल	ट	ग	यौ	-	री	॥१॥

संचारी

×		०		२		०		३		४		
प	प	प	प	प	म॑	ध॒	ध॒	नी	ध॒	प	प	
मा	-	-	र	-	ग	रो	-	-	क	-	-	
म॑	ग॒	ग॒	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	रे॒	रे॒	सा	सा	सा	
र	ह	त	खो	-	-	र	-	न	में	-	-	
सा	सा	रे॒	ग॒	म॑	म॑	ध॒	ध॒	म॑	ध॒	ध॒	ध॒	
नै	-	न	न	की	-	सै	-	न	दे	-	-	
म॑	म॑	ध॒	सां	नी	ध॒	प	म॑	ग॒	रे॒	सा	सा	
स	ट	-	क	-	ग	यो	-	-	री	-	-	॥

आभोग

×		०		२		०		३		४	
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	नी	रें॒	सां	सां
ता	-	न	से	-	न	के	-	-	प्र	-	भु
ध॒	ध॒	नी	सां	रें॒	रें॒	गं॒	रें॒	गं॒	रें॒	सां	सां
तु	-	म	ब	-	हु	ना	-	-	य	-	क
नी	सां	नी	ध॒	प	प	म॑	प	म॑	ग॒	रे॒	सा
र	-	स	गो	-	-	र	-	स	लै	-	-
सा	सा	रे॒	ग॒	म॑	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा
ग	-	ट	क	-	ग	यो	-	-	री	-	- ॥२॥

कीर्तन - २ राग-तोड़ी ताल- त्रिताल मात्रा - १६

अचमन और बीरीको पद

भोजन करजु उठे दोऊ भैया ॥
हस्त पखार शुद्ध अचमन कर, बीरी ले हु कन्हैया ॥१॥
मात यशोदा करत आरती, पुनि पुनि लेत बलैया ॥
परमानंददासकौ ठाकुर, ब्रजजन केलि करैया ॥२॥

मुखडा

३				×				२				०			
प	प	ग॒	म॑	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	रे॒	सा	सा
भो	-	ज	न	क	र	जु	उ	ठे	-	दो	ऊ	भै	-	या	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां	ध॒	ध॒	नी	गं॒	रें॒	रें॒	सां	सां
ह	-	स्त	प	खा	-	र	शु	-	द्ध	अ	च	म	न	क	र
नी	सां	नी	ध॒	म॑	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा	प	प	ग॒	म॑
बी	-	री	-	ले	-	हु	क	न्है	-	या	-	भो	-	ज	न ॥१॥

स्थायी

×				२				०				३			
प	प	ग॒	म॑	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	रे॒	सा	सा
मा	-	त	य	शो	-	दा	-	क	र	त	आ	-	र	ती	-
प	प	प	प	म॑	प	ग॒	म॑	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	नी	ध॒	प	प
पु	नि	पु	नि	ले	-	त	ब	लै	-	-	-	या	-	-	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	सां	सां	ध॒	ध॒	नी	गं॒	रें॒	रें॒	सां	सां
प	र	मा	-	नं	-	द	दा	-	स	कौ	-	ठा	-	कु	र
नी	सां	नी	ध॒	म॑	ध॒	म॑	ग॒	रे॒	ग॒	रे॒	सा	प	प	ग॒	म॑
ब्र	ज	ज	न	के	-	लि	क	रै	-	या	-	भो	-	ज	न ॥२॥

राग - खट

"ग,ध, दोऊ कर गाईये, दोऊ लगत निषाद।
संपूरन खट रागमें, ध,ग, कौ है संवाद॥"

राग खट एक प्राचीन राग है। छः रागोंकी छाया होनेसे इसे राग खट कहते हैं। (खट का अर्थ है छः)

इस रागके दो प्रकार प्रचारमें हैं। एक है भैरव थाटका राग खट और दूसरा है आसावरी थाटका राग खट। हम दोनों थाटके राग खट को सीखेंगे।

यह राग प्रातःकालीन है। इस रागके पद अधिकतर मंगला एवं शृंगार दर्शनमें गाये जाते हैं।

विषयवस्तुको ध्यानमें लेते हुए भी इन पदोंमें दिनके प्रथम प्रहर तक की लीलाका ही वर्णन मिलता है। उ.त. "आज उठ भोर नव कुंज कानन सखी.." इत्यादी। इस रागकी जाति संपूर्ण है।

भैरव थाटका राग खट

इस रागका वादी स्वर पंचम है और संवादी स्वर षड़ज है। इस रागका गायन समय प्रातःकाल है, अर्थात् मंगला दर्शन तक का है। इस रागमें दोनों ऋषभ, दोनों गांधार, धैवत और निषाद लगते हैं। केवल तीव्र मध्यमके अलावा इस रागमें सभी कोमल और शुद्ध स्वर लगते हैं।

जिन छः रागोंकी छाया पड़ती है, उनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

भैरव :- सागम, प, धप,

भैरवी :- गमनीधप, गम, रेरेसा
रामकली :- मपनीधप, गम, रेरेसा
विभास :- गपधप, सां, धप, गरेसा
देवगंधार :- रेंसांधम, पध, रेंसां
आसावरी :- धधधसां, रेंसां, नीधप

आरोह :- ऩीसा, गमप, ध̲प, ध̲नीसां
अवरोह :- रेंसां, नी̲ध̲प, ग̲म, रे̲रे̲सा
आलाप :- सागमप, ध̲प, मगरे̲सा, गमप, ध̲नीसां,
रें̲सां, गंमंरें̲सां, नीसांनी̲ध̲प, गमध̲प, गमरे̲रे̲सा

कीर्तन - १ राग-भैरव थाटका राग खट ताल- त्रिताल मात्रा - १६

रासकौ पद

निरतत श्यामाश्याम हेत ॥
मुकुट लटकन भृकुटी मटकन नारी मन सुख देत ॥१॥
कबहुँ चलत सुधंग गति लै कबहुँ उघटत बैन॥
लोल कुंडल गंड मंडित चपल नयनन सैन ॥२॥
श्यामकी छबि निरख नागर रही इकटक जोई॥
सूर प्रभु उर लाय लीनी प्रेम गुण कर पोई॥३॥

मुखडा

३				×				२				०			
म	म	ग̲	म	प	प	प	म	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां
नि	र	त	त	श्या	-	मा	-	श्या	-	-	म	हे	-	-	त
ध̲	सां	नी	ध̲	प	ध̲	म	म	नी̲	ध̲	प	म	ग	रे̲	सा	सा
नि	र	त	त	श्या	-	मा	-	श्या	-	-	म	हे	-	-	त ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
ध̲	ध̲	प	ध̲	नी	नी	सां	सां	ध̲	ध̲	नी	सां	रें	सां	ध̲	प
मु	कु	-	ट	ल	ट	क	न	भृ	कु	टी	-	म	ट	क	न
नी̲	नी̲	ध̲	म	प	ध̲	नी	सां	रें	सां	ध̲	प	म	म	ग̲	म
ना	-	री	-	म	न	सु	ख	दे	-	-	त	नि	र	त	त ॥१॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	सा	ग	म	प	प	म	प	ध̲	ध̲	म	ध̲	नी	नी	सां	सां
क	ब	हूँ	-	च	ल	-	त	सु	धं	-	ग	ग	ति	लै	-
नी	सां	नी̲	ध̲	प	ध̲	प	म	नी̲	ध̲	प	म	ग	रे̲	सा	सा
क	ब	हुँ	-	उ	घ	ट	त	बै	-	-	न	-	-	-	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
ध̲	ध̲	प	ध̲	नी	नी	सां	सां	ध̲	ध̲	नी	सां	रें	सां	ध̲	प
लो	-	-	ल	कुं	-	ड	ल	गं	-	-	ड	मं	-	डि	त
नी̲	नी̲	ध̲	म	प	ध̲	नी	सां	रें	सां	ध̲	प	म	म	ग̲	म
च	प	-	ल	न	य	न	न	सै	-	-	न	नि	र	त	त ॥२॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	सा	ग	म	प	प	म	प	ध̲	ध̲	म	ध	नी	नी	सां	सां
श्या	-	-	म	की	-	छ	बि	नि	-	र	ख	ना	-	ग	र
नी	सां	नी̲	ध̲	प	ध̲	प	म	नी̲	ध̲	प	म	ग	रे̲	सा	सा
र	ही	-	-	इ	क	ट	क	जो	-	-	ई	-	-	-	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
ध̲	ध̲	प	ध̲	नी	नी	सां	सां	ध̲	ध̲	नी	सां	रें	सां	ध̲	प
सू	-	-	र	प्र	भु	उ	र	ला	-	-	य	ली	-	नी	-
नी̲	नी̲	ध̲	म	प	ध̲	नी	सां	रें	सां	ध̲	प	म	म	ग̲	म
प्रे	-	-	म	गु	ण	क	र	पो	-	-	ई	नि	र	त	त ॥३॥

आसावरी थाट का राग खट

यह आसावरी थाटका राग है। इस रागका वादी स्वर धैवत है और संवादी स्वर गांधार है। इस रागमें दोनों निषाद, दोनों गांधार तथा दोनों ऋषभ का प्रयोग होता है। इस रागकी जाति संपूर्ण है। जिन छः रागोंकी छाया आती है वह इस प्रकार है।

राग रामकली :- गमनीधप
राग भैरवी :- गमगपमगरेसा
राग विभास :- धधसांधप
राग आसावरी :- धधनीसांरेंनीसांधधप
राग खमाच :- सा, गमप
राग केदार :- सा, मममप

कीर्तन - २ राग-आसावरी थाटका राग खट ताल - चरचरी मात्रा - १०

मंगला दर्शनकौ पद

आज नंदलाल मुख चंद नयनन निरख
परम मंगलभयौ भवन मेरे॥
कोटि कंदर्प लावण्य एकत्रकर
वारुं तबही जब नेकहेरे ॥१॥
सकल सुखसदन हरखित बदन
गोपवर प्रबलदल मदन संग घेरें॥
कहो कोऊ कैसेंहू नहीं सुधबुध बने
गदाधर मिश्र गिरिधरनटेरे ॥२॥

मुखड़ा

×		२			०		३		
सा	सा	ग	ग	म	प	प	प	प	म
आ	-	ज	नं	द	ला	-	ल	मु	ख
ध	ध	ध	ध	ध	सां	सां	ध	प	प
चं	-	द	न	य	न	न	नि	र	ख
ग	म	नी	ध	प	प	प	प	प	प
प	र	म	मं	-	ग	ल	भ	यौ	-
ग	म	ग	प	म	ग	रे	सा	सा	सा
भ	व	न	मे	-	रे	-	-	-	- ||

अन्तरा

×		२			०		३		
ध	ध	ध	ध	ध	सां	सां	सां	सां	सां
को	-	टि	कं	-	द	-	र्प	ला	-
ध	ध	सां	सां	रें	गं	रें	नी	ध	प
व	-	ण्य	ए	-	क	-	त्र	क	र
नी	नी	ध	ध	म	प	ध	नी	सां	सां
वा	-	रूं	त	ब	ही	-	ज	-	ब
रें	नी	ध	म	प	ग	मप	ग	रे	सा
ने	-	क	हे	-	रे	--	-	-	- ||१||

स्थायी

×		२			०		३		
सा	सा	म	म	म	प	प	प	प	म
स	क	ल	-	-	सु	ख	स	द	न
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सां	सां	ध॒	प	प
ह	र	खि	-	त	ब	द	न	-	-
ग॒	म	नी॒	ध॒	प	प	प	प	प	प
गो	-	प	व	र	प्र	ब	ल	द	ल
ग॒	म	ग॒	प	म	ग॒	रे॒	सा	सा	सा
म	द	न	सं	ग	घे	-	रे	-	- ||

अन्तरा

×		२			०		३		
ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	ध॒	सां	सां	सां	सां	सां
क	हो	को	-	उ	कै	-	सें	-	हूँ
ध॒	ध॒	सां	सां	रें	गं॒	रें	नी॒	ध॒	प
न	ही	सु	-	ध	बु	ध	ब	-	ने
नी॒	नी॒	ध॒	ध॒	म	प	ध॒	नी	सां	सां
ग	दा	ध	-	र	मि	-	श्र	गि	रि
रें	नी॒	ध॒	म	प	ग॒	मप	ग॒	रे॒	सा
ध	र	न	टे	-	रे	--	-	-	- ||२||

राग - सूहा

"म,स संवाद बनायकर काफी थाट लगाय।
दोऊ नी, ग सुद्ध ले, राग सूहा सुनाय।।"

राग सूहा एक ग्रंथोक्त राग है, जिसके 'देशीसूहा' 'सूहु' जैसे नाम प्राप्त हैं। पुष्टिभक्ति संगीत परंपरामें, प्रचारके सूहा रागसे, कुछ अलग सूहा रागका एक विशिष्ट प्रकार पाया जाता है। कई लोग इसे सूहा सुघराई के नामसे भी पहचानते हैं। राग सूहाका एक और प्रकार 'सूहा-बिलावल' भी प्रचारमें है।

हमारे सम्प्रदायमें जो सूहा राग प्रचलित है, वह काफी थाट से जन्य राग है। इस रागका वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर षड़ज है। इस रागमें दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है, शेष सभी स्वर शुद्ध है। धैवत स्वर वक्र है और अवरोहमें गांधार स्वर भी वक्र रहता है।

सूहा रागका गायन समय दिनका दूसरा प्रहर है। राग सूहा, राग नायकी-कान्हराका दिनका प्रतिरूप है। यह संपूर्ण जातिका राग है। "सांधनीप" इस प्रकार धैवतका अल्प प्रयोग किया जाता है।

यह ऋतुसंधिका राग है। सोरठकी तरह इसे भी वर्षागमनका राग माना जाता है। पुष्टिभक्तिसंगीतमें चतुर्मासके प्रारंभके समय, अर्थात् ज्येष्ठ शुक्ल १५से रथयात्रा तक, शृंगार दर्शनकी सेवा तक, इस रागमें पद गाये जाते हैं।

राग सूहा-बिलावल

आरोह :- ऩीसाग, म, प, मपधनी, सां
अवरोह :- सांधनीप, मप, गम, रेसा
मुख्यांग :- रेमरेसा, ऩी, ध़, ऩीसा, गमरेसा
आलाप :- सा, रेसा, मप, गमरेसा, मप, नीधनीसां,
धनीप, मप, गमरेसा, नीसांरेसां, धनीप, मप,
गमरेसा, ऩी ध़ऩीसा, रेसा

कीर्तन - १ राग-सूहा-बिलावल ताल- त्रिताल मात्रा - १६

श्रृंगार संमुख का पद

कमल मुख देखत तृप्त न होय।
यह सुख कहा दुहागिन जानै, रही निशाभर सोय ॥१॥
जों चकोर चाहत उडु राजे, चंद बदन रही जोय,
नेक अकोर देत नहिं राधा, चाहत पियही निचोय ॥२॥
उनतो अपनों सर्वस्व दीनों, एक प्राण वपु दोय,
भजन भेद न्यारौ परमानंद, जानत बिरला कोय ॥३॥

मुखडा

×				२				०				३			
नी̱̣	नी̱̣	नी̱̣	ध̣	नी̣	नी̣	सा	नी̣	रे	रे	सा	सा	रे	म	रे	सा
दे	-	ख	त	तृ	-	प	न	हो	-	य	क	म	ल	मु	ख ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
म	प	नी̱	ध	नी	नी	सां	सां	नी	नी	सां	सां	ध	नी̱	प	प
य	ह	सु	ख	क	हा	-	दु	हा	-	गि	न	जा	-	नै	-
म	रे	प	म	प	प	म	प	ग	म	रे	सा	रे	म	रे	सा
र	ही	-	नि	शा	-	भ	र	सो	-	य	क	म	ल	मु	ख ॥१॥

स्थायी

×				२				०				३			
सा	सा	म	रे	प	प	म	प	म	म	ग	म	रे	रे	सा	सा
जों	-	च	को	-	र	चा	-	ह	त	उ	ड	रा	-	जे	-
रे	म	रे	सा	नी̱̣	नी̱̣	म̣	प̣	नी̱̣	ध̣	नी̣	सा	रे	रे	सा	सा
चं	-	द	ब	द	न	र	ही	जो	-	-	-	-	-	-	य ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
म	प	नी	ध	नी	नी	सां	सां	नी	नी	सां	सां	ध	नी	प	प
ने	-	क	अ	को	-	र	दे	-	त	न	ही	रा	-	धा	-
म	रे	प	म	प	प	म	प	ग	म	रे	सा	रे	म	रे	सा
चा	-	ह	त	पि	य	ही	नि	चो	-	य	क	म	ल	मु	ख ॥२॥

स्थायी

×				२				०				३			
सासा	म	रे		प	प	म	प	म	म	ग	म	रे	रे	सा	सा
उ	न	तो	-	अ	प	नों	-	स	र	व	स्व	दी	-	नों	-
रे	म	रे	सा	नी़	नी़	म़	प़	नी़	ध़	ऩी	सा	रे	रे	सा	सा
ए	-	क	प्रा	-	ण	व	पु	दो	-	-	-	-	-	-	य ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
म	प	नी	ध	नी	नी	सां	सां	नी	नी	सां	सां	ध	नी	प	प
भ	ज	न	भे	-	द	न्या	-	रो	-	प	र	मा	-	नं	द
म	रे	प	म	प	प	म	प	ग	म	रे	सा	रे	म	रे	सा
जा	-	न	त	बि	र	ला	-	को	-	य	क	म	ल	मु	ख ॥३॥

राग सूहा-सुघराई

आरोह :- सारेमप, नीसां

अवरोह :- सांध, नीप, मप, गमरेसा

मुख्यांग :- सांध, नीप, मप, गमरेसा

आलाप :- सां, धनीप, मप, गमरेसा, नीधप, मपनीसां, नीधप, मरेसा, मपनीसारेंसां, नीध, मप, गमरेसा

कीर्तन - २ राग-सूहा सुघराई ताल - तेवरा मात्रा - ७

नयना श्यामसदा संग माने ॥
नैनन रस बरखत उर अंतर, तातें वे अधिकाने ॥१॥
देख देख याकी सुघराई, बहुनायकजू लुभाने ॥
परमानंददासको ठाकुर श्रीमुखतेंजु बखाने ॥२॥

मुखड़ा

२		३		×			२		३		×			
प	नी	म	प	नी	प	प	ग	म	रे	सा	रे	रे	सा	
न	य	ना	-	श्या	म	स	दा	-	सं	ग	मा	-	ने	॥

अन्तरा

२		३		×			२		३		×			
प	नी	म	प	मप	नीप	नी	सां	नी	सां	सां	नीसां	रें	रें	
न	य	ना	-	नै-	न-	न	र	स	ब	र	खत	उ	र	
नी	सां	नी	प	मम	म	म	प	प	म	प	गम	रे	सा	
अं	-	त	र	ता-	तें	-	वे	-	अ	धि	का-	-	ने	॥१॥

स्थायी

२		३		×			२		३		×		
प	नी	म	प	सा	म	रे	प	प	प	प	ग	ग	म
न	य	ना	-	दे	ख	दे	-	ख	या	-	की	सु	घ
रे	रे	सा	सा	रे	नी	सा	रे	म	नी	प	ग	ग	म
रा	-	ई	-	ब	हु	ना	य	क	जु	लु	भा	-	-
रे	रे	सा	सा										
ने	-	-	-										

अन्तरा

२		३		×			२		३		×		
				मप	नीप	नी	सां	नी	सां	सां	नीसां	रें	रें
				पर	मा-	-	नं	-	द	दा	--	स	को
नी	सां	नी	प	मम	म	म	प	प	म	प	गम	रे	सा
ठा	-	कु	र	श्री-	मु	ख	ते	-	जु	ब	खा-	-	ने॥२॥

राग - सारंग

राग सारंगका उल्लेख ''हृदयप्रकाश'' एवं ''हृदयकौतुक'' ग्रंथोंमें पाया जाता है। इसलिए यह राग अतिप्राचीन और ग्रंथोक्त राग है, यह निःसंदेह कहा जा सकता है। यह राग अतिलोकप्रिय है।

शास्त्रीय संगीतमें ''शुद्ध सारंग'' नामक राग प्रसिद्ध है वह पुष्टिभक्ति संगीतमें सारंग नामसे पृथक है। मतलब यह शुद्ध सारंग राग हमारी परंपराका नहीं है। हमारे सम्प्रदायमें अष्टसखाओंने जो सारंग राग गाया है, उसे कई गुणीजन वृन्दावनी सारंगके नामसे पहचानते है, जिसका उल्लेख अनेक ग्रंथोमें पाया जाता है। अतः हमारे सम्प्रदायमें सिर्फ सारंग राग कहनेसे वृन्दावनी सारंग ही समझा जाता है। हमारे सम्प्रदायमें ''सारंग के पद'' के शीर्षक अंतर्गत ही, सारंगके सभी प्रकारों को समाविष्ट किया गया है।

सारंग रागके वृन्दावनी सारंग के अलावा (१) शुद्ध सारंग (२) नूर सारंग (३) गौड़ सारंग (४) सामंत सारंग (५) मधुमाद सारंग और (६) बड़हंस सारंग जैसे प्रकार प्रचलित है। यह राग शीत प्रकृति का होनेसे उष्णकालमें गाया जाता है। राग सारंग और उसके सभी प्रकार उष्णकालमें विशेष रूपमें गाये जाते हैं।

राग वृन्दावनी सारंग का अभ्यास हमने ***''कीर्तन प्रबोध''*** पुस्तक में पृष्ट *नं.* ३० पर किया है।

राग - शुद्ध सारंग

यह राग सारंग रागकाही एक प्रकार है। इस रागका उल्लेख 'हृदय प्रकाश' एवं 'हृदयकौतुक' ग्रंथोंमें पाया जाता है। शुद्ध सारंगमें धैवत स्वर लगता है, इसलिए यह राग अपना अलग अस्तित्व रखता है। इस रागमें गांधार स्वर वर्जित है, इसलिए यह राग षाड़व जातिका है। इस रागका थाट काफी है। इस रागका वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम हैं। इस रागमें दोनों मध्यमका प्रयोग किया जाता है। इस रागका गायन समय दिनका दूसरा प्रहर है।

हमारे सम्प्रदायमें इस रागमें कुंजके पद अधिकतर पाये जाते हैं।

आरोह :- सा, रेम॑प, नी सां

अवरोह :- सां नी प, म॑प, धप, मरेसा

मुख्यांग :- सा, रेमरे, प, म॑पनीप, म॑प, मरेसा

आलाप :- ऩीसा, मरे, म॑प मरेसा, रेम॑पनी,
सां नीसांरेंसां, नीसांरेंम॑ंपं, मंरेंसा,
नीधप, म॑प, मरेऩीसा

कीर्तन - १ राग-शुद्ध सारंग ताल- एकताल मात्रा - १२

कुंजके भावकौ पद

बैठे हरि राधा संग, कुंज भवन अपने रंग
कर मुरली अधर धरें, सारंग मुख गाई ॥
मोहन अति ही सुजान, परम चतुर गुणनिधान
जान बूझ एक तान, चूककें बजाई ॥१॥
प्यारी जब गह्यो बीन, सकल कला गुण प्रवीन
अति नवीन रूप सहित, वही तान सुनाई ॥
वल्लभगिरिधरनलाल, रीझ दई अंकमाल
कहत भलें भलें लाल, सुन्दर सुखदाई ॥२॥

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
म॑	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा
बै	-	ठे	ह	-	रि	रा	-	धा	सं	-	ग
ऩी	प़	ऩी	सा	सा	सा	रे	म	रे	सा	ऩी	सा
कुं	-	ज	भ	व	न	अ	प	ने	रं	-	ग
ऩी	सा	म	रे	म॑	म॑	प	प	म॑	प	प	प
क	र	मु	र	ली	-	अ	ध	र	ध	-	रे
रे	म॑	प	नी	सां	नी	प	म॑	प	म	सा	रे
सा	-	रं	ग	मु	ख	गा	-	-	ई	-	- ॥

अन्तरा

×		०		२		०		३		४		
रे	म॑	प	नी	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां	
मो	-	ह	न	अ	ति	ही	-	सु	जा	-	न	
प	नी	नी	सां	रें	रें	नी	सां	नी	ध	प	प	
प	र	म	च	तु	र	गु	ण	नि	धा	-	न	
म॑	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
जा	-	न	बू	-	झ	ए	-	क	ता	-	न	
ऩी	सा	रे	म॑	प	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
चू	-	क	के	-	ब	जा	-	-	ई	-	-	॥१॥

संचारी

×		०		२		०		३		४		
ऩी	सा	म	रे	म॑	म॑	प	प	म॑	प	प	प	
प्या	-	री	-	ज	ब	ग	ह्यो	-	बी	-	न	
म॑	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
स	क	ल	क	ला	-	गु	ण	प्र	वी	-	न	
ऩी	प़	ऩी	सा	ऩी	सा	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
अ	ति	न	वी	-	न	रू	-	प	स	हि	त	
रे	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
व	ही	-	ता	न	सु	ना	-	-	ई	-	-	॥

आभोग

×		०		२		०		३		४		
रे	म॑	प	नी	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां	
व	-	ल्ल	भ	गि	रि	ध	र	न	ला	-	ल	
प	नी	नी	सां	रें	रें	नी	सां	नी	ध	प	प	
री	-	झ	द	ई	-	अं	-	क	मा	-	ल	
म॑	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
क	ह	त	भ	लें	-	भ	लें	-	ला	-	ल	
रे	म॑	प	नी	सां	नी	प	म॑	प	म	सा	रे	
सु	-	न्द	र	सु	ख	दा	-	-	ई	-	-	॥२॥

राग - मधुमाद सारंग

राग मधुमाद सारंग एक प्राचीन राग है। इस रागके 'मधमाद सारंग' 'मध्यमादिसारंग' 'मधु-माधव सारंग' 'मध्यमावती' जैसे अनेक नाम पाये जाते हैं। 'संगीत-रत्नाकर' 'रागतरंगिणी', 'हृदयकौतुक' जैसे ग्रंथोमें इस रागका उल्लेख प्राप्त होता है। ग्रीष्मऋतुमें गाया जानेवाला यह राग, सारंग रागका ही एक प्रकार है।

अन्य कई रागोंकी तरह, इस रागकी जाति के बारेमें मतांतर है। भक्तिसंगीत के कीर्तनसंग्रहोंमें यह राग प्राप्य है। यह काफी थाटका राग है। गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य होने से यह राग औड़व जातिका राग है। इस रागका वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। इस रागका गायन समय मध्यान्ह है । पूर्वांगमें 'प-रे' और उत्तरांगमें 'नीप' की संगति रागको अधिक रोचक बनाती है। इस रागमें निषाद स्वर कोमल है, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं।

सम्प्रदायमें राजभोग समयके दर्शनमें यह राग गाया जाता है। जमुनातट, खसखाना, उसीर रावटी, फूलमंडली तथा फूल सिंगार के पद इस रागमें पाये जाते हैं।

आरोह :- नीसा, रेमप, नीसां
अवरोह :- सांनीप, मरे, सा
मुख्यांग :- रेम, पनीप, मरे, नीसा
आलाप :- नीसारेसा, रेमप, मपनीप, मपनीसां,
नीसारेंसां, रेंमरेंसां, नीसांनीप, मपमरे, नीसारेसा

कीर्तन - १ राग-मधुमाद सारंग ताल- त्रिताल मात्रा - १६

राजभोग सन्मुखकौ पद

श्री गिरिधर देखेही सुख होय ॥
नयनवंतको यही परमफल यही विधि मोहे त्रैलोय ॥१॥
महा मरकत मणि नील अंबुजको रूप लियौ है निचोय ॥
कृष्णदासनिनाथ नवरंग मिले है विरह दुःख खोय ॥२॥

मुखड़ा

०				३				×				२			
सां	सां	नी	प	म	रे	नी	सा	रे	रे	नी	सा	रे	म	प	प
दे	-	खे	-	ही	-	सु	ख	हो	-	य	श्री	गि	रि	ध	र ॥

अन्तरा

०				३				×				२			
म	प	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	सां	नी	प
न	य	न	वं	-	त	को	-	य	ही	-	प	र	म	फ	ल
प	रें	रें	रें	नी	सां	नी	प	रे	म	नी	प	म	रे	नि	सा
य	ही	वि	धि	मो	-	हे	त्रै	लो	-	-	य	गि	रि	ध	र ॥१॥

स्थायी

०				३				×				२			
रे	रे	म	म	प	प	प	प	रे	म	नी	प	म	रे	नी	सा
म	हा	म	र	क	त	म	णि	नी	-	ल	अं	बु	ज	को	-
रे	म	नी	प	म	रे	नी	सा	रे	रे	नी	सा	रे	म	प	प
रू	-	प	लि	यौ	-	हैं	नि	चो	-	-	-	-	-	-	य ‖

अन्तरा

०				३				×				२			
म	प	सां	नी	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	सां	नी	प
कृ	-	-	ष्ण	दा	-	स	नि	ना	-	-	थ	न	व	रं	ग
प	रें	रें	रें	नी	सां	नी	प	रे	म	नी	प	म	रे	नि	सा
मि	ले	हैं	वि	र	ह	दुः	ख	खो	-	-	य	गि	रि	ध	र ‖२‖

बोल आलाप

०				३				×				२			
म	प	सां	नी	सां	सां	सां	रें	नी	सां	नी	प	म	प	नी	सां
दे	-	खे	-	ही	-	सु	ख	हो	-	य	श्री	गि	रि	ध	र
रें	रें	रें	रें	मं	रें	सां	रें	नी	सां	नी	प	रे	रे	म	प
दे	-	खे	-	ही	-	सु	ख	हो	-	य	श्री	गि	रि	ध	र

राग - सामंत सारंग

राग सामंत सारंगकी गणना अप्रचलित रागोंमें होती है। विद्वानों का मानना है कि यह राग मल्हार और सारंग रागके मिश्रणसे उत्पन्न हुआ है। कई संगीतज्ञ इसकी उत्पत्ति राग सोरठ और सारंगके मिलापसे मानते हैं। इस रागको ''सावंत सारंग, सामंत सारंग'' इत्यादि जैसे नामोंसेभी पहचाना जाता है किन्तु हमारे ग्रंथोंमें अधिकतर ''सामंत सारंग'' नाम ही प्रचलित है। जैसा नाम है, वैसेही इस रागके गुण भी है। अपने सामंती गुणोंके कारण इस रागको धीमी लयसे गानेसे यह राग अधिक प्रभावशाली लगता है।

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। इस रागका वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। इस रागके आरोहमें गांधार स्वर वर्जित है इसलिए इस रागकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण है। केवल अवरोहमें मध्यम से ऋषभ की मींडमें इसका आभास होता है। धैवत स्वरका अवरोहमें नीधप और धनीप, इस प्रकार प्रयोग किया जाता है।

शास्त्रीय संगीतके गायक-वादकोंमें इस रागका प्रचार बहुत कम है, मगर हमारे पुष्टिमार्गके वैष्णव मंदिरोंमें इस रागको गानेकी प्रथा है। अष्टछाप अष्टसखाओंके समयसे इस रागकी परंपरा चली आयी है। अष्टछाप कविओंमें भी सूरदासजी, गोविन्दस्वामी, कृष्णदासजी और छीतस्वामीकी रचनाओंमें इस रागके पद पाये जाते हैं। इनके बाद तानसेनजी, चतुरबिहारीजी, ब्रजपतिजी आदि महानुभावोंने इस रागमें अपने पद गाये हैं।

हमारे सम्प्रदायमें इस रागको बसंत और ग्रीष्मऋतुमें गानेकी प्रथा आजभी चल रही है। होरी खेलके दिनोंमें इस रागमें धमारमें पदगान किया जाता है।

आरोह :- सा, रेमप, नी सां
अवरोह :- रेंसां, नीप, मप, नीधप, मगरे, गरेऩीसा
मुख्यांग :- नीधप, मरे, ऩीसा, मगरे, गरेऩीसा
आलाप :- सा, ऩीसा, रेमप, मप, नीधप, मप, नीसां,
रेंसां, नीधप, मप, मगरे, गरेऩीसा

कीर्तन - १ राग-सामंत सारंग ताल- धमार मात्रा - १४

राजभोग सन्मुखकौ पद

अनत न जैये हो पिय रहिये मेरे ही महल ।।
जोई जोई कहोगे, सोई सोई करूँगी टहल ।।१।।
शैया सामग्री बसन आभूषण सब बिध कर राखोंगी पहल ।।
चतुरबिहारी गिरधारी पियाकी रावरी यही सहेल ।।२।।

स्थायी

३				×					२		०		
म	रे	ऩी	सा	म	ग	रे	ग	रे	ऩी	सा	-	-	-
अ	न	त	न	जै	-	ये	हो	-	पि	य	-	-	-
ध	ध	नी	प	प	ध	ध	नी	नी	सां	नी	सां	नीध	प
र	हि	ये	-	मे	रे	-	ही	-	-	म	ह	--	ल

अन्तरा

×					२		०			३			
मप	नीप	नी	सां	नी	सां	सां	नी	सां	रे	नी	ध	प	प
जोई	जो-	ई	क	हो	गे	-	सो	-	ई	सो	-	ई	-
नी	ध	प	म	रे	ऩी	सा	म	ग	रे	म	रे	ऩी	सा
क	रूँ	-	गी	-	-	ट	ह	-	ल	अ	न	त	न ॥१॥

संचारी

×					२		०			३				
मरे	म	म	प	म	प	प	रेम	पनी	धप	म	रे	ऩी	सा	
शै-	या	सा	म	-	ग्री	-	बस	न-	आ-	भू	-	ष	ण	
नीनी	धध	पप	म	रे	ऩी	सा	म	ग	रे	म	रे	ऩी	सा	
सब	बिध	कर	रा	खों	गी	प	ह	-	ल	-	-	-	-	॥

आभोग

×					२		०			३			
मप	नीप	नी	सां	नी	सां	सां	नी	सां	रें	नी	ध	प	प
चतु	र-	बि	हा	री	गि	र	धा	-	री	पि	या	की	-
नी	ध	प	म	रे	ऩी	सा	म	ग	रे	म	रे	ऩी	सा
रा	-	व	रि	य	ही	स	हे	-	ल	अ	न	त	न ॥२॥

राग - नूर सारंग

भारतीय संगीतके घरानोमें केवल अष्टछाप संगीत प्रणालिमें ''नूर सारंग'' का प्रचार स्पष्ट रूपसे दिखाई देता है। नूर सारंग को कुछ गुणीजन ''लूहर'' सारंग भी कहते हैं।

नूर सारंगमें मंद्र और मध्य सप्तकमें विस्तार किया जाता है। यानी नीचेके स्वरोंमेंही इस रागको गाया जाता है। नीचेके स्वरोंसे गानेमें अधिक श्रम होता है, इसलिए इस रागके मध्यम स्वरको ''सा'' मानकर गान किया जाता है। मतलब, यह राग मध्यम स्वरसे गाया जाता है। यह इस रागकी एक विशिष्टता भी है। इससे गानेमें सरलता रहती है।

इस रागका थाट काफी है। कोमल गांधार और कोमल निषादका प्रयोग अवरोहमें ही किया जाता है। इसका वादी स्वर 'रे' और संवादी स्वर 'प' है। आरोहमें कभी-कभी तीव्र मध्यमका प्रयोग विवादीके रूपमें किया जाता है।

आरोह :- ऩीसा, रे, मपनिप, नीसां
अवरोह :- सां, नीप, मगरे, गरे, ऩीसा
मुख्यांग :- सा, रेसा, नीप़, म़प़, ऩीसा, रे, गरे, सा
स्वर विस्तार :- सा, रेसा, नीप़, म़प़, ऩीसा, रे, गरे,
मगरे, सारे, ऩीसारे, मप, नीप, नीसां, नीरें,
सारें, नीधप, मगरे, गरे, ऩीसा

कीर्तन - १ राग-नूर सारंग ताल- त्रिताल मात्रा - १६

इस रागमें मध्यम को सा मानकर गाते है, मगर स्वर लीपि सीखने में सरलता के उद्देश्य से षड़ज से ही दे रहे हैं।

आज दधि कंचन मोल लई ॥
जा दधिकों ब्रह्मादिक इच्छत गोपन बाँट दई ॥१॥
दधिके पलटे दुलरी दीनी जसुमति खबर भई ॥
परमानंददासको ठाकुर बरबस प्रीत नई ॥२॥

मुखड़ा

२				०				३				×				
म	धप	म	ग	-	सा	ग	ग	ग	म	प	म	नी	ध	प	प	
आ	ज-	द	धि	-	कं	च	न	मो	-	ल	ल	ई	-	-	-	॥
-	-	-	-	-	नी	नी	नी	प	नी	सां	रें	नी	ध	प	प	
-	-	-	-		कं	च	न	मो	-	ल	ल	ई	-	-	-	

अन्तरा

०				३				×				२			
प	प	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नी	नी	सां	सां	नीरें	सारें	नीध	प
जा	-	द	धि	कों	-	ब्र	ह	मा	-	दि	क	ई-	--	च्छ-	त
प	प	नी	नी	सांगं	रेंगं	सारें	सां	नी	नी	सां	सां	नीरें	सारें	नीध	प
जा	-	द	धि	कों-	--	ब्र-	ह	मा	-	दि	क	ई-	--	च्छ-	त
गं	गं	गं	रें	सां	रें	नी	नी	ध	प	प	प	म	धप	म	ग
गो	-	प	न	बाँ	-	ट	द	ई	-	-	-	आ	ज-	द	धि

॥१॥

स्थायी

०				३				×				२			
ग	ग	ग	ग	म	म	म	म	ग	ग	म	प	ग	रे	सा	सा
द	धि	के	-	प	ल	टे	-	दु	ल	री	-	दी	-	नी	-
प	प	म	ग	ग	म	प	म	नी	ध	प	प	पनी	सांनी	धप	प
ज	सु	म	ति	ख	ब	र	भ	ई	-	-	-	--	--	--	-

अन्तरा

०				३				×				२			
प	प	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नी	नी	सां	सां	नीरें	सारें	नीध	प
प	र	मा	-	नं	-	द	दा	-	स	को	-	ठा-	--	कु-	र
प	प	नी	नी	सांगं	रेंग	सारें	सां	नी	नी	सां	सां	नीरें	सारें	नीध	प
प	र	मा	-	नं-	--	द-	दा	-	स	को	-	ठा-	--	कु-	र
गं	गं	गं	रें	सां	रें	नी	नी	ध	प	प	प	म	धप	म	ग
ब	र	ब	स	प्री	-	त	न	ई	-	-	-	आ	ज-	द	धि

॥२॥

इसी स्वरलीपि पर ''ग्वालिनि मीठी तेरी छाछ'' और ''आज दधि मीठो मदन गुपाल'' जैसे पद भी बजाये जाते हैं।

राग - गौड़ सारंग

हमारी संगीत परंपरामें और हमारी पुष्टिपरंपरा दोनों में, गौड़ सारंग रागको कल्याण थाट का ही माना जाता है। पंडित भातखंडेजीने भी इसी थाट को प्रमाण माना है क्योंकि इस रागमें कल्याणका स्वरूप दिखाई देता है।

पुष्टिसंप्रदायकी सेवा प्रणालिमें गौड़ सारंग रागकेपदोंको ज्येष्ठ शुक्ल पूर्णिमासे, आषाढ

शुक्ल दूज तक राजभोग समय तक गानेकी प्रथा आजभी प्रचलित है। रथयात्रासे वर्षाऋतुका आरंभ होता है ऐसा हमारे सम्प्रदायमें माना जाता है। उस दिनसे मल्हार और मल्हार के प्रकारोंमें पदगान किया जाता है। अत: अष्टछाप परंपरानुसार ''गौड़-सारंग'' रागको वर्षाऋतुके आगमनका संधिवाचक राग कहा जाता है।

इस रागका चलन वक्र है। इस रागमें सभी स्वर, लगनेसे इसकी जाति संपूर्ण है। इस रागमें दोनों मध्यमका प्रयोग होता है। तीव्र मध्यम केवल पंचमकी संगतिसे ही लिया जाता है। जैसे :- ''गरेमग, पमप।'' अवरोहमें गांधार और निषाद स्वर वक्र है। वादी स्वर 'ग' और संवादी स्वर 'ध' है। भारतीय संगीतमें इसका गायन समय दिनका द्वितीय प्रहर है। 'मपधमप, मग, रेगरेमग, परेसा। इस प्रकार तीव्र मध्यमका प्रयोग करनेसे रागका वैचित्र्य बढ़ता है और इसीसे रागकी पहचानभी होती है।

आरोह :- सा, गरेमग, पमधप, नीधसां
अवरोह :- सांधनीप, धमपग, मरे, प रे सा
मुख्यांग :- सा, गरेमग, प रे सा
आलाप :- सा, रेगरे, मग, मप, मग, मपधनीसां,
सां ध, नीप, मप, मग, प रे सा, मप धनीसां, रेंसां,
गंमंरेंसां, नीसांनीधप, मप, मग, रेगरे, मग, प रे सा ।

कीर्तन - १ राग - गौड़ सारंग ताल - त्रिताल मात्रा - १६

श्रीराधाष्टमी की बधाई कौ पद

ब्रजमें रतन राधिका गोरी ।।
हरलीनी वृषभान भवनते नंद सुवनकी जोरी ।।१।।
ग्रथित कुसुम अलकावली की छबि अरू सुदेश कचडोरी ।।
पिय भुज कंध धरें यों राजत ज्यों दामिनी घन सौंरी ।।२।।
कालिंदी तट केलि कुलाहल सघन कुंज बन खोरी ।।
कृष्णदासप्रभु गिरिधर नागर नागरि नवल किशोरी ।।३।।

मुखड़ा

२	०	३	×	
रे ग मध प	ग म रे सा	सा रे ऩी सा	ग रे म ग	
ब्र ज में- -	र त न रा	- धि का -	गो - री -	॥

अन्तरा

०	२	×	२
प प सां सां	सां सां सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
ह र ली -	नी - वृ ष	भा - न भ	व न ते -
प प सां सां	रें सं सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
ह र ली -	नी - वृ ष	भा - न भ	व न ते -
म म म ग	प प सां रें	नी सां ध प	रे ग मध प
नं - द सु	व न की -	जो - री -	ब्र ज में- -

|||१||

स्थायी

०	३	×	२	
सा सा म ग	प प प प	मं प ध नी	मं प म ग	
ग्र थि त कु	सु म अ ल	का - व ली	की - छ बि	
ग म रे सा	सा रे ऩी सा	ग रे म ग	रे ग मध प	
अ रू सु दे	- श क च	डो - - -	री - -- -	॥

अन्तरा

०	३	×	२
प प सां सां	सां सां सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
पि य भु ज	कं - ध ध	रें - यों -	रा - - ज त
म म म ग	प प सां रें	नी सां ध प	रे ग मध प
ज्यों - दा -	मि नी घ न	सौं - री -	ब्र ज में- -

॥२॥

स्थायी

०	३	×	२
सा सा म ग	प प प प	म॑ प ध नी	म॑ - प म ग
का - लिं -	दी - त ट	के - लि कु	ला - ह ल
ग म रे सा	सा रे ऩी सा	ग रे म ग	रे ग मध प
स घ न कुं	- ज ब न	खो - - -	री - -- - ॥

अन्तरा

०	३	×	२
प प सां सां	सां सां सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
कृ - ष्ण दा	- स प्र भु	गि रि ध र	ना - ग र
प प सां सां	रें सां सां सां	ध नी सां रें	नी सां ध प
कृ - ष्ण दा	- स प्र भु	गि रि ध र	ना - ग र
म म म ग	प प सां रें	नी सां ध प	रे ग मध प
ना - ग री	न व ल कि	शो - री -	ब्र ज में- -

॥३॥

राग - बडहँस सारंग

राग सारंगके अप्रचलित प्रकारोंमें से एक प्रकार है राग बड़हँस सारंग। इस रागका थाट खमाज है। राग वृन्दावनी सारंगसे यह राग बहुत मिलता है। इस रागका वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर पंचम है। गांधार और धैवत स्वर वर्ज्य होनेसे इस रागकी जाति औड़व है। इस रागमें मध्यम स्वर मुक्त है, यानि मध्यम स्वरका अधिक मात्रामें प्रयोग किया जाता है। इस रागका गायन समय मध्यान्ह होनेसे सम्प्रदायमें उष्णकालमें राजभोग समयमें यह राग गाया जाता है।

आरोह :- सा, रेम, मप, नीप सां

अवरोह :- सां, नीप, मप, म, रेसा

कीर्तन - १ राग - बड़हँस सारंग ताल- त्रिताल मात्रा - १६

राजभोग सन्मुखकौ पद

देखो ढरकन नवरंग पागकी ॥
वामभाग वृषभान लाडिली चितवन अति अनुरागकी ॥१॥
सुखसागर गिरिधरन छबीलो मूरति परम सुहागकी ॥
मदनमोहन राधेजूकी जोरी गोपालदासके भागकी ॥२॥

स्थायी

०				३				×				२			
सां	सां	नी	प	म	रे	सा	रे	म	म	म	म	म	रे	म	प
दे	खो	ढ	र	क	न	न	व	रं	-	ग	पा	-	ग	की	- ॥

अन्तरा

३				×				२				०			
म	प	नी	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	सां	नी	प
वा	-	म	भा	-	ग	वृ	ष	भा	-	न	ला	-	डि	ली	-
नी	सां	रें	मं	रें	सां	नी	सां	नी	नी	प	प	सां	सां	नी	प
चि	त	व	न	अ	ति	अ	नु	रा	ग	की	-	दे	खो	ढ	र ॥१॥

स्थायी

३				×				२				०			
म	रे	म	म	प	प	प	प	नी̲	नी̲	प	म	रे	सा	ऩी	सा
सु	ख	सा	-	ग	र	गि	रि	ध	र	न	छ	बी	-	लो	-
नी̲	नी̲	प	म	रे	रे	ऩी	सा	रे	रे	म	म	प	म	प	प
मू	-	र	ति	प	र	म	सु	हा	-	-	ग	की	-	-	- ॥

अन्तरा

३				×				२				०			
म	प	नी̲	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	सां	नी̲	प
म	द	न	मो	ह	न	रा	-	धे	-	जू	की	जो	-	री	-
नी	सां	रें	मं	रें	सां	नी	सां	नी̲	नी̲	प	प	सां	सां	नी̲	प
गो	पा	ल	दा	-	स	के	-	भा	ग	की	-	दे	खो	ढ	र ॥२॥

राग – सारंग माला कुंजकौ पद

राग- मधुमाद सारंग ताल- त्रिताल मात्रा - १६

आज मोये आगम अंगमें जनायो ॥

सोंधे सानि अरगजा चंदन आंगन भवन लिपायो ॥१॥

राग- गौड़ सारंग ताल- धमार मात्रा - १४

आगम आवन जान प्रीतमको गोपीजनमिलि मंगल गायो ॥

आनंद उर न समाय सखी नव साज सिंगार बनायो ॥२॥

राग- शुद्ध सारंग ताल- चौताल मात्रा - १२

तनसुख पाग पिछोरा झीनों केसर रंग रंगायो ॥

मुक्ताके आभूषण गुहि, मन, पहिरावन हुलसायो ॥३॥

राग- वृन्दावनी सारंग ताल- झपताल मात्रा - १०

पंखा नव उसीर प्रीतमको नित राखोंगी छिरकायो ॥
ग्रीष्मऋतु सुख देन नाथको यह औसर चल आयो ॥४॥

राग- सामंत सारंग ताल- आड़ाचौताल मात्रा - १४

आवेंगे हीमान आज हरि भाग्यते बड़े ही दिनन आयो ॥
कुंभनदास नव नेह नई ऋतु आगम सुजस सुनायो ॥५॥

राग- मधुमाद सारंग ताल- त्रिताल मात्रा - १६

मुखड़ा

३				×				२				०			
रे	रे	म	प	सां	सां	नी	प	म	रे	नी़	सा	रे	रे	सा	सा
आ	ज	मो	ये	आ	-	ग	म	अं	ग	में	ज	ना	-	यो	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
म	प	नीप	नी	सां	सां	सां	सां	नी	सां	रें	सां	नी	सां	नी	प
सों	-	धे-	-	सा	-	नि	अ	र	ग	जा	-	चं	-	द	न
प	रें	रें	रें	नी	नी	सां	रें	नी	सां	नी	प	रे	रे	म	प
आं	-	ग	न	भ	व	न	लि	पा	-	यो	-	आ	ज	मो	ये ॥१॥

राग- गौड़ सारंग ताल- धमार मात्रा - १४

मुखड़ा

×					२		०			३			
गम	रे	सा	सा	रे	नी़	सा	गग	ग	रे	म	म	ग	ग
आ-	ग	म	आ	-	व	न	ज़ा-	न	प्री	त	म	को	-

पप	प	प	सां	सां	ध	प	मग	रे	ग	म	प	म	ग
गो-	पी	-	ज	न	मि	लि	मं-	ग	ल	गा	-	यो	- ||

अन्तरा

×					२		०			३			
पप	प	प	सां	सां	सां	सां	धनी	सां	रें	नी	सां	ध	प
आ-	नं	द	उ	र	न	स	मा-	य	स	खी	-	न	व
मम	म	ग	प	प	सां	रें	नीसां	ध	प	रे	रे	म	प
सा-	ज	सिं	गा	-	र	ब	ना-	-	यो	आ	ज	मो	ये ||२||

राग- शुद्ध सारंग	ताल- चौताल	मात्रा - १२

स्थायी

×		०		२		०		३		४	
म॑	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा
त	-	न	सु	-	ख	पा	-	-	ग	-	पि
ऩी	ऩी	प़	ऩी	सा	सा	रे	म	रे	सा	ऩी	सा
छो	-	-	रा	-	-	झी	-	-	नों	-	-
ऩि	ऩि	सा	म	रे	म॑	प	प	म॑	प	प	प
के	-	-	स	-	र	रं	-	-	ग	-	रं
रे	म॑	प	नी	सां	नी	प	म॑	प	म	सा	रे
गा	-	-	-	-	-	यो-	-	-	-	-	- ||

अन्तरा

×		०		२		०		३		४		
रे	रे	म॑	प	नी	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां	
मु	-	-	क्ता	-	-	के	-	-	आ	-	-	
प	नी	नी	सां	रें	रें	नी	सां	नी	प	म॑	प	
भू	-	-	ष	-	ण	गु	-	-	ही	-	-	
म॑	म॑	म॑	प	म॑	प	रे	म	रे	सा	ऩी	सा	
म	-	न	प	-	हि	रा	-	-	व	-	न	
रे	म॑	प	नी	सां	नी	प	म॑	प	रेम॑	पनी	सां	
हु	-	ल	सा	-	-	यो	-	-	-‿-	-‿-	-	॥१॥

राग- वृन्दावनी सारंग   ताल- झपताल   मात्रा - १०

स्थायी

×		२			०		३			
नी	नी	सां	सां	रें	नी	सां	नी̲	म	प	
पं	-	खा	-	-	न	-	व	-	उ	
म	रे	म	नी̲	प	म	रे	सा	ऩी	सा	
सी	र	प्री	-	-	त	म	को	-	-	
ऩी	सा	म	रे	म	प	प	नी̲	म	प	
नि	त	रा	-	-	खों	-	गी	-	-	
प	रें	रें	सां	रें	नी	सां	नी̲	म	प	
छि	-	र	-	-	का	-	यो	-	-	॥

अन्तरा

×		२			०		३		
म	प	नी	प	नी	सां	नी	सां	सां	सां
ग्री	-	ष्म	-	ऋ	तु	-	सु	-	ख
नी	सां	रें	रें	सां	नी	सां	नी	प	प
दे	-	न	-	-	ना	थ	को	-	-
म	रे	म	म	म	प	प	नी	म	प
य	ह	औ	-	-	स	-	र	-	-
प	रें	रें	सां	रें	नी	सां	नी	म	प
च	-	ल	-	-	आ	-	यो	-	- ||४||

राग- सामंत सारंग ताल- आड़ाचौताल मात्रा - ७

स्थायी

३		४		×	२		३		४		×	२	
म	रे	ऩी	सा	म	ग	रे	ग	रे	ऩी	सा	-	-	-
आ	वें	गे	ही	मा	-	न	आ	ज	ह	रि	-	-	-
ध	नी	प	प	ध	नीसां	नी	सां	नीध	प	म	रे	ऩी	सा
भा	-	ग्य	ते	ब	डे-	-	दि	न-	न	आ	-	यो	- ||

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
मप	नीप	नी	सां	नी	सां	सां	नी	सां	रें	नी	ध	प	प
कुं-	भ-	न	दा	स	न	व	ने	ह	न	ई	-	ऋ	तु
नी	ध	प	म	रे	ऩी	सा	म	ग	रे	रे	रे	म	प
आ	ग	म	सु	ज	स	सु	ना	-	यो	आ	ज	मो	ये ||५||

राग - सोरठ

‘‘वादी रे, संवादी ध, दोउ निषाद लग जाँय।
औड़व संपूरन सुघर, राग सोरठ गाँय ॥’’

राग सोरठ प्राचीन और ग्रंथोक्त है। आजभी सौराष्ट्रमें सोरठ नामक प्रदेश प्रसिद्ध है। इस रागका नाम इसी प्रदेशसे संबंधित है।

यह्र राग खमाज थाटसे उत्पन्न होता है। शास्त्रीय संगीतमें इस रागसे मिलता-झुलता राग देश प्रचारमें हैं। इस रागका वादी स्वर ऋषभ और संवादी स्वर धैवत है। सोरठ रागके आरोहमें गांधार और धैवत स्वर वर्जित हैं, इसलिए इस रागकी जाति औड़व-संपूर्ण मानी जाती है। इस रागमें ‘रे’ पर बल दिया जाता है और दोनों निषादका प्रयोग होता है। अवरोहमें कोमल निषाद इस रागकी रंजकता बढा देता है।

इस रागका गायन समय रात्रिका दूसरा प्रहर है। हमारे पुष्टिसम्प्रदायमें इस रागको वर्षाकालसे पहले अर्थात् जेष्ठ वद एकम से रथयात्रा तक संध्यार्तिमें एवं भोगमें गाया जाता है, जो ‘‘सोरठ के पद’’, इस शीर्षकसे प्रसिद्ध है। तदुपरांत इसी रागमें ‘‘होरी’’ और ‘‘हिंडोला’’के पदभी प्राप्त हैं। राग सूहाकी तरह, राग सोरठ भी संधिप्रकाश राग है।

आरोह :- सारे, मप, नीसां
अवरोह :- सां, रेंनीध, मपध, मरे, ऩीसा
मुख्यांग :- पनीसारें, नीधप, धमरे, मरेऩीसा
आलाप :- सारेमरे, मपध, मगरे, मपनीसां, नीसारें,
मंरेंसां, रेंनीधप, धमरे, मगरे, ऩीसा

कीर्तन - १ राग सोरठ ताल- रूपक मात्रा - ७

संध्या आरतीका पद

कौन रस गोपिन लीनो घुंट॥
मदन गोपाल निकटकर पाये प्रेमकामकी लूंट॥१॥
निरख स्वरूप नंदनंदनको लोक लाज गई छूंट॥
परमानंद वेद मारगकी मरयादा गई टूंट॥२॥

मुखडा

म	रे	म	प	नी	सां	रें	नी	ध	प	ध	म	ग	रे	
कौ	न	र	स	गो	पि	न	ली	-	नो	-	घूँ	-	ट	॥
२		३		०			२		३		०			

अन्तरा

म	रे	म	प	मप	नी	नी	सां	नी	सां	सां	पप	नी	सां	
कौ	न	र	स	मद	न	गो	पा	-	ल	नि	कट	क	र	
रें	नी	ध	प	रें	रें	रें	नी	नी	सां	रें	नी	ध	प	
पा	-	ये	-	प्रे	-	म	का	म	की	-	लूँ	-	ट	॥१॥
२		३		०			२		३		०			

स्थायी

म	रे	म	प	मरे	म	म	प	म	प	प	म	प	ध	
कौ	न	र	स	निर	ख	स्व	रू	-	प	-	नं	द	नं	
म	ग	रे	रे	रेप	म	म	गरे	ग	सा	नी	सा	सा	सा	
द	न	को	-	लो-	क	ला	--	ज	ग	ई	छूँ	-	ट	॥
२		३		०			२		३		०			

अन्तरा

सा	सा	सा	सा	मप	नी	नी	सां	नी	सां	सां	पप	नी	सां	
-	-	-	-	पर	मा	-	नं	-	द	वे	-	द	मा	
रें	नी	ध	प	रेंरें	रें	रें	नी	नी	सां	रें	नी	ध	प	
र	ग	की	-	मर	या	-	दा	-	ग	ई	टूँ	-	ट	॥२॥
२		३		०			२		३		०			

कीर्तन - २ राग-सोरठ ताल - त्रिताल मात्रा - १६

फूलमंडली कौ पद संध्या आरतीके दर्शनमें

बैठे लाल फूलनकी चौखंडी ॥
चंपक बकुल गुलाब निवारो राई बेलि श्रीखंडी ॥१॥
जाई जुही केवरो कुँजो करण कनेर सुरंगी॥
चत्रभुजप्रभु गिरिधरजूकी बानिक दिन दिन नव नवरंगी ॥२॥

स्थायी

३				×				२				०			
रेग	सारे	म	प	नी	नी	सां	रें	नी	ध	प	ध	म	ग	रेग	सा
बै-	ठे-	ला	ल	फू	-	ल	न	की	-	चौ	-	खं	-	डी-	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
म	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	प	प	नी	सां	रें	नी	ध	प
चं	-	प	क	ब	कु	ल	गु	ला	-	ब	नि	वा	-	रो	-
प	रें	रें	रें	नी	नी	सां	रें	नी	ध	प	प	रेग	सारे	म	प
रा	-	ई	-	बे	-	लि	श्री	खं	-	डी	-	बै-	ठे-	ला	ल ॥१॥

स्थायी

×				२				०				३			
रे	रे	म	म	प	प	प	प	रे	म	प	ध	म	ग	रे	रे
जा	-	ई	-	जु	ही	-	के	-	व	रो	-	कुँ	-	जो	-
रे	प	म	म	गरे	ग	सा	ऩी	सा	सा	सा	सा	रेम	पम	ग	रे
क	र	ण	क	ने-	-	र	सु	र	-	-	-	गी-	--	-	- ॥

अन्तरा

×				२				०				३			
म	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	प	प	नी	सां	रें	नी	ध	प
च	त्र	भु	ज	प्र	भु	गि	रि	ध	र	जू	की	बा	-	नि	क
प	रें	रें	रें	नी	नी	सां	रें	नी	ध	प	प	रेग	सारे	म	प
दि	न	दि	न	न	व	न	व	रं	-	गी	-	बै-	ठे-	ला	ल॥२॥

आलाप :-

बैठ लाल

१) म	प	नी	नी	सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	रे
२) प	नी	सां	रें	मं	रें	सां	सां	नी	ध	प	म	ग	रे	ऩी	सा

तान :-

बैठे लाल फूलन

१)	रेम	पनी	सांरें	सांनी	धप	मग	रेसा	ऩीसा
२)	पनी	सांरें	सांनी	धप	नीध	पम	गरे	ऩीसा

रेम पनी सां

रेम पनी सां

रेम पनी

राग - रायसा (कान्हरा)

“प वादी, संवादी स, ग-नि कोमल कर गान।
जाती संपूरन किये राग रायसौ जान ॥”

राग रायसा, राग कान्हरा का ही एक प्रकार है। राग नायकी और राग शहाना के संयोगसे बना हुआ राग रायसा प्रचारमें है, किंतु पुष्टिसम्प्रदायकी प्रणालि से यह भिन्न है।

हमारे सम्प्रदायमें इस रागमें नित्यक्रमके पद क्वचित ही पाये जाते हैं। लेकिन, बधाई, हिंडोरा एवं होरी-धमारके पद अधिकतर पाये जाते हैं। इस राग का विस्तार मंद्र सप्तक के स्वरोंमें यानि नीचे के स्वरोंमें अधिक है , इसलिए मध्यम को षड़ज मानकर, यानि मध्यम ग्राम से गाया जाता है।

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है। वैसे तो इस राग में ‘गांधार’ और ‘निषाद’ स्वर कोमल लिये जाते हैं, फिरभी, कभी-कभी शुद्ध ग-नि का प्रयोग किया जाता है। इस रागके आरोह-अवरोहमें सभी स्वर लगने से इसकी जाति सम्पूर्ण है। इस रागका वादी स्वर ‘पंचम’ और संवादी स्वर ‘षड़ज’ है। राग कान्हरा के सभी प्रकारोंका गायन समय मध्यरात्रि माना जाता है, किन्तु अपनी सेवा प्रणालीमें शयन दर्शन में यह राग गाया जाता है।

आरोह :- नी सा, रेग, रेसा, मप, धसां
अवरोह :- सांनीधप, मगरे, गरे, नीसा
मुख्यांग :- पधमप, गरे, मपध, सां
स्वर विस्तार :- सा, नीसा, रेगरेसा, रेगमप, धपमग, रेगरेसा
पप, धप, सां, नीसां, नीधप, मगरे, गरेसा

कीर्तन - १ राग-रायसा (कान्हरा) ताल- आडा चौताल मात्रा - ७

श्री महाप्रभुजी की बधाई

द्विजकुल प्रकटे श्री हरि सुन्दरताकी रास ॥
परमपुनीत एकादशी धन्य धन्य माधोमास ॥१॥
लग्न नक्षत्र बर शोधके बैठे द्विजवर आय ॥
श्री लक्ष्मण भट मन मोदसों दीनी बहुबिधि गाय ॥२॥
फूले द्रुम और बेली फूली सरस बनराय ॥
निजजन फूलें निरखकें रहसि बधाई गाय ॥३॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४	
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	म
द्विज	कु	ल	प्र	क	टे	-	श्री-	--	ह	री	-	-	-
मम	ग	म	प	ध	प	प	--	--	-	ध	प	म	म
सुं-	द	र	ता	-	की	-	--	-	-	-	-	-	-
सांसां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	नीध	नी	ध	प	ध	प	म
सुं-	द	र	ता	-	की	-	रा-	-	-	-	-	-	स ॥
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	म
द्विज	कु	ल	प्र	क	टे	-	श्री-	--	ह	री	-	-	-

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
सांसां	सां	सां	सां	रें	नी	नी	सारें	गं	मं	गं	रें	सां	सां
पर	म	पु	नी	त	ए	-	का-	-	द	शी	-	-	-
धध	ध	ध	ध	नी	रें	सां	धध	प	ध	प	प	म	म
धन्य	ध	न्य	मा	-	धो	-	मा-	-	-	स	-	-	- ॥१॥

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४		
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	म	
ल-	ग्न	न	क्ष	त्र	ब	र	शो-	--	ध	के	-	-	-	
मम	ग	म	प	ध	प	प	पप	प	प	ध	प	म	म	
बै-	ठे	-	द्वि	ज	व	र	आ-	-	-	-	-	-	य	||
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	सां	
ल-	ग्न	न	क्ष	त्र	ब	र	शो-	--	ध	के	-	-	श्री	

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४		
सांसां	सां	सां	सां	रें	नी	नी	सांरें	गं	मं	गं	रें	सां	सां	
ल-	क्ष्म	ण	भ	ट	म	न	मो-	-	द	सों	-	-	-	
धध	ध	ध	ध	नी	रें	सां	धध	प	ध	प	प	म	म	
दी-	नी	-	ब	हु	बि	धि	गा-	-	-	य	-	-	-	||२||

स्थायी

×	२		३		४		×	२		३		४		
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	म	
फू-	ले	-	द्रु	म	औ	र	बे-	--	-	ली	-	-	-	
मम	ग	म	प	ध	प	प	पप	प	प	ध	प	म	म	
फू-	ली	-	स	र	स	-	--	-	-	-	-	-	-	
सांसां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	नीध	नी	ध	प	ध	प	म	
फू-	ली	स	र	स	ब	न	रा-	-	-	-	-	-	य	||
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	म	
फू-	ले	-	द्रु	म	औ	र	बे-	--	-	ली	-	-	-	

अन्तरा

×	२		३		४		×	२		३		४	
सांसां	सां	सां	सां	रें	नी	नी	सारें	ग	मं	ग	रें	सां	सां
निज	ज	न	फू	-	ले	-	निर	-	ख	के	-	-	-
धध	ध	ध	ध	नी	रें	सां	धध	प	ध	प	प	म	म
रह	सि	ब	धा	-	ई	-	गा-	-	-	य	-	-	- ॥३॥

कीर्तन - २ राग-रायसा ताल - धमार मात्रा - १४

हिंडोरा को पद

झूलत राधा मोहन कालिंदी के कूल ॥
सघन लताजु सुहावनी, चहुंदिश फूले फूल ॥१॥
सखीजुरी चहुंदिश ते, कमल नयनकी और ॥
बोलत वचन अमृतमय, नंददास चित्तचोर ॥२॥

स्थायी

×					२		०			३			
ध	म	प	ग	रे	नि़	सा	ग	ग	म	ध	प	म	म
झू	ल	त	रा	-	धा	-	मो	-	-	ह	-	न	-
म	ग	म	प	ध	प	प	-	-	-	ध	प	म	म
का	लिं	-	दी	-	के	-	-	-	-	-	-	-	-
सां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	नी	ध	नी	ध	ध	प	म
का	लिं	-	दी	-	के	-	कू	-	-	-	-	-	ल ॥

अन्तरा

सांसां	सां	सां	सां	रें	नी	नी	सांरें	गं	मं	गं	रें	सां	सां
सघ	न	ल	ता	-	जु	सु	हा-	-	व	नी	-	-	-
धध	ध	ध	ध	नी	रें	सां	नी	ध	नी	ध	ध	प	म
चहु	दि	श	फू	-	ले	-	फू	-	-	-	-	-	ल ॥१॥

स्थायी

×					२		०			३			
ध	प	म	ग	रे	ऩि	सा	ग	ग	म	ध	प	म	म
स	खी	जु	री	-	च	हुँ	दि	-	श	ते	-	-	-
मम	ग	म	प	ध	प	प	-	-	-	ध	प	म	म
कम	ल	न	य	न	की	-	-	-	-	-	-	-	-
सांसां	सां	सां	सां	सां	रें	सां	नी	ध	नी	ध	ध	प	म
कम	ल	न	य	न	की	-	औ	-	-	-	-	-	र ॥
पध	म	प	ग	रे	म	प	नीध	पध	प	म	म	म	म
स-	खी	जु	री	-	च	हुँ	दि-	--	श	ते	-	-	-

अन्तरा

×					२		०			३			
सांसां	सां	सां	सां	रें	नी	नी	सांरें	गं	मं	गं	रें	सां	सां
बो-	ल	त	ब	च	न	अ	मृ-	-	त	म	य	-	-
ध	ध	ध	ध	नी	रें	सां	नी	ध	नी	ध	ध	प	म
नं	द	दा	-	स	चि	त्त	चो	-	-	-	-	-	र ॥२॥

राग - बसंत

''रे कोमल, संवाद स-म, मध्यम के दोऊ रूप।
आरोही पंचम बरज, राग बसंत अनूप।।''

भारतीय संगीतके प्राचीन रागोंमें बसंत रागका स्थान महत्त्वपूर्ण है। यह राग पूर्वी थाट से उत्पन्न हुआ है। अन्य रागोंकी तुलनामें यह राग दूल्हे के समान शोभायमान है।

''और राग सब भये बाराती, दूल्हे राग बसंत।''

यह राग, ऋतुप्रधान राग होनेसे बसंत ऋतु में किसी भी समय गाया जाता है। पुष्टिमार्गीय सेवा प्रणालिमें इस प्रथाका यथार्थ पालन किया जाता है। बसंतपंचमी से पूर्णिमा तक, मंगला से शयन तक की सेवामें इसी रागमें पदगान किया जाता है। इसे ''बसंत धमार के पद'' कहते हैं।

इन पदोंसे होरी खेलके आरंभकी भावना प्रकट होती है। भगवान श्री कृष्णने, ब्रजमंडलमें गोपीजनोंके साथ होरी खेलकी जो लीला की थी, उन लीलाओंका गुणगान इन पदों द्वारा ४० दिन तक किया जाता है। पूर्णिमा के पश्चात बसंतके साथ अन्य राग भी गाये जाते हैं। तथापि डोलउत्सव तक यह राग गाया जाता है।

अष्टछाप संगीत परंपरामें बसंत रागके निम्नलिखित चार प्रकार माने जाते हैं। १) शुद्ध बसंत २) ललित बसंत ३) हिंडोल बसंत ४) पंचम बसंत

पुष्टिसम्प्रदायमें राग बसंत में शुद्ध धैवत का अधिक प्रयोग होता है। लेकिन शास्त्रीय संगीतमें, ललित अंगसे कोमल धैवत का प्रयोग किया जाता है। बसंत रागके सभी प्रकार में वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर तार सप्तक का षड़ज है। यह राग उत्तरांगप्रधान है।

इस रागके आरोह में पंचम स्वर वर्जित होने से इस रागकी जाति षाड़व-सम्पूर्ण मानी जाती है। इस रागमें दोनों ऋषभ एवं दोनों मध्यम स्वरोंका प्रयोग किया जाता है।

इन्हीं आलापोंमें कोमल धैवत लगाने से कोमल धैवत का राग बसंत हो जाएगा ।

आरोह :- ध़ऩीसाम, मपमग, म̍ध, रें̱सां
अवरोह :- रें̱नी, धप, म̍गम̍ध, म̍ग, रे̱सा
मुख्यांग :- म̍ध नीरें̱सां, नीधप, म̍ग, म̍ग, रे̱सा
स्वर विस्तार :- ध़ऩीसाम, मपमग, म̍गरे̱सा
म̍धनीसां, रें̱सां, रें̱नीधप, म̍ग, म̍ग, रे̱सा,
म̍धनीसां, रें̱सां, गं, म̍गं, रें̱सां, नीधप, म̍ग, म̍धम̍ग, रे̱सा

कीर्तन - १ राग-बसंत ताल- त्रिताल मात्रा - १६

गिरिधर लाल की बानिक उपर, आज सखी तृण टूटे री ॥
चोवा चंदन अगर कुमकुमा, पिचकाईन रंग छूटे री ॥१॥
लालके नैना रगमगे देखियत, अंगअनंगन लूटे री ॥
कृष्णदास धन धन्य राधिका, अधर सुधारस घूंटे री ॥२॥

मुखडा

०				३				×				२			
ध़	ऩी	सा	म	म	म	म	म	म	प	म	ग	म̍	ध	नी	सां
गि	रि	ध	र	ला	-	ल	की	बा	-	नि	क	उ	-	प	र
नी	रें̱	सां	सां	नी	सां	नी	ध	म̍	ग	नी	ध	म̍	ग	रे̱	सा
आ	-	ज	स	खी	-	तृ	ण	टू	-	टे	-	री	-	-	- ॥

अन्तरा

०				३				×				२			
ध	ध	म̍	ध	सां	सां	सां	सां	नी	रें̱	गं	गं	म̍ं	गं	रें̱	सां
चो	-	वा	-	चं	-	द	न	अ	ग	र	कु	म	कु	मा	-
सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	म̍	ग	नी	ध	म̍	ग	रे̱	सा
पि	च	का	-	इ	न	रं	ग	छू	-	टे	-	री	-	-	-॥१॥

स्थायी

०				३				×				२			
ध़	ऩी	सा	म	म	म	म	म	म	प	म	ग	म॑	ध	नी	सां
ला	-	ल	के	नै	-	ना	-	र	ग	म	गे	दे	खि	य	त
नी	रें॒	सां	सां	नी	सां	नी	ध	म॑	ग	नी	ध	म॑	ग	रे॒	सा
अं	-	ग	अ	नं	-	ग	न	लू	-	टे	-	री	-	-	- ॥

अन्तरा

०				३				×				२			
ध	ध	म॑	ध	सां	सां	सां	सां	नी	रें॒	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां
कृ	-	ष्ण	दा	-	स	ध	न	ध	-	न्य	रा	-	धि	का	-
सां	सां	सां	सां	नी	सां	नी	ध	म॑	ग	नी	ध	म॑	ग	रे॒	सा
अ	ध	र	सु	धा	-	र	स	घूं	-	टे	-	री	-	-	- ॥२॥

राग बसंतके बहुतसे कीर्तन इसी स्वरलीपि पर बजाये जा सकते हैं । जैसे :-

१) लाल गोपाल गुलाल हमारी, अखियनमें जिन डारो जु ॥

२) श्री वल्लभ प्रभु करूणासागर जगत उजागर गाईये ॥

कीर्तन - २ राग-कोमल धैवत का राग बसंत ताल- सूलताल मात्रा - १०

मोसों होरी खेलन आयो ॥
लटपटी पाग, अटपटे पैचन, नयनन बीच सुहायौ ॥१॥
डगर डगरमें, बगर बगरमें, सब हिन के मन भायौ ॥
आनंदघन प्रभु, कर दृग मींड़त, हँस हँस कंठ लगायौ ॥२॥

मुखड़ा

×		०		२		३		०		
सां	सां	नी	ध॒	प	प	म॑	ग	म॑	ध॒	
मो	सों	हो	री	खे	-	ल	न	आ	यौ	॥

अन्तरा

×		०		२		३		०		
ध॒	ध॒	म॑	ध॒	सां	सां	नी	रें॒	सां	सां	
ल	ट	प	टी	पा	-	-	-	ग	-	
नी	रें॒	गं	गं	मं॑	गं	रें॒	सां	सां	सां	
अ	ट	प	टे	पै	-	-	-	च	न	
सां	सां	नी	ध॒	प	प	म॑	ग	म॑	ध॒	
न	य	न	न	बी	-	च	सु	हा	यौ	॥१॥

स्थायी

×		०		२		३		०		
सा	सा	म	म	म	म	म	म	म	म	
ड	ग	र	-	ड	ग	र	में	-	-	
म॑	म	ग	ग	ग	म॑	ध॒	नी	सां	सां	
ब	ग	र	-	ब	ग	र	में	-	-	
सां	सां	नी	ध॒	प	प	म॑	ग	म॑	ध॒	
स	ब	हि	न	के	-	म	न	भा	यो	॥

अन्तरा

×		०		२		३		०	
ध̲	ध̲	म॑	ध̲	सां	सां	नी	रें̲	सां	सां
आ	-||	नं	द	घ	न	प्र	भू	-	-
नी	रें̲	गं	गं	मं॑	गं	रें̲	सां	सां	सां
क	र	ट्ट	ग	मीं	-	-	-	ड	त
सां	सां	नी	ध̲	प	प	म॑	ग	म॑	ध̲
हँ	स	हँ	स	कं	-	ठ	ल	गा	यौ ||२||

राग - खमाज

"दोउ निषाद नीके लगें, आरोही रे हानि।
ग-नि वादी संवादी तें, खम्माजहि पहिचानि।।"

खमाज रागकी उत्पत्ति खमाज थाट से होती है। इस रागके आरोहमें ऋषभ स्वर वर्ज्य होता है। अवरोहमें सातों स्वरोंका प्रयोग किया जाता है, इसलिए इस रागकी जाति षाड़व सम्पूर्ण है। अवरोहमें 'निषाद' स्वर कोमल है, शेष सभी स्वर शुद्ध हैं। इस रागका वादी स्वर 'गांधार' और संवादी स्वर 'निषाद' हैं। इस रागका गायन समय रात्रिका दूसरा प्रहर है। राग खमाज का वैचित्र्य 'गमपधनी' इन स्वरोंपर निर्भर है।

हमारे पुष्टि सम्प्रदायमें खमाज रागमें अति अल्प मात्रामें पद प्राप्त होते हैं। नित्य ऋतु क्रमकी प्रणालीमें यह राग नही गाया जाता है। केवल ब्याह, सांझी, हिंडोला, आदिमें इस रागके पद पाये जाते हैं। यह राग ठुमरी अंग का है जबकि पुष्टिमार्गीय कीर्तन प्रणालि ध्रुपद-धमार पर आधारित है। इसलिए अष्टछाप कवियोंने इस रागका उपयोग नहीं किया है। श्री हरिरायजीके समयसे पहले, हमारे पुष्टि सम्प्रदायमें यह राग प्रचलित नहीं था।

आरोह :- सागम, पधनीसां
अवरोह :- सांनीधप, मग, रेसा
मुख्यांग :- नीध, मप, ध, मग
स्वर विस्तार :- सा, गमपधनीध, मपध, मग, रेसा । गमपधनी, सां, नीसांरेंसां, नीसांनीध, मपधमग पधसांरेंगंसां, नीध, मपध, मग, रेसा।

कीर्तन - १ राग-खमाज ताल- त्रिताल मात्रा - १६

ब्याह को पद

माई मेरौ लाल बना बन आयौ।।
रत्नजटितको शीश सेहरो, हीरा लाल जडायौ ।।१।।
नंदरायको कुंवर लाडिलो जसुमति गोद खिलायौ।।
पुरुषोत्तमप्रभु की छबि निरखत रोम रोम सचुपायौ ।।२।।

मुखडा

२				०				३				×				
धनी	पध	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	म	प	ध	नी	नी	सां	सां	
मा-	ई-	मे	रौ	ला	-	ल	ब	ना	-	ब	न	आ	-	यौ	-	||

अन्तरा

०				३				×				२				
ग	म	नी	ध	नी	नी	सां	सां	नी	नी	सां	सां	नीसां	रेंसां	नी	ध	
र	त	न	ज	टि	त	को	-	शी	-	श	से	--	हु-	रो	-	
सां	गं	गं	मं	रें	गं	सां	रें	नी	सां	नी	ध	धनी	पध	नी	सां	
ही	-	रा	-	ला	-	ल	ज	डा	-	यौ	-	मा-	ई-	मे	रौ	||१||

स्थायी

०				३				×				२				
ग	म	ध	ध	ध	ध	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	ध	प	प	
नं	-	द	रा	-	य	कौ	-	कुँ	व	र	ला	-	डि	लो	-	
म	प	ग	म	प	ध	नी	सां	नी	नी	ध	प	मध	पध	म	ग	
ज	सु	म	ति	गो	-	द	खि	ला	-	यौ	-	--	--	-	-	||

अन्तरा

०				३				×				२				
ग	म	नी	ध	नी	नी	सां	सां	नी	नी	सां	सां	नीसां	रेंसां	नी	ध	
पु	रु	षो	-	त्त	म	प्र	भु	की	-	छ	बि	नि-	र-	ख	त	
सां	गं	गं	मं	रें	गं	सां	रें	नी	सां	नी	ध	धनी	पध	नी	सां	
रे	-	म	रे	-	म	स	चु	पा	-	यो	-	मा-	ई-	मे	रे	||२||

कीर्तन - २ राग-खमाज ताल - दादरा मात्रा - ६

गायो ना गोपाल मन, लायौ ना रसाल लीला
सुनी ना सुबोधिनी, न साधु संग पायौ है॥
सेव्यो नहीं स्वाद करि, घरी आधी घरी हरी
कबहू न कृष्ण नाम, रसना रटायौ है॥१॥
श्रीवल्लभ विठ्ठलेश प्रभुकी शरन जाय।
दीन होय, मती हीन शीशना नमायौ है॥
रसिक कहै बार बार लाज हू न आवे तोहे,
मनुष जनम पायौ मूढ, कहातू कमायौ है॥२॥

स्थायी

×			०			×			०		
नी	नी	नी	सां	नी	सां	ध	सां	नी	ध	म	म
गा	-	यो	ना	-	गो	पा	-	ल	म	-	न
ग	ग	म	प	ध	प	ग	प	म	ग	ग	ग
ला	-	यौ	ना	-	र	सा	-	ल	ली	-	ला
सा	सा	सा	ग	ग	ग	म	म	म	प	प	ध
सु	नी	-	न	-	सु	बो	-	धि	नी	-	न
सां	सां	नी	ध	ध	म	प	ध	म	ग	ग	ग
सा	-	धु	सं	-	ग	पा	-	यौ	है	-	-॥

अन्तरा

×			०			×			०		
ग	ग	म	नी	ध	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
से	-	व्यो	ना	-	ही	स्वा	-	द	क	री	-
प	नी	नी	सां	नी	सां	ध	सां	नी	ध	ध	ध
घ	री	-	आ	धी	-	घ	री	-	ह	-	री

सां	गं	रें	गं	मं	गं	रें	गं	रें	सां	नी	सां
क	ब	-	हू	-	न	कृ	-	ष्ण	ना	-	म
नी	ध	प	पध	नी	सां	नी	ध	प	गम	पध	नीसां
र	स	-	ना-	-	र	टा	-	यौ	है	--	--॥

स्थायी

×			०			×			०		
ग	ग	म	ध	ध	ध	नी	ध	प	ध	ध	प
श्री	-	व	ल्ल	-	भ	वि	-	ठ्ठ	ले	-	श
ग	म	प	ध	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	ग
प्र	भु	-	की	-	श	र	-	न	जा	-	य
सा	सा	सा	ग	ग	ग	म	म	म	प	प	ध
दी	-	न	हो	-	य	म	ती	-	ही	-	न
सां	सां	नी	ध	ध	म	प	ध	म	ग	ग	ग
शी	-	श	ना	-	न	मा	-	यो	है	-	-॥

अन्तरा

×			०			×			०		
ग	ग	म	नी	ध	नी	सां	सां	नी	सां	सां	सां
र	सि	क	क	है	-	बा	-	र	बा	-	र
प	नी	नी	सां	नी	सां	ध	सां	नी	ध	ध	ध
ला	-	ज	हू	-	न	आ	-	वै	तो	-	है
गं	गं	रें	गं	गं	मं	गं	रें	गं	सां	नी	सां
म	नु	ष	ज	न	म	पा	-	यौ	मू	-	ढ
नी	ध	प	पध	नी	सां	नी	ध	प	म	ग	ग
क	हा	-	तू-	-	क	मा	-	यौ	है	-	-॥

आश्रय को पद

राग-मारू बिहाग

आरोह :- सागम॑पनीसां

अवरोह :- सांनीधपम॑गरेसा

पकड :- नीसांधपम॑गरेसा, गम॑पम॑, प

ताल- झपताल मात्रा - १०

जैसो हूं तैसो तिहारो श्री वल्लभ अब जिन छांड देहो मोहि करते ॥
बांह गहेकी लाज मनधर हों नाही भरोसो मोहे साधन बलते ॥१॥
तुम त्यज और ठोर नहीं मोको जासों जाय कहो दुःख भरतें ॥
रसिक शिरोमणि श्री वल्लभप्रभु राखो मोहि चरणशरण भवडरतें ॥२॥

मुखड़ा

×		२			०		३		
म॑	ग	रे	रे	सा	रे	रे	सा	सा	सा
जै	-	सौ	-	हूं	तै	-	सौ	-	ति
नि़	नि़	सा	ग	म॑	ग	रे	सा	सा	सा
हा	-	रौ	-	श्री	व	-	ल्ल	-	भ
ग	म॑	प	नी	सां	ध	ध	प	प	प
अ	ब	जि	-	न	छां	-	ड	-	दे
ध	म॑	प	म॑	ग	म॑	ग	रे	रे	सा
हो	-	मो	-	हि	क	र	ते	-	- ॥

अन्तरा

×		२			०		३		
ग	म॑	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	सां
बां	-	ह	-	ग	हे	-	की	-	-
प	नी	सां	गं	गं	मं॑	गं	रें	रें	सां
ला	ज	म	-	न	ध	र	हों	-	-

×		२			०		३			
रें	नी	ध	ध	प	ध	प	म॑	म॑	म॑	
ना	-	ही	-	भ	रो	सो	मो	-	हे	
प	म॑	ग	ग	ग	म॑	ग	रे	रे	सा	
सा	-	ध	-	न	ब	ल	ते	-	-	॥१॥

स्थायी

×		२			०		३			
सा	सा	म	म	म	ग	ग	ग	ग	ग	
तु	म	त्य	-	ज	औ	-	र	-	-	
नी	नी	नी	नी	प	ध	म॑	प	प	प	
ठो	र	न	-	ही	मो	-	को	-	-	
प	म॑	ग	रे	सा	रे	रे	सा	सा	सा	
जा	-	सो	-	-	जा	-	य	-	क	
ऩि	सा	ग	म॑	प	म॑	ग	रे	रे	सा	
हो	-	दुः	-	ख	भ	र	तें	-	-	॥

अन्तरा

×		२			०		३			
ग	म॑	प	नी	नी	सां	नी	सां	सां	सां	
र	सि	क	-	शि	रो	-	म	-	णि	
प	नी	सां	गं	गं	मं॑	गं	रें	रें	सां	
श्री	-	व	-	ल्ल	-	भ	प्र	-	भु	
रें	नी	ध	ध	प	ध	प	म॑	म॑	म॑	
रा	खो	मो	-	हे	च	र	न	-	श	
प	म॑	ग	ग	ग	म॑	ग	रे	रे	सा	
र	ण	भ	-	व	ड	र	ते	-	-	॥२॥

जीवन चरित्र - श्री परमांनददासजी

पुष्टि सम्प्रदायके दूसरे सागर, परमभक्त श्री परमानंददासजीका परिचय देनेके लिए श्री ध्रुवदासजीकी इन दो पंक्तिओंसे प्रारंभ करें, तो सर्वथा उचित रहेगा।

‘‘परमानंद और सूर मिलि गई सब ब्रजरीत।
भूलि जाति बिधि भजनकी सुनि गोपिनकी प्रीत॥’’

पुष्टिसम्प्रदायकी, साहित्यकी और कलाकी, इन तीनों दृष्टिसे यदि विचार किया जाय तो सूरदासजीके साथ-साथ, परमानंददासजीको भी ‘सागर’ कहा जाता है। कीर्तन प्रवाह इन दोनोंकी बानीसे अस्खलित बहा है। एक ने सूरसागर छलकाया, दूसरेने परमानंदसागर। वार्ता प्रसंगके इस उदाहरणसे ज्ञात होता है कि अपने काव्य महत्वके कारण सूरदासजीकी तरह परमानंददासजी भी अपने जीवन कालमें सागर कहलाने लगे। ‘‘पुष्टिमार्गमें दोही सागर भये। एक सूरदासजी और दूसरे परमानंददासजी। सो तिनको हृदय अगाध रस भगवल्लीला रूप जहां रत्न भरे हैं।’’ दोनों के कीर्तनोंको संख्यामें बांधना कठिन है, इसलिये दोनों को ‘सागर’ कहा जाता है। पुष्टिसंप्रदायमें, परमानंददासजीका अपना एक अलग स्थान है। उन्होंने सहस्त्रों पद रचनाएँ की है।

ऐसे भक्तकवि और कीर्तनकार, परमानंददासजी एक कुलीन, अकिंचन कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। आपका जन्म सं. १५५० (ई.स. १४९४) की मार्गशीर्ष शु. ७मी को हुआ था। आपके पिता अत्यंत सामान्य स्थिति के थे और दान-दक्षिणा द्वारा अपनी आजीविका चलाते थे।

जिस दिन परमानंददासजीका जन्म हुआ था उसी दिन, एक बड़े यजमान ने उनके पिताको बहूत सारी दक्षिणा दी। तब उनके पिता ने सोचा, ‘‘परमात्माने मुझे बेटे के साथ धन भी दिया है। पुत्र निश्चित रूपसे दैवी होगा।’’ पुत्रके जन्मसे उन्हें ‘‘परम आनंद’’ की अनुभूति हुई, इसलिए उसका नाम उन्होंने परमानंददास रखा। पिता ने पुत्रको साहित्य और संगीतकी शिक्षा दिलाई और यथासमय यज्ञोपवित भी किया। रूप, गुण और विद्या, तीनोंमें वे आगे थे। बाल्यकाल से ही उन्हें संगीतमें रूचि थी। बड़े होते ही वे एक कवि बने ओर उनकी रचनाओं की

प्रसिद्धीसे वे ''स्वामी'' नामसें पहचाने जाते थे।

एक बार अकालके समय, कनौज के हाकिमने उनके पिता का सारा धन छिन लिया। पिता ने उन्हें आज्ञा दी कि वे अपने धन-पैसे से अपनी शादी करें। किंतु आपके मनका खिंचाव संसारासक्ति से दूसरी दिशामें था। दूसरा धन कमाने की इच्छासे उनके पिता तो पूर्व और दक्षिणकी ओर चले गये। तब सांसारिक एषणाओंसे विरक्त, परमानंददासजी भगवद्कीर्तन और भजनपूजनमें समय व्यतित करने लगे। आपने स्वल्प समयमें ही प्रसिद्धि प्राप्त कर ली और आपके शिष्यभी होने लगे, तबसे आप परमानंदस्वामी कहलाने लगे।

एक बार परमानंददासजी ने कनौज से प्रयागकी ओर मकर स्नानके लिये प्रस्थान किया। वहांभी आप भजन-कीर्तन और संगीतमें ही मग्न रहते थे। उच्च कोटिके गायकके रूपमें आपकी कीर्ति फैल चुकी थी। आपके पद श्रवण करने दूर-दूरसे लोग आते थे।

उन्हीं दिनों अडेलमें महाप्रभु श्री वल्लभाचार्यजी निवास कर रहे थे। उनके जलघरिये कपूर क्षत्रीने परमानंददासजी के भजन-कीर्तनकी खूब प्रशंसा सुनी थी। उन्हें रागमें आसक्ति थी, परंतु वे सेवा छोड़कर जाना नहीं चाहते थे। इसलिए एक रात्रि वे स्वयं तैरकर यमुनापार करके आये। रात्रिभर उन्होंने आपके कीर्तन सुने और वे बहोत प्रसन्न हुए। क्षत्री कपूरकी गोदमें श्री नवनीतप्रियजी भी कीर्तन सुनने पधारे थे। परमानंददासजीके पदगान से प्रसन्न कोटिकंदर्प लावण्यरूप, आनंदघन परमात्माने, परमानंददासजीको दर्शन दिए और बताया कि दैवी जीवों पर भगवदीयके संगसे भगवान कृपा करते हैं। उसी समय परमानंददासजीने अडेल जानेका निर्णय किया।आपके पदगान सुननेकी लालसा से वहां जाके श्री महाप्रभुजीके अलौकिक साक्षात कृष्णरूपमें दर्शन करके वे अत्यंत प्रभावित हुए और शरणमें लेनेकी बिनती की।

अब तक परमानंददासजी प्रभुविरहके ही पद गाया करते थे। श्री महाप्रभुजीने बाललीलाके पद गानेकी आज्ञा की। किन्तु परमानंददासजी तो प्रभुकी बाललीलाओंसे अनभिज्ञ थे। श्री वल्लभने उन्हें दीक्षा दी और श्रीमद् भागवतके दशमस्कंधकी अनुक्रमणिका सुनायी। उसी क्षण, श्री परमानंददासजीके हृदयमें

प्रभुकी बाललीलाके पद स्फुरित होने लगे। “माईरी कमलनयन श्यामसुंदर झूलत है पलना...” और “जसोदा तेरे भागकी कही न जाई...” इत्यादि पद आपने गाये। मानों तभीसे परमानंददासजी का हृदय लीलासागर ही बन गया, जिसमेंसे प्रभुकी भिन्न-भिन्न लीलाओंके अगणित पद, एक प्रवाहकी भांति अस्खलित रूपसे बहने लगे। तभीसे परमानंदस्वामीसे वे परमानंददास बन गये। इस तरह अडेलमें आप श्री महाप्रभुजीके सानिध्यमें कुछ समय रहे।

परमानंददासजी नित्य नूतन पदरचना करके श्री नवनीतप्रियाजीकी अष्टयाम सेवामें अंगीकार कराते थे। नित्य श्री सुबोधिनीमें जिन लीलाओंका वर्णन श्री आचार्यजी करते, उन लीलाओंकी पदरचना करके उन्हें सुनाते थे। एक दिन कथामें श्री प्रभुके चरणार्विन्द का माहात्म्य सुनकर उन्होंने “चरण कमल वंदो जगदीश जे गोधन के संग धाये” राग कान्हरा में और “यह मांगो गोपीजन वल्लभ” यह पद गाया। तब महाप्रभुजीने उनकी व्रजदर्शनकी प्रार्थना इन पदों द्वारा जानकर स्वयं व्रजमें पधारनेका निश्चय किया।

प्रयागसे मथुरा जाते, रास्तेमेंही परमानंददासजीका गाँव कनौज आता था। उन्होंने श्री महाप्रभुजीको अपने घरमें पधराये। श्री आचार्यजीने कुछ भगवद्यश गानेकी आज्ञादी। तब परमानंददासजीने “हरि तेरी लीलाकी सुधि आवे” यह पदगान किया। यह पद सुनतेही श्री महाप्रभुजी इतने भावविभोर हो गये कि आप देहानुसंधान भूल गये और तीन दिन तक लीलामें मग्न रहे। चौथे दिन वे सावधान हुए और नेत्र खोले। सभी वैष्णव अतिप्रसन्न हुए। श्री महाप्रभुजीने श्री परमानंददासजीके पुराने शिष्योंको दीक्षा देकर सम्प्रदायमें सम्मिलित किया। उन सबको साथ लेकर वे ब्रजमें पधारे।

व्रजमें आकर सर्वप्रथम श्री आचार्यजी गोकुलमें ठहरे। परमानंददासजीको श्री यमुनाष्टकका पाठ सिखाया और उन्होंने श्री यमुनाजीके यह पद गाये। “श्री यमुनाजी यह प्रसाद हों पाऊं”, “श्री यमुनाजी दीन जान मोहि दीजे”, और “कालिंदी कलि कल्मष हरनी।” तत् पश्चात, श्री आचार्यजीने प्रसन्न होकर गोकुलकी बाललीलाके विशिष्ट दर्शन उन्हें कराए। तब उन्होंने “श्री यमुनाजल घट भरि ले जलि श्री चंद्रावली नारी” और “गिरिधर सबही अंगको बाकों” इत्यादि पद गाये। आपके चरणारविंद सान्निध्यमें सभी लीलाओंका अनुभव हो

ऐसी इच्छा की वहां से श्री आचार्यजीके साथ वे गिरिराजजी गये। श्री गोवर्धननाथजीका स्वरूप दर्शन होते ही उनकी बानीसे यह पद प्रकट हुआ जिसमें प्रथम अवतार लीला, तत् पश्चात कुंजलीला, चरणवंदना, स्वरूप वर्णन और माहात्म्य सहित श्री ठाकुरजीकी लीला हो ऐसा पद, ''मोहन नंदरायकुमार, प्रकट ब्रह्म निकुंज नायक, भक्त हित अवतार।'' उनके पदोंमे श्री ठाकुरजीकी बाललीला एवं रहस्यकी झलकियाँ भी दिखाई देती हैं।

श्री आचार्यजीके सेवक, राजा, एक बार अपनी रानीके साथ गोवर्धनधरण श्रीनाथजीके दर्शनार्थ आये। तब रानीने श्रीजीके दर्शन परदेमें ही करानेका आग्रह किया तब श्री महाप्रभुजीकी आज्ञा से उसे ऐसे अद्भुत दर्शन करनेकी व्यवस्था की गयी। उसी समय श्रीजीने भक्तोद्धारक स्वरूपसे सिंहपोरके किंवाड़ खोल दिये और भीड़ के कारण रानी के वस्त्र अस्तव्यस्त हो गये और वह लज्जित हो गयी। इसी समय परमानंददासजीने ''कौन यह खेलवेकी बानि'' यह पदगान किया। तब श्री महाप्रभुजीने उन्हें टोक कर अपने स्नेहभाव और दासभावका एहसास दिलाते हुए कहा कि ''भली यह खेलवेकी बानि कहो।''

एक दिन श्री सूरदासजी, कुंभनदासजी, रामदासजी, इत्यादि भगवदीय परमानंददासजीके घर आये। तब उन्होंने भगवदीयोंकी इस कृपासे प्रसन्न होकर उनमें भी श्री गोवर्धननाथजीके दर्शन करते हुए ''आये मेरे नंदनंदनके प्यारे'' यह पद गाया वैष्णवोंके लिए उनका आंतरिक प्रेम सदैव छलकता ही रहता है। ''हरिजन संग छिनक जो होई'' यह पदभी इसी बातकी प्रतीति कराता है।

एक बार श्री गुसांईजी एवं श्री नवनीतप्रियाजीके दर्शनार्थ परमानंददासजी गोकुल आये। तब श्री गुसांईजीने ब्रजकी सब लीलाओंके वर्णनका एक कीर्तन संस्कृतमें रचा। ''मंगल मंगलं व्रजभुवि मंगलं'' यह पद श्री गुसांईजीने स्वयं गाकर परमानंददासजी से भी गवाया। यह पद श्री गुसांईजीने नित्य उसी समय गानेकी आज्ञा की जिससे ब्रजकी सब लीलाओंका नित्य पाठ हो। सम्प्रदायमें आज भी यह पद नित्य मंगला समय गाया जाता है। बादमें परमानंददासजीने ''मंगल माधो नाम उच्चार'' और ''मंगल आरति करि मन मोर'' इत्यादि मंगल भावके अनेक पद गाये।

जन्माष्टमी के अवसर पर जब श्री गुसांईजी परमानंददासजीको संग लेकर गिरिराजजीसे गोकुल पधारे और श्री नवनीतप्रियाजीको अभ्यंग स्नान कराया तब धनाश्री रागमें ''सबमिलि मंगल गावो माई'' यह बधाई का पद परमानंददासजीने गाया। श्रृंगार के बादमें तिलक समयपर राग सारंगमें ''बधाई को दिन नीको'' और '' घर घर ग्वाल देत हैं हेरी'' इत्यादि अनेक पद गाये। मध्यरात्रि कृष्णजन्मके समय जब श्री नवनीतप्रियाजी को श्री गुसांईजीने पलनामें पधराये तब राग धनाश्रीमें ''जसोदा रानी सोवन फूले फूली'' यह पद गाया इस पदमें ''एसे दशक होय जो और, सब कोऊ सचुपावे'' तुक गायी। अपने कृपा पात्र भगवदीयके वचनको सत्य करने के लिये, श्री गोवर्धननाथजी, श्री आचार्यजी, श्री गुसांईजी और उनके सात बालकोंने इन दस स्वरूपोंसे प्रकट हो कर सब पुष्टिमार्गीय दैवी जीवोंको सुख प्रदान किया है। इस प्रकार परमानंददासजी का चित्त नंदोत्सवके आनंदमें सम्मिलित हो कर इतना विक्षिप्त हो गया कि इस पदको गानेसे वे प्रभुप्रेम में विकल होकर बेहोश हो गये। तब श्री गुसांईजीने स्वयं अपने श्री हस्तकमलसे उन्हें उठाकर वेद मंत्रोच्चार करके जलकी अंजलिका छिरकाव किया था। सभी लीलाओंका अनुभव उन्हें होने लगा। बादमें उन्होंने राग बिलावल में पलने का यह पद ''हालरो हुलरावे माता'' गाया। उच्छलित प्रेमावस्थामें रागका क्रम नहीं रह सकता, लीलाका क्रम रहता है। इसलिए जैसी लीलाका स्फुरण उनके हृदयमें हुआ वैसे पद वे गाते रहे। लीलारसमें निमग्न ऐसी अलौकिक दशामें उन्हें देखकर श्री गुसांईजी ने कहा कि जैसे कुंभनदासका निरोध किशोरलीलामें हुआ वैसे ही परमानंददासजीका बाललीलामें निरोध हुआ है।

नंदोत्सवके रसमें मग्न परमानंददासजी श्री गोवर्धननाथजीकी ध्वजाको दंडवत् करके सुरभिकुंड पर अपनी कुटीरमें आकर मौन होकर लेट गये। श्रीनाथजीकी राजभोग आरती के पश्चात अनौसर (अनवसर) करके श्री गुसांईजी वैष्णवको साथ लेकर सुरभिकुंड पधारे और परमानंददासजी के माथे पर अपना श्रीहस्त धरा। तब दंडवत् करके उन्होंने राग सारंगमें ''प्रीत तो कमल नयनसों कीजे'' प्रार्थना रूप पद गाया। एक वैष्णवने प्रभु कृपाप्राप्तिका साधन बताने के लिए परमानंददासजीसे बिनती की तब उन्होंने राग भैरवमें ''प्रात समय उठ करिये श्री लछमनसुत गान'' यह पद गाया, जिससे श्री गुसांईजी और सभी वैष्णव बहुत प्रसन्न हुए। अंतमें जब श्री गुसांईजीने उन्हें पूछा कि इस समय आपका मन

कहां है? उत्तरमें अपना अंतिम पद इस प्रकार गाया ''राधे बैठी तिलक सँवारति..'' इस प्रकार, युगल-स्वरूपकी लीलामें मन लगाकर परमानंददासजीने अपना नश्वर देह त्याग कर प्रभुकी लीलामें प्रवेश किया। यह समय सं. १६४१ के करीब माना जाता है।

ऐसे परमानंददासजी, श्री ठाकुरजीकी लीलामें 'तोष' सखा और निकुंजलीलामें 'चंद्रभागा' सखी हैं, और सुरभिकुंड पर श्री गिरिराजजीके द्वारके मुखिया हैं। आजन्म वे अविवाहित रहे। श्री महाप्रभुजी द्वारा उनका ब्रह्मसंबध दीक्षा समय सं १५७७ है। परमानंदसागर नामक ग्रंथमें उनके करीब २०० पद प्राप्त हैं। उनकी कवित्व शक्ति, विद्वत्ता और संगीतके ज्ञानकी प्रतीति उनके दानलीला, उद्धवलीला, ध्रुवचरित्र, संस्कृत रागमाला, दधिलीला जैसे अनेक पदोंमें होती है।

इस प्रकार अष्टछापके द्वितीय सागर और प्रभु श्यामसुंदरकी बाललीलाके अद्‌भुत गायक, श्री परमानंददासजीका जीवन चरित्र अष्टछाप कवियोंमें अपना एक निराला महत्त्व रखता है।

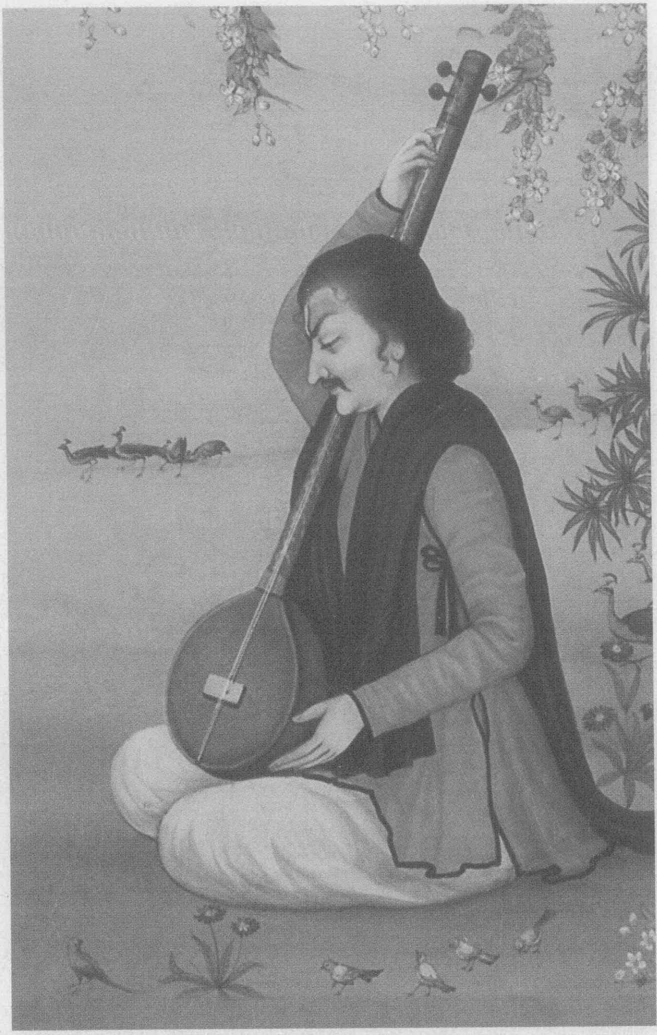

श्री परमानंददासजी

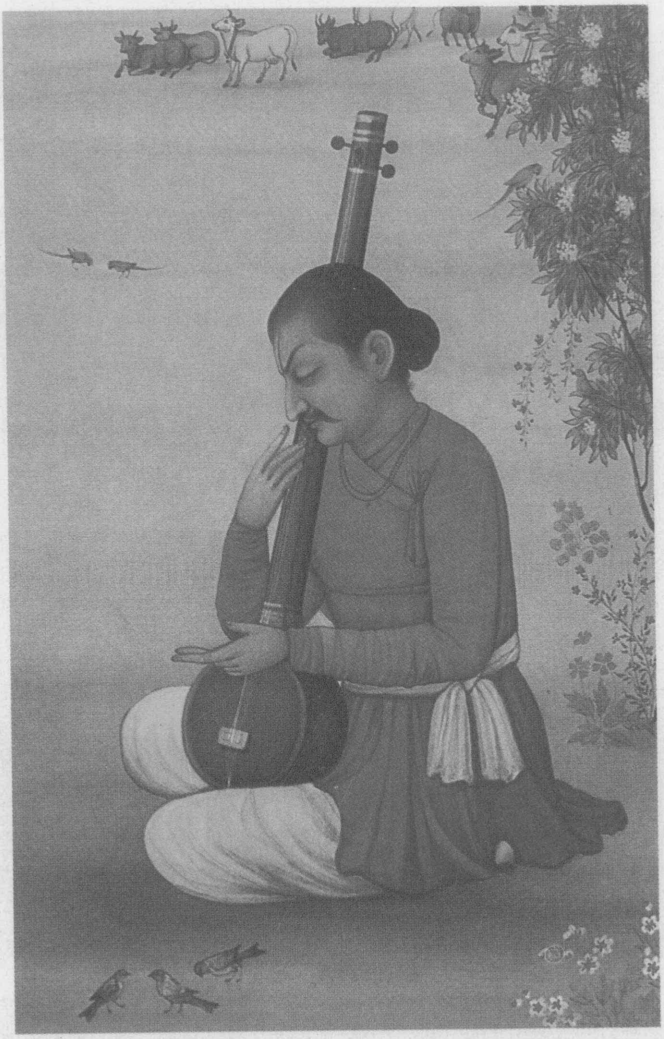

श्री नंददासजी

भक्त कवि नंददासजी

गोकुलकी पनिहारी पनिया भरन चली
बडे बडे नयना तामे खुभ रह्यो कजरा।
पहरे कसुंभी सारी अंग अंग छबी भारी
गोरी गोरी बहियनमें मोतिनके गजरा ।
सखी संगलिये जात हँस हँसबूझत बात
तनहूँकी सुधि भूली सीसधरें गगरा ॥१॥
नंददास बलिहारी बीच मिले गिरधारी
नयनकी सेनमें भूल गई डगरा॥

ऐसे भावपूर्ण, रसप्रचुर मधुर कीर्तनोंकी रचना करनेवाले भक्त कवि नंददासजी "अष्टछाप" में क्रमकी दृष्टिसे अंतीम (आठवे) कवि थे। वे अत्यन्त प्रतिभा संपन्न, सहृदय, सौंदर्यप्रेमी कवि थे।

नंददासजीका जन्म वि. सं. १५९० (इ.स. १५३४) में उत्तरप्रदेशके मथुरा जिलेमें 'सोंरों' के निकट रामपुर गाँवमें हुआ था। वे सनाढय ब्राह्मण थे। उनके पिता जीवाराम और सोरों निवासी रामभक्त तुलसीदास के पिता आत्माराम दोनों सगे भाई थे। तुलसीदासजी और नंददासजी दोनोंके मातापिता बाल्यावस्थामें हि गत हो जानेसे सोंरोमें अपने दादीमाँके पास रहते थे। दोनोंने रामानंदी पंडीत नरहरि से विद्याभ्यास कर संस्कृतका उत्तम ज्ञान प्राप्त किया। दोनोंकी बचपनसे ही काव्य रचना और संगीतकलाकी ओर रूचि होने से काव्य, छंद शास्त्र, अलंकार शास्त्र, रामायण, महाभारत आदिका गहन अभ्यास किया था। विद्याभ्यासके बाद दोनोंने काशीमें निवास किया और वहाँ कथा कीर्तन करके अपना गुजारा करने लगे।

किसी एक दिन नंददासको ज्ञात हुआ कि द्वारका यात्राके लिए एक संघ जा रहा है। वे भी यात्राके संघके साथ होगये। मार्गमें मथुरामें संघ कुछ दिनके लिए रूक गया। तब रणछोडजीके दर्शनके लिये नंददासजी संघसे अलग होकर द्वारकाकी और अकेले चल दिये। जहाँ मार्ग भूलकर 'सिंहनद' गाम जा पहुँचे। वहाँ श्रीगुसांईजीके क्षत्रिय सेवककी रूपवती पत्नी को देखकर ऐसे मोहित होगये कि उस रूपललना के दर्शन हेतु घंटों तक उसके घरके सामने बैठे रहते, और बिना मुंह देखे जलपानभी नहीं करते थे। इस कृत्यसे बदनामीसे बचनेके लिए वह पूरा परिवार

घर व्यापार सब छोडकर गोकुल श्रीगुसांईजीके शरणमें जानेके लिये निकले। उनका पीछा करते करते नंददासभी उनके साथ यमुनाजीके तट पहुंचे। क्षत्री परिवारने नाववालेको कुछ द्रव्यादि देकर नंददासको नावसे उतार दिया। यहाँ श्रीयमुनाजीकी परम कृपा हुई। नंददासजीने आपके स्वरूपको समझा और रामकली रागमें तीन पदसे श्रीयमुनाजीका स्तुतिगान किया। “नेह कारन श्रीयमुने प्रथम आई..”, “भक्त पर करि कृपा श्री यमुनेजू ऐसी..”, “ श्रीयमुने यमुने जु गावे..”। यहाँ गोकुलमें अन्तर्यामी परम कृपालु श्रीगुसांईजीने अपने दैवीजीव नंददासजीको उस पारसे बुलानेके लिये एक व्रजवासीको नाव लेकर भेजा। गोकुल आकर श्रीगुसांईजीके दर्शन करते ही नंददासजीकी बुद्धि निर्मल हुई। आपकी कृपासे मोह दूर होगया। उन्हें नामनिवेदन कराकर शरणमें लिया। आपका इस तरह सं. १६०६में शरणमें आनेके बाद नंददासजी ने अपने हृदयका संपूर्ण प्रेम भगवान श्रीकृष्णके चरणोंमें समर्पित कर दिया। अब जीवनका राह ही बदल चुका था। सर्व प्रथम श्रीनवनितप्रियाजी के दर्शन करके प्रसन्न होकर पदगाया “गोपाल ललनकों मोद भरि जसुमति हुलरावति”। श्री गुसांईजीके साथ गोवर्धन आये। श्रीनाथजीके दर्शन करते भाव विभोर होकर नटरागमें पदगाया “सोहत सुरंग दुरंग पाग कुरंग ललना कैसे लोयन लोने”।

उनका मन श्रीजीके कीर्तनगानमें लग गया, श्रीगुसांईजीने उन्हें सं. १६०७में “अष्टछाप”में विष्णुदास छीपाके स्थान पर संम्मिलित किया।

संप्रदायके ज्ञानार्थ सत्संग हेतु श्री विठ्ठलेश्वरने नंददासजीको सूरदासजीके पास परासोली रहनेकी आज्ञा की।

श्रीसूरने उनका रहासहा विद्यामद निवृत्त किया और दीनता एवं वैराग्य स्थापित किया। ये सब करनेके लिये श्रीसूरने अनेक दृष्टकूट पदोंकी रचना की। ये पदोंका संग्रह ‘साहित्य लहरी’ के नामसे प्रसिध्ध है। सूरके सत्संगसे नंददासजीका हृदय पूर्णतया कृष्णासक्त बन गया। उनमें सम्प्रदायका रहस्य एवं काव्य-संगीतकी प्रतिभा निखर आई। फलतः साहित्य क्षेत्रमें शृंगार रस एवं अलंकारोसे परिपूर्ण अनेक सुंदर रचनाएं नंददासजीने की। सूरदासजी के परामर्शसे एवं श्रीगुसांईजीकी आज्ञासे नंददासने गृहास्थाश्रम का स्वीकार किया। उन्हें एक पुत्र रत्नभी हुआ। बादमें नंददास श्रीगुसांईजीके पास गोकुल आ गये। आते ही दंडवत् कर आप के यशोगानका पद गाया - “ जयति रूक्मनिनाथ पद्मावती प्रानपति विप्रकुल छत्र

आनंद कारि''। इस बीच तुलसीदासजी ने अपने भाईको जगह जगह ढूंढने पर पता चला कि नंददास कृष्ण भक्तिमें लीन हो गये हैं। पत्र द्वारा उन्हें समझानेका प्रयत्न करने पर जवाब दिया गया कि उनका मन कृष्णमें हि आसक्त हैं। साथमें पद द्वारा अपने मनका भाव जताया ''कृष्ण नाम जबतें श्रवण सुन्योरी आलि। भूलीरी भवन होंतो बावरी भईरी।''

काफी अरसेके बाद तुलसीदासजी व्रजमें आये। दोनों भाईयोंका मिलन हुआ। तुलसीदासजीके समझानेकी कोशिश करने परभी वे असफल रहे , तब तुलसीदासजी नंददासजीके साथ श्रीजीके दर्शन करने आये तब नंददासजीकी

''कहा कहों छबि आजकी भले बने होनाथ।
तुलसी मस्तक तब नमै, धनुष बाण लो हाथ॥''

यह प्रार्थनासे श्रीगोवर्धनधरणने 'धनुर्धारी' बन कर श्रीरामके स्वरूपमें तुलसीदासजीको दर्शन दिये। इसी तरह गोकुलमें श्रीगुसांईजीने नंददासकी प्रार्थनासे पंचम पुत्र रघुनाथजी एवं उनके नवविवाहित जानकी बहूजीके साथ श्रीराम एवं सीताके स्वरूपमें दर्शन कराये। तुलसीदासजीने साष्टांग दंडवत् किये और भावविभोर होकर पद गाया-

''बरनों अवध श्रीगोकुल गाम
उत विराजत जानकीवर इतहि स्यामास्याम॥''

श्रीगुसांईजी अतिव प्रसन्न हुए। उन्हे दृढ भक्तिका वर दिया और तुलसीदासजी वापिस लौट गये।

जैसे तुलसीदासजीने लोकभाषामें रामायण किया था उसी तरह नंददासजीने व्रजभाषामें श्रीमद्भागवत दशमस्कंधका अनुवाद किया। लेकिन ब्रह्मक्लेशके कारन श्रीगुसांईजीकी आज्ञासे 'रासपंचाध्यायी' और 'भ्रमरगीत' के सिवा अन्य तमाम रचना श्रीयमुनाजीमें पधरा दी। गुरूभक्तिकी ऐसी मिसाल कहाँ मिलेगी?

गृहस्थाश्रमके बाद वापिस व्रजमें आनेके बाद नंददासजी श्रीगिरीराजजीकी तरेटीमें गोवर्धन गाँवके पास मानसीगंगाके किनारे पर्णकुटी बनाकर रहने लगे और श्रीजीकी कीर्तन सेवा करने लगे। वहाँ उन्हे भगवद् लीलाके दर्शन होते और उसी लीलाके अनुसंधानमें पदरचना बनाकर वे गाते।

परमभक्तकवि नंददासजीका ग्वालियर राजाकी बेटी रूपमंजरीसे अलौकिक स्नेह था। यह स्नेह दो अलौकिक गोपीभाव भावित सखियोंका स्नेह था। श्रीगुसांईजीकी सेविका रूपमंजरी अकबर बादशाह के जनानेमें रहती थी। नंददासके सत्संग से उसका मन संपूर्ण श्रीजीकी भक्तिमें रंगा था। श्रीनाथजीकी असीम कृपापात्र थी और श्रीजीका नित्य अनुभव था। एकबार अकबर बादशाहका डेरा मानसीगंगा पर पडा। रूपमंजरी भी साथमें आई थी। उसने बिलछुकूंड पर वृक्षके नीचे रसोई करके श्रीजीके लिए भोग सजाये। और उसकी विनंति स्वीकार कर साक्षात् श्रीगोवर्धनधरण वहाँ पधारे, भोग आरोगने लगे। रूपमंजरीको मिलने जब नंददास वहाँ पहूँचे, कुछ दूरीसे ही श्रीजीके दर्शन करते वृक्षकी ओट में खडे रहे। रूपमंजरीको अपने हाथसे आरोगाते हुए और श्रीजीके साथ हास्य विनोद करते हुए अद्भुत लीलाके दर्शन कर, हृदय अलौकिक आनंद रससे भाव विभोर हो गया और गोपीभाव भावित रूपमंजरीके भाग्यकी प्रशस्ति करते हुए यह पद गाया

"चित्र सराहत चितवत मुरमुर, गोपी बहुत सयानी ॥
टक झकमें झूकि वदन निहारत, अलक संवारत पलक न मारत जान गई नंदरानी॥"

यह पद सुन रूपमंजरीको नंददासके आगमन का पता चला। भोग सराकर अनोसर कराकर उसने नंददासको श्रीनाथजीके महाप्रसादका आग्रह किया। नंददासने जाति-पांति भूल, प्रेमसे महाप्रसाद लिया। एक तो श्रीजीका साक्षात अधरामृत रूप महाप्रसाद, देनेवाली रूपमंजरी श्रीजीकी अतिव कृपा पात्र भगवदीया और दोनोंका नित्य लीलाका सखि स्नेहभाव का भगवदीय संबंध, नंददास कहाँ मना कर सकते थे। कैसा दिव्य अलौकिक स्नेह । जहाँ लौकिक गंधमात्रा भी नहीं है।

ऐसे भगवद् कृपापात्र नंददासजीका एक रासका पद महान गायक तानसेनने अकबर बादशाहके सामने गाया -

"देखोरी देखोरी नागर नट गोपीनके मध्य राजे मुकुटकी लटक।
(अन्तिमतुक) रासमें श्रीराधे राधे मुरलीमें यही रट नंददास गावे तहाँ निपट निकट।"

अकबर 'नन्ददास गावे तहाँ निपट निकट' में अटक गये। बादशाहका इस समय मानसी गंगामें ही डेरा था। राजाने यह मर्म जाननेके लिये नंददासको मिलनेकी इच्छा प्रगटकी नंददास श्रीजीकी शयन आर्तिके बाद श्रीगुसांईजीको दंडवत् करके

मानसी गंगा आये। बादशाहने उनके पदके 'निपट निकट' का मर्म बतानेका आग्रह किया। नंददासने रूपमंजरीसे पूछने को कहा। बादशाहके पूछने पर रूपमंजरी पछाड खाय गिरी और प्राण छूट गये। लीलामें पहूँच गई। बादशाह बाहर नंददासके पास दौडकर आये। यहाँ नंददास भी इस पार्थिव देह और इस लोकको छोडकर साक्षात् श्रीगोवर्धनधरणकी लीलामें प्रवेश कर गये। प्राण त्याग दिये लेकिन अपना धर्म प्रगट नहीं किया। अपना धर्म गोप्य रखा।इस तरह वि.स. १६४०में मानसी गंगा पर पिपरके वृक्ष नीचे पुष्टिमार्गके अष्टछाप के अन्तिम कविने भौतिक रूपसे विदाय ले ली, लेकिन मीठे अंगुरके गुच्छ जैसे पद एवं कवनके रूपमें आज भी हमारे पास हैं। ऐसे महान भक्तकवि नंददासजीका जीवन और कवन दोनों हि महान और दिव्य है। पुष्टिमार्ग साहित्यमें हि नहीं, हिन्दी साहित्यमें भी अन्य अष्टछाप भक्तकवियोंकी तरह नंददासकी भी बहुत बडी देन है। सुन्दरसे सुन्दर ४०० से ज्यादा पदोंकी रचना उन्होंने की है। भाव और भाषाकी दृष्टिसे रासपंचाध्यायी, भ्रमरगीत, जैसी उत्तमोत्तम रचनाएं हमें दी है।

उन्होनें राग-तालबद्ध द्रुपद धमार शैलीके प्रबंधोंके अलावा रोला, चोपाई, दोहा एवं छोटे छंदो में बहुतसे ग्रन्थोकी रचना की है। जैसे अनेकार्थ मंजरी, मानमंजरी, रसमंजरी, रूपमंजरी, विरहमंजरी, सिध्दान्त पंचाध्यायी, श्यामसगाई, प्रेम बारखडी, गोवर्धन लीला इत्यादि अनेक सुन्दर काव्यकृतियोंकी रचना की। नंददास काव्यकलामें भाषाकी मधुरता एवं शब्दोंके कलात्मक संयोजनमें सिद्धहस्त थे। उनका शब्दभंडार विपुल था। शब्दमें कोमलता है। पंक्तियोमें न तो संयुक्ताक्षर है। नतो लंबे चौडे समास हि। माधुर्यसे भरी उनकी पद रचना हमें मीठे रसकी मधुरताका अनुभव कराती है। उन्होने रची हुई राग-मालाओंकी रचना उस समयकी भारतीय संगीत कलाका विशिष्ट आविष्करण है। नंददासजी कृत तीन राग-मालाएं प्राप्त है। नंददासजीके बारेमें सच हि कहा गया है- ''और सब गढ़िया नंददास जडिया''।

नंददासजीका लीलात्मक स्वरूप 'भोज' सखा एवं 'चन्द्ररेखा' सखी है।
शृंगारमें 'फेंटा' में विशेष आसक्ति,
कीर्तनका समय - श्रृंगार
स्थायीनिवास - गोवर्धन, मानसीगंगा
लीलासक्ति - किशोर लीला

॥ श्री हरिः ॥

सुज्ञ वैष्णव,

प्रभुकी लीलाओंके कीर्तन-गुणगान द्वारा अपना चित्त शीध्रतासे प्रभुमें निरूद्ध हो जाता है और अपनी लीलाका गान सुन कर प्रभु शीध्र प्रसन्न होते हैं । इसीलिये "कीर्तनसेवा"को अष्टयाम सेवामें विशिष्ट स्थान प्राप्त हुआ है । स्वसेव्य प्रभुको रीझाने के लिए प्रत्येक वैष्णव अपने स्वगृहमें भी पारंपारिक एवं शास्त्रीय पद्धतिसे कीर्तनगान कर सके ऐसे उच्च हेतुसे और प्रभुकृपासे पुष्टिभक्तिसंगीतका पंचवर्षिय अभ्यासक्रम तैयार किया है; जिसमें मंगला से शयन पर्यंतके प्रणालीके अनुसार गाये जानेवाले सभी रागोंका समावेश है । "कीर्तन प्रवेशिका" से प्रारंभ कर "कीर्तन विशारद" पर्यंत यह अभ्यासक्रम है; जिस अन्तर्गत यह चतुर्थ पुस्तिका एवं इसकी पूरक ऑडियो केसेट उपलब्ध है । केसेटमें पुस्तिकामें दिये गये रागोंका कीर्तन स्वरलीपिके साथ गायन करके सिखाये है और संगीत विषयक प्रारंभिक जानकारी, ताल, झांझ इत्यादि बजा कर सिखाया जाता है ।इस वर्ष हमने ताल प्रशिक्षण के लिये एक विशेष कैसेट बनाई है जिसका लाभ पखावज या झांझ के विद्यार्थी भी ले सकते हैं। आशा है कि आपको यह अभ्यासक्रम पसंद आयेगा । प्रत्येक वर्ष विभिन्न केन्द्रोंसे ये परीक्षाऐं ली जाती है और उत्तीर्ण विद्यार्थीओंको प्रमाणपत्र दिया जाता है । यदि आप परीक्षा देकर सहभागी बनना चाहते हो तो विशेष जानकारी के लिए कृपया निम्नलिखित कूपन पर अपना नाम व पत्ता लिख कर हमें भेजें ।

नाम :

पत्ता :

दूरभाष नं. :

हमारा पत्ता :

आंतरराष्ट्रीय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
जी/२, सीताराम बिल्डींग, पल्टन रोड, मुंबई - ४०० ००१.
☎ : ३६२०९५४ (७.००थी ९.००) * ३६१३५९८ (१०.०० थी ३.००) * २०९१८२६
श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
श्री जीतुभाई शाह , श्री यमुना मार्केटींग, गोपाल निवास,
१७६, लोहार चाल, मुंबई - ४०० ००२.

॥ श्री वल्लभ ॥

कीर्तनकार
श्री जमनाप्रसादजी शर्मा

परम प्रिय प्रभु कीर्तन अनुरागी वैष्णववृंद !

आपने कीर्तन प्रवेशिका, प्रबोध और सुबोध के कीर्तन पाठ्यक्रम का अध्ययन एवं मनन किया परीक्षाऐं दी एवं प्रमाणपत्र प्राप्त किये । इसी क्रम में अब हम "कीर्तन प्रवीण" का पाठ्यक्रम प्रस्तुत कर रहे हैं जो आपको कीर्तन के साथ साथ अन्य जानकारीयां भी देगा। हमने जो नोटेशन पुस्तकों में दिये हैं वे केवल मार्गदर्शन के लिये हैं जिनका आधार लेकर आप ताल एवं सुरमय कीर्तन गान कर सकें। इसे बंधन मानकर इसका ही अनुसरण करें यह आवश्यक नहीं है क्योंकि अपने सम्प्रदाय में सातघर हैं और सातों घरों में कीर्तनगान और प्रणालिका में थोडा बहुत अन्तर है । इसीलिये हमने जो पद्धति ली है वह नवनीत प्रियाजी के घर की है और वह सभी घरों से अधिकांशतः मिलती जुलती है। इस पाठ्यक्रम द्वारा हमने प्रयत्न किया है कि कीर्तन गान ताल एवं स्वर युक्त तो हो ही, एवम् भावमय भी हो और इसी भावमय कीर्तन गान से आप अपने प्रभु को रिझा सकें यही हमारा मूल उद्देश्य है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा ईश्वर के सांनिध्य का अनुभव किया जा सकता है। किसी भी संस्कृति में चाहे वह प्राचीन हो, चाहे वह आधुनिक हो संगीत का विशेष महत्व है। यदि प्रभु की लीलाओं का वर्णन संगीतबद्ध हो तो वह आपको निश्चित रूप से प्रभु की उपस्थिती का अनुभव करायेगा। इस अवस्था तक यदि आप नहीं भी पहुंच पाये तो भी कीर्तन गान आत्मिक शान्ती तो अवश्य प्रदान करेगा। यदि आप अपने सेव्यश्री को रिझा कर निरोध तक पहुंचना चाहते हो तो भावयुक्त, संगीत द्वारा - अष्टछाप भक्तकवियों द्वारा अवगाहन की गई लीलाओंको पुनः पुनः समयानुसार श्रीकी सेवामें विनियोग कराएँ।

मेरा आपसे विशेष अनुरोध है कि इस अभ्यासक्रममें आगे बढ़नेके लिए गत तीन वर्षोंके अभ्यासक्रममें सिखाये रागों और तालोंका भी विशेष रूपसे पुनरावर्तन करके नये राग सिखनेके लिए आगे बढें।

इस वर्ष हमने ताल प्रशिक्षण के लिये एक विशेष कैसेट बनाई है जिसका लाभ पखावज या झांझ के विद्यार्थी भी ले सकते हैं।

जमुना प्रसाद शर्मा का
भगवद्स्मरण

॥ श्री हरिः ॥

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका प्रथम मोती

"श्यामघटा घिर आई"

वर्षाकालीन २२ कीर्तनोंका संपुट; दो केसेटोंका सेट

*

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका द्वितीय मोती

"शीतकाल सुहावनो"

शीतकालीन ५० पदोंका संग्रह;
मंगला से सेन पर्यंतका ४ केसेटोंके सेटमें पुस्तिका सह उपलब्ध है।

*

षड्ऋतुओंके कीर्तनकी केसेट मालाका तृतीय मोती

"ग्रीष्म युगल सुखदायी"

ग्रीष्म ऋतु के २८ पदोंका संग्रह;
मंगला से शयन पर्यंतका दो केसेटों का सेट पुस्तिका सह उपलब्ध है।

*

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद एवं श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
द्वारा प्रकाशित

"कीर्तन प्रवेशिका"

पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. १

"कीर्तन प्रबोध"

पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. २

"कीर्तन सुबोध"

पुष्टिभक्ति संगीत पाठ्यक्रम नं. ३

"ताल प्रशिक्षण"

कीर्तनोपयोगी ताल; झांझ और पखावजके साथ

कीर्तनकार : **श्री जमनाप्रसादजी शर्मा** ÷ *भावोद्बोधन :* **श्रीमती कल्पनाबेन शाह**

संकलन : **कु. ख्याति द्वारकादास**

प्राप्तिस्थान :

आंतरराष्ट्रिय पुष्टिमार्गीय वैष्णव परिषद
जी/२, सीताराम बिल्डींग,
पल्टन रोड, मुंबई - ४०० ००१.

परिषदकी सभी शाखाओंमें उपलब्ध है ।

श्री गुसांईजी चेरीटेबल ट्रस्ट
श्री जीतुभाई शाह,
श्री यमुना मार्केटींग,
गोपाल निवास, १७६, लोहार चाल,
मुंबई - ४०० ००२.